॥ श्रीः ॥

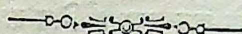
अथ ताजिकभूषणविषयानुक्रमणिका ।

॥ श्रीः ॥

अथ

ताजिकभूषणम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।



मू०-भक्तिर्भक्तजनस्ययस्यभवतिप्रीतिप्रतीतिप्रदा
स्नेहोवंशपरम्परापरिगतस्सर्वाभिलाषप्रदः ॥
सोयंसर्वसुरासुरेन्द्रनिकराराध्योस्तुलम्बोदरो
धीरोद्गर्जनविघ्नतर्जनपटुः श्रेयस्करोनस्सदा ॥ १ ॥

श्रीरामचरणौनत्वा सीतारामस्तदात्मजः ॥
करोतिभाषयाटीकां श्रीमत्ताजिकभूषणे ॥ १ ॥

टी०-"वह गणेशजी मेरे कल्याणको करैं" जिनकी भक्ति भक्तजनोंके हृदयमें प्रीतिप्रतीति दिलानेवाली होती है जिनका वंशपरम्परानुगत स्नेह सम्पूर्ण अभिलाषोंको देनेवाला होता है जिनकी सब सुरासुर आराधना करते हैं और जो अपने धीर गर्जनसे विघ्नोंके नाश करनेमें तत्पर रहते हैं ॥ १ ॥

मू०-तूर्णयत्करुणाकटाक्षकणिकासम्पूर्णसिद्ध्यैभवेत्तां वाणीं प्रणिपत्यसत्यनिरतं श्रीढुण्ढिराजंगुरुम् ॥ सारन्ताजिकवारिधेर्निरवधेःप्रोद्धृत्यपीयूषवत्कुर्वेताजिकभूषणं गणपतेर्भक्तोगणेशस्सुधीः ॥ २ ॥

टी०-जिसके कृपालेशसेभी सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होते हैं उस देवी सरस्वतीको और सत्यरत श्रीगुरु ढुण्ढिराजको प्रणाम करके और अपार ताजिकरूप और बाइसे[illegible] सारको निकालकर मैं गणेशनामक विद्वान् इस ताजिक-मुन्था हुआ अब वर्षलग्नसे[illegible] ॥ २ ॥

मू०-गर्गाद्यैर्यवनैश्वरोमकमुखैस्सत्यादिभिःकीर्त्तितं शास्त्रं ताजिकसंज्ञकंनिरवधिंतद्वारिधिंदुस्तरम् ॥ एतत्ताजिकभूषणंनवतरातर्तुंसमर्थातरिर्व्यक्तार्थविमलोक्तिवाक्यविलसत्कर्णानुकाणाभृशम् ॥ ३ ॥

टी०-गर्गादिमुनि और रोमकप्रभृति यवनों तथा सत्याचार्य आदिकोंने जो अनन्त और दुस्तर ताजिक संज्ञक शास्त्ररूप समुद्र निर्माण किये हैं उनको तरनेके निमित्त निर्मल उक्तिवाले वाक्यरूप शोभित कर्ण (दण्ड) हैं जिसमें और प्रकट है अर्थ जिसका ऐसी 'ताजिकभूषण' रूप अत्यन्त नवीन नौका मैं बनाता हूँ ॥ ३ ॥

मू०-ब्रह्मद्वेषितुरुष्कसम्भवमिदंतार्तीयकंविद्यते शास्त्रंयद्यपिसद्विजैरपितथाऽध्यध्येतुमर्हंभवेत् ॥ यस्माद्यत्सदसत्फलंनिगदितंसत्यंहिकिंपङ्कजे शंकापङ्कभवाथवा फणिफणोत्पन्नेमणौदूषणम् ॥ ४ ॥

टी०-यद्यपि यह शास्त्र ब्रह्मद्वेषी यवनोंसे उत्पन्न भया है तथापि इसमें जिसलिये सदसत्फलनिरूपण किया गया है, इस कारण द्विजोंकोभी पढना चाहिये क्यों कि, कमलमें पङ्कोद्भव होनेकी शंका और सर्पमणिमें सहवासका दोष कहीं देखागया है ? ॥ ४ ॥

मू०-धात्राशास्त्रमकारियत्कृतयुगेतत्सर्वथानान्यथा त्रेतायामपिबादरायणकृतंतच्चानृतंनाभवत् ॥ यद्गर्गेणविनिर्मितंकृतचमत्काराय तद्वापरे कालेपिप्रबलेकलेरविकलंतार्त्तीयकोक्तंफलम् ॥ ५ ॥

टी०-सत्ययुगमें ब्रह्मकृत शास्त्र का प्रमाण, त्रेतामें बादरायणका शास्त्र, द्वापरमें गर्गका शास्त्र और कलियुगमें यह जो तार्तीयक यवननिर्मि[illegible] उसका प्रमाण जानना ॥ ५ ॥

मू०-शाकेजन्मशकोनितेभवतियच्छेषङ्गताब्दव्रजोऽधोध-
स्संगुणितश्शरैश्वयुगलेनांगैर्युगैर्भाजितः॥ लब्धंतज्जन-
नोत्थवारघटिकाद्येनान्वितंसप्तभिः पूर्वांके विहतेत्र-
शेषकमितौवर्षप्रवेशो ध्रुवम् ॥ ६ ॥ वर्षप्रवेशोत्थघटी-
पलाढ्येकालेकिलस्पष्टतरस्सनूनम् ॥ भानुर्जनुर्भानु-
समानएव सिद्धान्तरीत्यापरिसाधनीयः ॥ ७ ॥

टी०--जिस इष्टपर वर्षप्रवेश होवे उसी इष्टके अनुकूल जन्मइष्टके तुल्य सूर्य्य-सिद्धान्तरीतिसे स्पष्ट करना चाहिये ॥ ६ ॥ ७ ॥

मू०-जन्मकालनलिनीविलासिनानैवयातितुलनां कला-
सुचेत् ॥ वर्षकालनलिनीपतिस्तयोरन्तरङ्गविहतंयु-
तोनितम् ॥ ८ ॥ कार्य्यंवर्षध्रुवेतस्मादसौस्पष्टःप्रजा-
यते ॥ तत्कालसम्भवैःखेटैर्भाविश्वफलनिर्णयः ॥ ९ ॥

टी०-यदि वर्षकालके सूर्य्य और जन्मकालके सूर्य्यमें कुछ परस्पर कला-ओंमें भेद हो तो जिसमें बाकी निकलसके निकालना फिर उनके अन्तरको सूर्य्यकी गतिसे हतकरो फिर यदि सूर्य्य न्यून हो तो जोडो और यदि अधिक हो तो बाकी निकालो ऐसा करनेसे जन्मतुल्य यह स्पष्ट होजायगा क्योंकि तात्कालिक ग्रहोंसे फलनिर्णय होताहै । ध्यान रहै कि सूर्य्यमें केवल कलावोंमें भेद रहैगा न कि अंशोंमें ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०-सम्प्राप्तवर्षप्रमितिंपतङ्गैर्भजेच्चसूर्य्याकसमानभावे ॥
सम्भूतिलग्नान्मुथहास्थितिःस्यात्तद्राशिगाऽब्देजननो-
दयांशैः ॥ १० ॥

टी०-प्राप्त वर्ष समूहको जन्मलग्नमें जोडकर १२ से भक्त करै जो शेष रहै जन्मलग्नसे उसी भावमें वर्षमें मुंथा होगी यथा वर्तमान वर्ष २२ जन्मलग्न मीन और बाइसमें बारहका भाग लेनेसे बाकी १० बचे मीनसे गिना तो धनका मुन्था हुआ अब वर्षलग्नसे ग्रह जिस भावमें परै उसका फल कहना ॥ १० ॥

मू०-वर्षेणभुंक्तेमुथहैकराशिंमासेनभागद्वितयंकलाढ्यम् ॥
कलाश्चपंचैवदिनेननूनंतद्राशिनाथोमुथहाधिपःस्यात् ११

टी०-एक वर्षमें मुन्था एक राशि भोगताहै एक मासमें ढाई २।३० अंश और १ दिनमें ५ कला मुंथाका भोग होताहै जिस राशिमें मुन्था होवे उसी राशिका स्वामी मुंथेश होताहै ॥ ११ ॥

मू०-तिग्मांशुशुक्रशनिशुक्रसुरेज्यचन्द्रशाशांकिभौमश-
निभौमसुरेज्यचन्द्राः॥ देवेज्यशीतकिरणेन्दुजभूमिपुत्र-
सूर्य्योशनश्शनिसितार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ १२ ॥
वर्षस्वामिविचारार्थमेषात्त्रैराशिकेश्वराः । दिवारात्रौ
क्रमेणैतेकल्पनीयाःप्रयत्नतः ॥ १३ ॥

टी०--सूर्य्य, शुक्र, शनि, शुक्र गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, शनि, भौम, गुरु, चन्द्र यह १२ क्रमशः मेषादिलग्नोंसे दिवावर्ष प्रवेशमें त्रैराशिकेश्वर हैं और गुरु, चन्द्र, बुध, भौम, रवि, शुक्र, शनि, शुक्र, शनि, भौम, गुरु, चन्द्र, यह १२ रात्रि,वर्षप्रवेशमें मेषादिक्रमसे त्रैराशिकेश्वर हैं ॥ इनका प्रयोजन वर्षस्वामीके निर्णयमें पडताहै.॥ १२ ॥ १३ ॥

त्रैराशिकेश्वरचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मीन	लग्न.
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	भौ.	शनि	भौ.	गुरु	चन्द्र	दिवा
गु.	चं.	बु.	भौ.	रवि.	शु.	श.	शु.	शनि	भौ.	गुरु	चन्द्र	रात्रौ

मू०-लाभंतृतीयंचरणेनपश्येद्ग्रहश्चतुर्थन्दशमन्दलेन ॥ तथा
त्रितुल्यैश्चरणैस्त्रिकोणंसम्पूर्णदृष्ट्यानिजसप्तमेच ॥ १४ ॥

टी०-प्रत्येक ग्रह लाभ ११ और तृतीय ३ स्थानको एक चरण दृष्टिसे अवलोकन करता है, चतुर्थ ४ दशमको अर्द्ध दृष्टिसे,त्रिकोण ९ । ५ को त्रिचरण दृष्टिसे और निज १ सप्तम ७ को पूर्ण दृष्टिसे अवलोकन करता है ॥१४॥

मू०-यापाददृष्टिस्सुखलाभदात्रीस्नेहप्रदाबुद्धिविवृद्धिकर्त्री ॥
नन्वर्द्धदृष्टिस्स्वजनैर्विरोधंगुप्तारिभेदङ्कुरुतेविवादम् ॥ १५॥

टी०-जो पाददृष्टिहै वह सुख और लाभ देनेवाली है,स्नेह देनेवाली है और बुद्धि वर्धक है, अर्द्धदृष्टि इष्ट मित्रोंसे विरोध उत्पन्न कराती है और गुप्त रूपसे शत्रुओंका भेद तथा विवाद करती है ॥ १५ ॥

मू०-त्रिकोणदृष्टिर्धनलाभसौख्यम्मित्रोन्नतिश्चापिकरोति-नित्यम् ॥ सम्पूर्णदृष्टिस्सुतरामरिष्टंयुद्धंविवादश्चरिपू-द्गमश्च ॥ १६ ॥

टी०-त्रिकोण ९ । ५ दृष्टि धनलाभ सौख्य मित्रवृद्धि करती है और सम्पूर्ण दृष्टि युद्ध विवाद और शत्रुवृद्धि करती है ॥ १६ ॥

मू०-खलग्रहाश्चेत्खलदृष्टिसंस्थाश्शुभाश्चखेटाश्शुभदृष्टिसं-स्थाः ॥ फलंयथोक्तं ददतेतदानींविलोमसंस्थाश्चतद-र्द्धमेव ॥ १७ ॥

टी०--यदि खल ग्रह खलोंकी दृष्टिमें हों और शुभ ग्रह शुभोंकी दृष्टिमें हों तो यथोक्त फल होताहै अन्यथा उसका आधा ॥ १७ ॥

मू०-द्रष्टाहीनतनुःखगो यदिभवेद्योमाधिको द्विर्हतः षष्टि-भ्यः परिशोधितःखचरदृग्रूपाधिकः कूनितः ॥ तद्भागा-दलिताश्चवेदरहितो वेदाधिकोद्भान्वितो हीनम्पञ्चयु-गाच्छरर्क्षरहितं पञ्चाधिकोद्विर्हतः ॥ १८ ॥ षड्भोनो रसभाधिकः करहतः षष्टिच्युतश्चाऽधिकस्सतोनस्स्व-बलान्वितो गजगुरुर्व्यष्टोर्द्धितश्चोनितः ॥ बाणाब्धेर्भ-वतोधिकोभवति युग्द्विघ्नः कलाद्याद्दृशः स्पष्टास्स्युःखलु वर्षवेशसमये विद्याद्दृगुत्थम्फलम् ॥ १९ ॥

अथ हद्देशाः ।

मू०-वर्षाधीशाद्देशपूर्व्वं सगर्भं सर्व्वत्रकुत्रोविनावीर्य्यम-त्र ॥ शक्यन्तस्मात्पुष्करागारसारंज्ञातुम्मार्गम्पञ्च-वर्ग्याः प्रवच्मि ॥ २० ॥

टी०-वर्षमें वर्षाधीशका निर्णय और ग्रहोंके यथोचित बल विना फल-नहीं कहे जासक्ते इससे बलज्ञानार्थ अब पञ्चवर्गीवल कहता हूं ॥ १९-२० ॥

मू०-पञ्चाधिकारास्सदनोच्चहद्दास्त्रैराशिकश्चापिमुशल्लहश्च ॥
गताधिकारस्सतुहीनसारःप्राप्ताधिकारःखचरस्ससारः २१

टी०-आत्मस्थान, उच्च, हद्दा, त्रैराशिक और मुशल्लह (नवांश) ये पांच अधिकारी हैं जो अपने अधिकारमें ग्रह होता है वह बली कहाता है नहीं तो निर्बल ॥ २१ ॥

मू०-सिंहः कर्क्कोलिमेषौचयुग्मकन्येधनुस्तिमी ॥
तुलावृषौनक्रघटावागाराणिदिवाकरात् ॥ २२ ॥

टी०-सिंह, कर्क, वृश्चिक मेष, कन्या मिथुन, धन मीन, तुला वृष, मकर कुम्भ सूर्य्यसे शनिपर्य्यन्त क्रमशः इन राशियोंके स्वामी हैं ॥ २२ ॥

राशिचक्रम् ।

सूर्य्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
सिंह	कर्क	मेष	कन्या	मीन	वृष	मकर
०	०	वृश्चिक	मिथुन	धन	तुला	कुम्भ

मू०-मेषोवृषोमृगःकन्याकर्कोमीनतुलेक्रमात ॥ ज्ञेयान्यु-
च्चानितिग्मांशोस्ततोनीचन्तुसप्तमम् ॥ २३ ॥

टी०-सूर्य्यसे लेकर क्रमसे मेष, वृष, मकर, कन्या, कर्क, मीन और तुला ये उच्चस्थान हैं इनसे सप्तम स्थान नीच जानना ॥ २३ ॥

उच्चनीचचक्रम्।

सूर्य्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृ०	शुक्र	शनि	ग्रह
मेष	वृष	म०	कन्या	कर्क	मीन	तुला	उच्च
तुला	वृश्चि०	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	नीच
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंश

मू०-मेषेरसाङ्गाष्टशरेन्द्रियांशास्सुरेज्यशुक्रज्ञकुजार्कजानाम् ॥ वृषेऽष्टतर्काष्टशरात्रिसङ्ख्याश्शुक्रज्ञजीवार्कजभूमिजानाम् ॥ २४ ॥ युग्मेरसाङ्गेन्द्रियसप्ततर्काज्ञशुक्रजीवावनिजार्कजानाम् ॥ कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाःकुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥२५॥ सिंहेङ्गबाणाद्रिरसाङ्गभागाजीवासुरेज्यार्कजवित्कुजानाम् ॥ स्त्रियान्नगाङ्गाब्धिनगारिसंख्याज्ञकाव्यजीवावनिभूशनीनाम् ॥२६॥ घटेषडष्टाद्रिमुनिद्विसंख्याश्शनिज्ञवागीशासितासृजाश्च ॥ अलौनगाब्धिद्विरदेषुतर्काभौमास्फुजिज्ज्ञेज्यपतङ्गजानाम्॥ २७॥ चापेऽर्कबाणाब्धिशराब्धितुल्याजीवास्फुजिज्ज्ञावनिजार्कजानाम् ॥ नक्रेऽद्रिसप्ताष्टयुगाब्धयःस्युर्बुधेज्यशुक्रार्कजमंगलानाम् ॥ २८ ॥ कुम्भेऽद्रितर्काद्रिशरेन्द्रियांशाज्ञशुक्रदेवेज्यकुजार्कजानाम् ॥ मीनेर्कवेदाग्निनवाद्रिसंख्याश्शुक्रेज्यसौम्यारखरांशुजानाम् ॥ २९ ॥

टी०-इन श्लोकोंका अर्थ चक्रसे अत्यन्त स्पष्ट है इसलिये टीका न लिखकर उसके स्थानमें चक्रही दिया जाताहै ॥ २९ ॥

हद्दाचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि.	कर्क.	सिंह	क.	तुला	वृ.	धन.	म.	कुं.	मी.
वृ.६	शु.८	बु.६	मं.७	वृ.६	बु.७	श.६	मं.७	वृ१२	बु.७	बु. ७	शु.१२
शु.६	बु.६	शु.८	शु.६	शु.५	शु.६	बु.८	शु.४	शु.५	वृ.७	शु. ६	वृ. ४
बु.८	वृ.८	वृ.५	बु.६	श.७	वृ.४	वृ.७	बु.८	बु.४	शु.८	वृ.७	बु.३
भौ.५	श.५	भौ.७	वृ.७	बु.६	मं.७	शु.७	वृ.७	भौ.५	श.४	भौ.५	भौ.६
श.५	मं३	श.६	श.४	मं.६	श.६	भौ.२	श.६	श.४	म.४	श. ५	श. २

मू०–मेषतोमीनपर्य्यन्तन्द्रेष्काणानामधीश्वराः ॥ भौमतो रवितश्शुक्राद्गणनीयायथाक्रमम् ॥ ३० ॥

टी०–मेषसे मीन पर्य्यन्त द्रेष्काणस्वामी क्रमशः मंगल रवि और शुक्रसे गिननेपर होते हैं अर्थात् मेषसे मीनतक प्रथम द्रेष्काणके स्वामी मंगलसे ग्रहोंके वारम्बार गिनताजावे, द्वितीयके चन्द्रसे और तृतीयके शुक्रसे, राशिका दशमांशं द्रेष्काण होताहै जैसा चक्रमें स्पष्ट होगा ॥ ३० ॥

द्रेष्काणचक्रम् ।

अं.	मेष	वृ.	मि.	क.	सिंह	कं.	तु.	वृं.	धं.	मं.	कुं.	मीन
१०	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
२०	रवि	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रवि	चं.	मं.	बु.	बृ
३०	शु.	श.	र.	सो.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	र.	सो.	मं.

मू०-रवीज्यमन्दाःसितचन्द्रभौमाः शनिज्ञजीवाः कविभौमचन्द्राः ॥ मुशल्लहेशा अजतोमृगेन्द्राद्धनुर्द्धरादह्निनिशिद्वयोर्वा ॥ ३१ ॥

टी०-सूर्य्य, गुरु, शनि, शुक्र, चन्द्र, मंगल, शनि, बुध, गुरु, और शुक्र, मंगल, चन्द्र, ये मेषसे कर्कपर्यन्त मुशल्लहेश (नवमांशस्वामी) हैं फिर सिंहसे वृश्चिकपर्य्यन्त और धनुषसे मीनपर्य्यन्त जानना ॥ ३१ ॥

मुशल्लहचक्रमिदम् ।

.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
.	शु.	श.	शु.	र.	शु.	श.	शु.	र.	शु.	श.	शु.
.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	मं.
श.	मं.	बृ.	चं.	श.	मं.	बृ.	चं.	श.	मं.	बृ.	चं.

मू०-गृहोच्चहद्दात्रिलवास्स्वकीयामुशल्लहश्चापिभवेत्स्वकीयः ॥ त्रिंशच्चविंशत्तिथयोदिशश्चपञ्चक्रमाद्वीर्यमिदंग्रहाणाम् ॥ ३२ ॥

टी०-आत्मगृह उच्च आत्महद्दा द्रेष्काण और नवमांशमें ग्रहोंका बल क्रमसे ३०, २०, १९, १०, और ९ अंशोंसे होता है ॥ ३२ ॥

मू०-तदर्द्धकम्पञ्चकमत्रमैत्रश्चेच्छात्रवश्चास्यदलम्बलंस्यात् ॥ औदासिकं शत्रुसुहृद्बलैक्येदलम्बलम्मौलमतानुसारम् ३३

टी०-जिस स्थानमें जिस ग्रहका जितना बल होता है उसका अर्द्ध और पञ्चमांश मित्र और उसका अर्द्ध शत्रु और शत्रु मित्रके योगका अर्द्ध मौलमतके अनुसारसे सम बल कहाता है ॥ ३३ ॥

आत्मगृह	हद्दा	द्रेष्काण	मुशल्लह	०
३०	१५	१०	५	स्व.
२२।३०	११।१५	७।३०	३।४५	मित्राणि
१५	७।३०	५	२।३०	समाः
७।३०	३।४५	२।३०	१।१५	शत्रवः

मू०-जन्मोदयाब्दोदयमुन्थहेशावर्षप्रवेशोदिवसेर्कभेशाः ॥ निशीन्दुभेशास्त्रिगृहेशएते वर्षाधिपत्येह्यधिकारिणःस्युः ३४॥

टी०--जन्मलग्नपति वर्षलग्नपति मुंथेश दिवावर्षप्रवेशमें सूर्य लग्नपति और रात्रिमें चंद्रलग्नपति और त्रिराशिपति ये वर्षमें पञ्चाधिकारी कहलाते हैं ॥ ३४ ॥

मू०-प्राप्ताधिकारग्रहपञ्चकेयोविलोकयेल्लग्नमनल्पदृष्टया ॥ बलोपपन्नःखचरस्सएव वर्षाधिनाथः परिकल्पनीयः ॥३५॥

टी०-वर्षलग्नके समय इन उक्त पञ्चाधिकारियोंमेंसे जो ग्रह पूर्णबलोपेत होवे और लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता हो तो वही वर्षपति होता है ॥ ३५ ॥

मू०-समानदृक्कैस्समुदारसारो दृष्ट्याधिको वीर्य्यसमानतायाम्॥ वर्षाधिपःस्यादधिकाधिकारो दृग्वीर्य्यसाम्ये-मुथहाधिनाथः ॥ ३६ ॥

टी०-यदि सबकी दृष्टि लग्नपर सम हो तो अधिक बली और यदि सम-बल हो तो अधिकदृष्टिवाला इन दोनोंकी साम्यमें अधिकाधिकारवाला और सबकी समतामें मुंथेश वर्षपति होता है ॥ ३६ ॥

मू०-पश्येन्नकश्चिद्यदिवर्षलग्नन्तल्लग्नराशिर्जननेपियेन ॥ दृष्टोधिपस्स्यान्नचतत्रदृष्टस्तदेन्थिहेशोपिविचिन्तनीयः३७

टी०-यदि किसीभी ग्रहकी दृष्टि न हो तो वह राशि जन्म लग्नमें यदि किसी एक पञ्चाधिकारीकी दृष्टिमें हो तो वह वर्षपति होगा नहीं तो फिरभी मुन्थेशही वर्षपति जानना ॥ ३७ ॥

इति श्रीमत्ताजिकभूषणेवर्षेशानयनाऽध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

मू०-आयुष्येवास्वेद्विषिद्वादशेस्याद्वर्षावेशेमुंथहेशोनशस्तः ॥ रंध्रस्थानस्वामिनायुक्तदृष्टः पापिष्ठैश्चाप्यस्तगोऽयस्तगो-वा॥ १ ॥

टी०-यदि वर्षप्रवेशकालमें मुंथेश अष्टम द्वितीय षष्ठ और द्वादश स्थानोंमेंसे किसी एकमें स्थित हो तो शुभ नहीं होता और चाहे किसी स्थ

न होकर यदि सप्तम स्थानके स्वामीके साथ हो अथवा सप्तमेशकी दृष्टिमें हो अथवा पाप ग्रह युक्त हो या उनकी दृष्टिमें हो अथवा अपनी राशिसे अस्त ७ स्थानमें हो अथवा वक्री हो तोभी शुभ नहीं ॥ १ ॥

मू०-भाग्येचलाभेसहजेचकेन्द्रेचेद्वर्षकालेमुथहाधिनाथः ॥
करोतिपुंसांविपुलंप्रतापं मैत्रन्नृपैःसम्मतिवर्द्धनंच ॥ २ ॥

टी०-यदि वर्षप्रवेशकालमें मुंथेश भाग्य ९ लाभ ११ सहज ३ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० । स्थानोंमें कहीं हो तो पुरुषके प्रतापको बढावे उत्तम बुद्धि दे और राजसंगम हो ॥ २ ॥

मू०-स्वस्वामिनातत्सुहृदाशुभेनबलोपपन्नेनयुतेक्षितावा ॥
स्यान्मुंथहासर्वमनोरथाप्त्यै नराधिपालादपिगौरवार्थम् ३

टी०-यदि मुंथेश अथवा उसका मित्र शुभ ग्रह और बली होकर मुंथाके साथ हो अथवा मुंथाको देखता हो तो वह मुंथा सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करनेवाली होतीहै और राजासेभी नाम प्राप्त करातीहै ॥ ३ ॥

मू०-सिंहीसूनोराननंभोग्यभागाःप्रोक्तम्पुच्छंकेतुभुक्तांशकास्ते ॥ वक्त्रेश्रेष्ठासम्प्रदिष्टेंथिहाब्देलांगूलेसामानसासौख्यकर्त्री ॥ ४ ॥

टी०-जिसनक्षत्रपर राहु हो उससे वक्रगत्या जो भोग्य नक्षत्र उनकी राहुमुख संज्ञा है और भुक्त नक्षत्रोंकी पुच्छ संज्ञा है यदि वर्ष कालमें मुंथा राहुमुखमें पडै तो मान और सौभाग्य होवे, यदि पुच्छमें हो तो दुःख देतीहै ॥ ४ ॥

अथ ग्रहयुक्तमुन्थाफलम् ।

मू०-नृविभुतोविभुतोत्थसुखान्वितः सुकृतमाकृतमानसमुन्नतिः॥नियमनायमनामुथहायदा रवियुतावियुतारिगणोनरः ॥ ५ ॥

टी०-यदि वर्षकालमें मुंथा सूर्ययुक्त हो तो मनुष्यको राजद्वारा ऐश्वर्य और प्राप्ति हो लक्ष्मी और मानकी वृद्धि हो शत्रुका नाश हो ॥ ५ ॥

मू०-अविकृतोविकृतोज्झितसंगती रुचिरधीश्चिरधीरत-यान्वितः ॥ विभवतोभवतोषयितेंथिहा भविभुनाविभुनाकृतगौरवः ॥ ६ ॥

टी०-यदि मुन्था चन्द्रयुक्त हो तो शरीरसुख स्वजनसमागम सुबुद्धि ऐश्वर्य संतोष राजासे सन्मान यह सब पदार्थ प्राप्त होवे ॥ ६ ॥

मू०-कुमतिनामतिनाशमसृक्छुजं विनतयानमसापचय-न्दिशेत् ॥ सदनतोदनतोसुखमिन्थिहा कुसुनयुक्स्व-जनास्वजनारुचिः ॥ ७ ॥

टी०-यदि मुंथा मंगलयुक्त हो तो सुमतिनाश और कुमतिकी वृद्धि हो रक्तके विकारसे शरीरमें रोग हो द्रव्यनाश हो गृह और भोजनविषयक कष्ट हो अरने वन्धुजनमें अरुचि हो ॥ ७ ॥

मू०-सुजनतोजनतोवदसत्कथारसमुदारमुदारमतिर्नरः ॥ स्वसहितस्सहितश्चयदींथिहा ज्ञमिलितामिलितात्म-जनोभवेत् ॥ ८ ॥

टी०-यदि मुंथा बुधयुक्त हो तो सुजनलाभ कथाश्रवण चित्तमें उत्साह वन्धुवर्गमें प्रेम और द्रव्यप्राप्तिभी सन्मार्गसे हो ॥ ८ ॥

मू०-सुरमणीरमणीयविलासभाक्तनयवान्नयमानसुखै-र्युतः ॥ सुकृतिभिःकृतिभिर्युथहायदा सधिषणाधिष-णाभ्युदयान्वितः ॥ ९ ॥

टी०-यदि मुंथा बृहस्पतियुक्त हो तो स्त्रीविलाससुख पुत्रसुख सद्बुद्धिकी वृद्धि-मान सुख ९ स्वजनसमागम और सब प्रकारसे ऐश्वर्यवृद्धि हो ॥ ९ ॥ और यहां शुक्रकाभी फल है ॥

मू०-स्वकलितः कलितप्रभवोभवेदविभवोविभवोद्धतप्र-पात् ॥ स्वसनतस्तानतश्च यदेन्थिहा शनियुतानि-तार्थदराशयः ॥ १० ॥

मू०-वरसभारसभागवनीपते रतिकलातिकलायसमन्वितः ॥ सुजनताजनतापहरोनरस्तनुगतानुगतायदिमुन्थहा ॥ ११ ॥

टी०-यदि मुन्था वर्षलग्नमें हो तो उत्तम सभाविलास राजाके सकाशसे अर्थलाभ कला चातुरी मनुष्य समूहमें प्रतिष्ठा इत्यादि पदार्थ सब प्राप्त होवें और बन्धुवर्गमें सन्ताप शान्त करनेवाली हो ॥ ११ ॥

मू०-मदबलादबलादिसुखोनरः सुकृतगः कृतगर्हितवारणः ॥ अधिकताधिकतापकरोद्विषां सुसधनस्सधनास्थितयातया १२

टी०-यदि मुन्था धनभावमें हो तो मनुष्यको स्त्रीसुख यश अनिष्टका नाश प्राप्त होवे शत्रुओंको अधिक ताप हो और धनसंचय हो ॥ १२ ॥

मू०-निजयशोजयशोभितनुर्नरः सुकृतकृत्कृतकृत्यतयोन्नतः ॥ नययुतोऽप्ययुतो मुथहा यदानुजगताजगताकृतवर्णनः ॥ १३ ॥

टी०-यदि मुन्था अनुज ३ भावमें हो तो यशकी वृद्धि हो मनोरथ पूर्ण हों हृदयमें नीतिका आवेश हो और मनुष्यसमाजमें प्रतिष्ठा प्राप्त होवे ॥ १३ ॥

मू०-स्वधनसाधनसाहसदुःखितो भयमितोयमितोऽपगतारितः ॥ नृपनयापनयादपिनोकथा रससुखस्सुखसंस्थितमुन्थहे ॥ १४ ॥

टी०-यदि सुख ४ स्थानमें मुन्था हो तो धन कमानेके साहससे दुःख पावे कुटुंबमें अप्रीति हो राजासे भय हो नीतिहानि हो और प्रतिष्ठा हानि हो ॥ १४ ॥

मू०-सुजनपूजनपूततनुर्निराकरणधीरणधीरतयाद्विषाम् ॥ अधिनिराधिनिरामुथहा यदा तनयगानयगामितयान्वितः ॥ १५ ॥

टी०-यदि मुन्था तनय ५ भावमें हो तो सत्कर्म और शरीरकी पवित्रताको शत्रुगणका अनादर हो चित्तकी व्यथा दूर हो और राजसमूहमें मनुष्य पावे ॥ १५ ॥

मू०-स्वसहितस्सहितास्थितवैरतोनुगतरोगतरोरिभयान्वितः ॥ निजपतेर्ज्जपतेपि महद्भयं परिगतारिगतामुथहायदाः ॥ १६ ॥

टी०-यदि मथुहा शत्रु ६ भावमें हो तो सम्पूर्ण बन्धुवर्गमें वैर उपजावे रोग उत्पन्न करै शत्रुका भय हो सेवाकरनेपरभी राजासे भयही प्राप्त होवे ॥ १६ ॥

मू०-निपुरुषः पुरुषश्चवियोगितां प्रमदयामदयातरिमुन्थहे ॥ धनयशोनयशोकरुजोलभेन्निजसमाजसमाक्रमनाशनम् ॥ १७ ॥

टी०-यदि मद ७ भवनमें मुन्था होवे तो पुरुष कुटुम्बसे अलग होकर स्त्रीसे भी वियोगको प्राप्त हो और धन, यश, नीतिका नाश और शोक रोगको भी प्राप्त होवे ॥ १७ ॥

मू०-व्यसनतस्सनतः कलहाकुलः स्वधनरोधनरोगयुतो नरः ॥ अहिततोहिततोषविवर्जितः त्वशुभगोशुभगायदिमुंथहा ॥ १८ ॥

टी०--यदि मुन्था अशुभ ८ स्थानमें पडे तो पुरुषको नाना प्रकारके व्यसन प्राप्त होवें युद्ध होवे धनका नाशहो रोगकी वृद्धि हो कभी चित्त स्थिर न रहे और वह वर्ष अत्यन्त अशुभ हो ॥ १८ ॥

मू०-नृपकृतोपकृतोत्सवगर्वितः प्रचलताचलतातियशोन्वितः ॥ स्वहितकृद्धितकृन्मनुजोभवेत्सुकृतस्सुकृतस्थितयातया ॥ १९ ॥

टी०--यदि मुन्था सुकृत ९ स्थानमें हो तो राजासे सन्मान मिले यशकी वृद्धि हो अपने बन्धुवर्ग हितकरैं और पुण्यकी वृद्धि हो ॥ १९ ॥

मू०-निजमनोजमनोरथगौरवन्ननुभवेनुभवेद्विभवैर्युतः । कमलयामलयापियदीथिहा दशमगासुभगाद्विभाक् ॥ २० ॥

टी०-यदि दशमस्थानमें मुंथा हो तो उस वर्षमें मनुष्यको अपने मनोरथकी पूर्तिका अनुभव हो ऐश्वर्य प्राप्त हो लक्ष्मीकी वृद्धि हो और बुद्धि शुभकर्मोंकी ओर लगे ॥ २० ॥

मू०-सुधिषणोधिषणोपमताम्व्रजेत्तनुजतोनुजतोपिसुखन्नरः ॥ नृपसुखोपसुखोमुथहायदाहरिमतारमतात्मजनव्रजः २१॥

टी०-यदि मुंथा एकादश भावमें पडे तो बृहस्पतिके तुल्य बुद्धिकी वृद्धिहो पुत्र और अपने कुटुम्बके लोग सब प्रेम करैं ॥ २१ ॥

मू०-धनविधानविधापरिवर्जितोहतनयस्तनयस्वजनासुखः । मनुजपेनुजपेविरातिर्भवेद्व्ययमितीयमितायदिमुन्थहा ॥ २२ ॥

टी०-यदि मुंथा द्वादशस्थानमें पडे तो धन प्राप्त होनेका द्वार नष्ट होवे चित्तमें दुर्बुद्धि उत्पन्न हो पुत्र और कुटुम्बसे कष्ट प्राप्त होवै देवपूजादिकसे चित्त हटजावे ॥ २२ ॥

मू०-चेद्वर्षलग्नाच्छुभगेथिहासाजनुस्तनोर्दुष्टफलप्रदात्री । मिश्रम्फलंकालविदोवदन्ति न्यूनाधिकत्वन्तुबलानुमानात् ॥ २३ ॥

टी०-यदि वर्ष लग्नसे मुंथा शुभस्थानमें हो और जन्मलग्नसे अशुभ स्थानमें हो तो ज्योतिर्विद शुभाशुभ मिलितफल कहतेहैं; परन्तु उसमें न्यूनाधिक्य मुंथाके बलसे कहना ॥ २३ ॥

मू०-यन्मुंथहायाःफलमुक्तमत्रशुभंविमिश्रन्त्वशुभंविशेषात् । तत्कल्पनीयम्मुथहेशपाकेबलानुमानान्ननुबुद्धिमाद्भिः॥२४॥

टी०-जो इस प्रकरणमें मुन्थाका फल शुभ, शुभाशुभ और अशुभ कहा गया उसकी न्यूनाधिक्य मुन्थेशके बलाबल विचारनेसे होती है, यथा-यदि मुंथा शुभस्थानमें है और उसका स्वामीभी बलीहै तो अत्यन्त शुभफल होगा ऐसेही न्यून बलमें न्यून और सम बलमें सम यही रीति अशुभ और मिश्रित फलकी भीहै २४॥

इति श्रीगणेशदैवज्ञराचिते ताजिकभूषणे मुंथाफलाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

मू०–वर्षाधीशविनिर्णयस्समुदितःपूर्वंहिसम्यङ्मयायद्यप्यत्रतथापिवर्षमखिलंकिंसाधुवासाधुवा ॥ इत्याख्यातुमशक्यमेवसुधियातस्मात्फलंयत्नतोवक्ष्येहंशुभमध्यमाधमतमैर्वेदैर्मुनीन्द्रोदितैः ॥ १ ॥

टी०--यद्यपि इस ग्रंथमें वर्षाधीशका निर्णय भली भांति कहागया है तोभी यह कहना पंडितको दुस्तर है कि वर्ष शुभ वा अशुभ है इस हेतु मैं यत्नपूर्वक प्राचीन मुनियोंके मतोंको विचारकर शुभ मध्यम और अशुभ फलोंका वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

मू०–वर्षलग्नेशवर्षेशमुंथमुंथेशवीर्यतः॥सकलं सफलं वर्षन्तत्फलन्तद्दशागमे ॥ २ ॥

टी०--वर्षलग्नस्वामी और वर्षपति मुंथा और मुंथेशके बलसे सम्पूर्ण वर्ष फलयुक्त होता है और वे अपना फल अपनी दशामें पृथक् २ करते हैं ॥ २ ॥

मू०–वर्षाधीशोनिधनसदनारातिरिष्फप्रयातश्चास्तंयातोनभवतिशुभःपापयुक्तेक्षितश्च ॥ चञ्चत्कान्तिस्सतुयदिपुनस्साधुबन्धुग्रहाणांवर्गेसंस्थोजनयतिमहत्सम्पदंस्वीयपाके ॥ ३ ॥

टी०–यदि वर्षाधीश निधन ८ स्थान अराति ६ स्थान अथवा रिष्फ १२ स्थानोंमेंसे किसी एकमें वर्त्तमान हो अथवा अस्तहो अर्थात् सूर्यके साथ हो पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो शुभ नहीं होता यदि पुनः वर्षाधीश बली हो शुभग्रह अथवा स्वकीय स्थानमें स्थित हो तो वह अपनी दशामें शुभ सम्पत्तिका देनेवाला होता है ॥ ३ ॥

मू०--प्राप्तिम्भूपादात्तवंशानुमानान्नानासौख्यं मुख्यताञ्चारुकीर्त्तिम्॥ अन्यस्थानात्प्राप्तिमेवारिनाशं कुर्य्यात्सूर्य्यस्सर्व्ववीर्य्योब्दपश्चेत् ॥ ४ ॥

टी०–यदि सूर्य्य पूर्ण बली होकर वर्षेश हो तो वंशानुमानसे अपने राजद्वारा प्राप्ति होवै अनेक प्रकारका शरीरको सुख हो और प्रकारसे भी धनप्राप्ति हो और शत्रुनाश हो ॥ ४ ॥

मू०-भूमीपालात्पुत्रतोमित्रतश्चस्वल्पंसौख्यंवाग्विवादंविरोधम् ॥ बाधाम्भीतिन्नीतितोवैपरीत्यं कुर्य्यात्सूर्य्यो मध्यवीर्य्योब्दपश्चेत् ॥ ५ ॥

टी०-यदि सूर्य्य मध्यवीर्य होकर वर्षाधिपतिहो तो राजासे, पुत्रसे और मित्रसे कुछ थोडा सुख मिलै, मौखिक युद्धहो, बाधा प्राप्तहो, भयहो और परस्पर विरोध विख्यात होवे ॥ ५ ॥

मू०-यानन्दूरेवैरिवर्गाभिवृद्धिं दुर्बुद्धित्वंसर्वदार्थव्ययश्च ॥ मन्दैर्वादश्चापवादङ्गदंवाकुर्य्यात्सूर्य्यो हीनवीर्य्योब्दपश्चेत् ॥ ६ ॥

टी०-यदि सूर्य्य हीनबल होकर वर्षस्वामी हो तो परदेशगमन हो, शत्रुगणकी वृद्धिहो बुद्धिनाशहो बारम्बार द्रव्यका नाशहो दुष्टलोगोंसे लडाईहो अपवाद मिलै और शरीरमें रोग उत्पन्नहो ॥ ६ ॥

मू०-पृथ्वीपालात्स्यादवाप्तिर्विशालानानासौख्यं स्त्रीषुलीलाविलासः ॥ मुक्तायुक्तश्वेतवस्तूपलब्धिर्वर्षाधीशेयामिनीशेधिसत्त्वे ॥ ७ ॥

टी०-यदि पूर्णबलोपयुक्त चन्द्रमा वर्षाधीश हो तो राजद्वारा उत्तम प्राप्तिहो और अनेक प्रकारका सुख मिलै स्त्रीविलासका सुखहो और मोतीयुक्त श्वेत पदार्थका लाभहो ॥ ७ ॥

मू०-कान्तासौख्यंस्वल्पमेवप्रकल्प्यंवैकल्यंस्यात्स्वीयवर्गेथदैन्यम् ॥ कार्श्यम्भूपस्यातिकोपान्निशेशेवर्षाधीशेमध्यसत्त्वोपपन्ने ॥ ८ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा मध्यबलहोकर वर्षाधीश होवे तो स्त्रीके तरफसे सुख कुछ कम हो शरीरमें विकलता हो बन्धुवर्गमें द्रव्यकी हानि हो और राजकोपकी चिंतासे शरीरमें दौर्बल्य हो ॥ ८ ॥

मू०-विकलतानिलतश्चकलिःकुलेप्रचलनंहिनिजस्थलतो भवेत् ॥ नरपतेःकफतोपिमहद्भयंशशिनि हायनपेल्पबलान्विते ॥ ९ ॥

और पे...
खेदसू...

टी०-यदि चन्द्रमा क्षीणवीर्य होकर वर्षपति हो तो शरीरमें वायुकृतपीडा होवे कुटुम्बमें कलह विदेशको यात्रा करना पडे राजाका भय हो और शरीरमें कफकी बाधा हो ॥ ९ ॥

मू०-रिपुगणाद्विजयोपिरणाङ्गणेभ्रमणतश्चमहद्द्रविणागमः । नरपतेरपिवापिचमूपतेःक्षितिसुतेऽब्दपतौबलवत्यलम् १०

टी०-यदि पूर्णबल मंगल वर्षाधिप हो तो शत्रुसे जय प्राप्त हो और भ्रमण करते हुये मनुष्यको राजद्वारा अथवा किसी सेनापतिके द्वारा उत्तम द्रव्य प्राप्ति होवै ॥ १० ॥

मू०-गदंविवादंविविधंविरोधंधनव्ययंचौरभयङ्करोति ॥ अरातिभीतिंक्षितिपादिभीतिं वर्षाधिपोमध्यबलोमहीजः ॥ ११ ॥

टी०-यदि मध्यमवीर्य मंगल वर्षाधिपति हो तो शरीरमें रोग परस्पर विवाद और वैर धननाश चोरभय शत्रुभय और राजादिसे भय प्राप्त होवै ॥ ११ ॥

मू०-दुष्टादभीष्टाच्चकरोतिकष्टंगदंचपादाननलोचनेषु॥ खलान्नृपालाज्ज्वलनादनर्थंवर्षाधिराजोवनिजोल्पसत्वः १२॥

टी०-यदि मङ्गल अल्पवीर्य होकर वर्षाधिपति होवे तो मित्रसे और शत्रु इन दोनोंसे कष्ट होवे, पैर मुख और नेत्रोंमें रोग होवे, दुष्ट मनुष्य, राजा और अग्निसे अनर्थ उत्पन्न होवै ॥ १२ ॥

मू०-वित्तलाभललनातिविलासैस्साहसैश्चनिखिलैः खलु युक्तः ॥ ज्योतिषोद्यमचिकित्सितवित्स्यादब्दपोत्यतिबलोहिबुधश्चेत् ॥ १३ ॥

टी०-यदि पूर्ण बलोपयुक्त बुध वर्षस्वामी हो तो वित्तलाभ, स्त्रीविलास और अनेक प्रकारके उद्यमोंसे युक्त हो और ज्योतिष विद्या तथा वैद्यकको जाननेवाला होय ॥ १३ ॥

मू०-स्ववाक्यदोषादशुभश्चयोषारोषाधिकत्वाद्द्विषतोविषादः ॥ कृपानृपालादधिकाकिलस्यादब्दाधिपोमध्यबलोबुधश्चेत् ॥ १४ ॥

टी०—यदि मध्यवीर्य बुध वर्षपति हो तो अपनेही वाक्यके दोषसे अशुभ होवे, स्त्रीपुरुषमें क्रोध बढै, शत्रुसे दुःख हो और राजा अधिक कृपा करै ॥ १४ ॥

मू०–अनृतसाक्षिकताक्षितिपाद्भयं क्षतिरतीवविपक्षकदस्युतः ॥ नयनहृद्गलरुक्प्रबलाभवेद्गतबलेऽब्दपतौशशिनस्सुते ॥ १५ ॥

टी०–यदि बुध क्षीणबल वर्षेश हो तो झूठी गवाही देना पडे, राजासे भय उत्पन्न हो, शत्रु और चोरसे धननाश हो तथा नेत्र हृदय और गलेमें रोग होवे ॥ १५ ॥

मू०–ज्ञानंकीर्तिर्न्निधिसहचराह्लादनन्देवतानामर्चाचर्चाविविधधनचयैर्लोकविश्वासितैव ॥ धर्म्मेंप्रीतिर्नृपतिकुलतोत्पन्नवित्तोन्नतिस्स्याच्चश्वत्कीर्तिश्शरदधिपतौवाक्पतौ सर्व्ववीर्य्ये ॥ १६ ॥

टी०--यदि पूर्णबलयुक्त बृहस्पति वर्षस्वामी हो तो ज्ञानवृद्धि हो, कीर्ति बढै, निधि प्राप्त होवे, बन्धुवर्गसे आदर प्राप्त हो, देवपूजनादिमें बुद्धि हो, धनका अच्छा सङ्ग्रह होनेसे संसारमें उसका विश्वास मानाजाय, धर्ममें प्रीति बढै, राजकुलसे धनकी वृद्धि हो और संसारमें यश हो ॥ १६ ॥

मू०–लोकैस्सार्द्धंवैमनस्यंविवादंमान्द्यंबुद्धेश्शत्रुसंवर्द्धनञ्च ॥ भूपाशङ्कातङ्कतःकार्श्यमङ्गेदेवाचार्येमध्यवीर्येऽद्पेस्यात् ॥ १७ ॥

टी०–यदि बृहस्पति मध्यबल वर्षेश हो तो लोकमें विरोध वाग्वाद बुद्धिकी मन्दता शत्रुओंकी वृद्धि राजाका भय और शरीरमें दुर्बलता हो ॥ १७ ॥

मू०–जघनलोचनगुल्फपदोदरेहरहराततिरांपरिपीडनम् ॥ विकलतानिलतः खलतोभयंसुरगुरौविकलेब्दपतौ भवेत् ॥ १८ ॥

टी०–यदि बृहस्पति बलरहित वर्षपति हो तो जंघा, नेत्र, गुल्फ, पाँव और पेटमें वायुसे पीडा उत्पन्न हो और खलोंसे भय हो, इस श्लोकमें हरहर खेदसूचक अव्यय है ॥ १८ ॥

मू०—दद्यादलं विलसितानि विलासिनीभिर्हास्योत्सवादि-
विविधाम्बरवस्त्रलाभम् ॥ आरोग्यभाग्यविजयस्वजना-
भिवृद्धिं यद्यब्दपोभृगुसुतस्समुदारसारः ॥ १९ ॥

टी०—यदि शुक्र बली होकर वर्षाधिपति हो तो स्त्रीविलास सुखको देवें, हास्यसुख, उत्सवसुख देवें और अनेक प्रकारके वस्त्रलाभ हो, शरीरमें आरोग्य हो भाग्यवृद्धि हो विजयवृद्धि हो और अपने बंधुवर्गकी वृद्धि हो ॥ १९ ॥

मू०—निजजनादरितोऽपिभयान्वितस्सुतसुतावनिताधन-
चिन्तया॥ कफचयात्कृशपीततनुर्नृपोभवतिमध्यबलेऽब्द-
पतौसिते ॥ २० ॥

टी०—यदि मध्यमबल शुक्र वर्षाधिपति हो तो अपने बन्धुवर्गसे भय, शत्रुसे भय, पुत्र कन्या स्त्री और धनकी चिन्तासे तथा कफकी वृद्धिसे शरीरमें दुर्वलता प्राप्त होवे और शरीर पीत होजावे ॥ २० ॥

मू०—खलजनेनकलिर्बहुलोभवेद्विकलतानृपकोपवशाद्भयम ॥
धनविहीनतयाभ्रमतामतेर्ननुविहीनबलेऽब्दपतौसिते २१॥

टी०—यदि अधम बल शुक्र वर्षपति हो तो दुष्ट लोगोंसे कलह बहुत हो राजाके कोपसे विकलता हो और भय उत्पन्न हो तथा धन नष्ट होनेसे बुद्धिभ्रम होवे ॥ २१ ॥

मू०—शैलकाननवणिक्कृषिक्रियाम्लेच्छतोहिनिजमानसे-
प्सितम् ॥ स्यान्मतिर्द्रुमलताभिरोपणेपूर्णसत्त्वसहितेऽब्द-
पेशनौ ॥ २२ ॥

टी०—यदि पूर्णबल शनैश्चर वर्षपति हो तो पहाड, जङ्गल, वैश्याक्रिया, खेती और म्लेच्छस्वामीद्वारा अपना मनोभीष्ट प्राप्त होवे और बाग फुलवारी लगानेमें चित्तकी अभिरुचि अधिक होवे ॥ २२ ॥

मू०—क्रोडपृष्ठगलकेक्षणपीडा जायतेहिनिबिडायवनार्त्तिः ॥
मूर्त्तिरप्यतिकृशाबहुशेषावर्षपेरविसुतेऽर्द्धबलाढये ॥ २३ ॥

टी०—यदि शनि मध्यबल वर्षपति हो तो छाती, पीठ, कण्ठ और नेत्रमें पीडा हो, म्लेच्छोंसे बडा भय हो और शरीरमें दुर्वलता हो ॥ २३ ॥

मू०-अनिलतोबलकान्तिविहीनता विफलतापिनिजेप्सि- तसाधने ॥ निजजनात्मजकष्टचयोभवेद्रविसुतेविबले- शरदीश्वरे ॥ २४ ॥

टी०-यदि शनि बलरहित वर्षस्वामी हो तो वायुके कोपसे शरीरमें बल और कान्तिका नाश हो अपना मनोरथ नष्ट हो और अपने बंधुवर्गको कष्टवृद्धि हो २४

इति श्रीताजिकभूषणे वर्षेशफलाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

॥ अथ चत्वारिहर्षस्थानानि निरूप्यन्ते ॥

मू०--पुण्यन्तृतीयंरिपुभञ्चलग्नंलाभालयम्पञ्चमकंव्ययाख्यम् । दिवामणेर्हर्षपदन्निरुक्तमेकान्द्वितीयंस्वगृहेसदैव ॥ १ ॥

टी०-पुण्य ९ तृतीय ३ रिपु ६ लग्न १ लाभ ११ पञ्च ५ और व्यय १२ ये स्थान सूर्यसे लेकर क्रमशः ग्रहोंके हर्षके स्थान हैं अर्थात् यदि लग्नसे नवम स्थानमें सूर्य्य हो तो अपने हर्ष स्थानमें जानना ऐसेही वर्षलग्नसे ३ चन्द्रमा और छठे मङ्गल इत्यादि क्रमसे जानना, यह पहिला हर्षस्थान है और स्वगृह अर्थात् अपनी राशि और उच्चभी हर्षस्थान है यह दूसरा हर्षस्थान है, यहाँ ध्यान देना चाहिये कि, जितना बल अपने स्थानमें होता है उतनाही उच्चमेंभी, द्विगुण नहीं ॥ १ ॥

मू०-तथातृतीयन्दिवसेनराणांयोषिद्ग्रहाणामुदितंरजन्याम् ॥ हर्षालयंलग्नगृहात्क्रमेणत्रिकंत्रिकंस्त्रीपुरुषग्रहाणाम् ॥ २ ॥

टी०-अब तृतीय हर्षस्थान कहते हैं-नरग्रह अर्थात् रवि, मंगल, बृहस्पतिका दिनमें हर्षस्थान होता है और स्त्रीग्रह अर्थात् चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ये रात्रिमें हृष्ट होते हैं ध्यानरहे कि ताजिकमें नपुंसकग्रह नहीं होते । अब चतुर्थ हर्ष-स्थान कहते हैं-कि, लग्नसे तीन ३ स्थान स्त्री और पुरुषग्रहोंके हर्षस्थान होते हैं अर्थात् यदि लग्नसे १--२ और ३ स्थानमें स्त्रीग्रह हों तो हर्ष स्थानमें जानना और वैसेही ४,५,६में पुरुष ग्रह, पुनः ७,८, ९ में स्त्री ग्रह और १०, ११,१२में पुरुष ग्रह हर्ष स्थानमें जानना ॥ २ ॥ इति चत्वारिहर्षस्थानानि ॥

अथ दीप्तिभागाः ।

मू०—दीप्तांशकाख्यैस्तिथिभिः पतङ्गैर्मतङ्गजैस्सप्तभिरङ्कसंख्यैः ॥ शैलैर्नभोमण्डलगैर्नभोगाविलोकयन्तिद्युमणेः क्रमेण ॥ ३ ॥

टी०—क्रमसे सूर्य्यसे लेकर ये ग्रहोंके दीप्तांश हैं अर्थात् सूर्य्यके तिथि १५ अंश दीप्तांश हैं ऐसे चन्द्रमाके १२ मंगलके ८ बुधके ७ बृहस्पतिके ९ शुक्रके ७ और शनिके ९ अंश दीप्तांश भाग हैं ॥ ३ ॥

अथ षोडशयोगाः ।

मू०—इक्कवालेन्दुवाराख्याविस्थशालस्ततःपरम् ॥ ईशराफश्चनक्तश्चयमयामणऊतथा ॥ ४ ॥ कम्बूलगैरिकम्बूलखल्लासरकरद्दके ॥ ततोदुष्फलिनीकुत्थोदुत्थकुत्थीरतम्बिरौ ॥ ५ ॥ कुत्थश्चदुरुफश्चैतेयोगाःषोडशकीर्तिताः॥ताजिकाचार्य्यवर्य्यैश्चफलविज्ञानहेतवे ॥ ६ ॥

टी०—ताजिकके आचार्य्यने १६ योग फल ज्ञानके निमित्त कहे हैं वे ये हैं इक्कवाल १, इन्दुवार २, इत्थशाल ३, ईशराफ ४, नक्त ५, यमया ६, मणऊ ७, कम्बूल ८, गैरिकम्बूल ९, खल्लासर १०, रद्दक ११, दुष्फालिनी कुत्थ १२, दुत्थकुत्थीर १३, तम्बीर १४, कुत्थ १५ और दुरुफ १६ये क्रमशः इनके नाम जानना ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

अथक्रमशो लक्षणानि । इक्कवालः—

मू०—पणफरयुतकेन्द्रेखेचराश्चेद्भवेयुर्भवतिखलुतदानीमिक्कवालाख्ययोगः॥ शुभखगजनितोयंसौख्यदातानितान्तं खलखचरकृतोस्मिन्कार्यसिद्धौविलम्बः ॥ ७ ॥

टी०—यदि सब ग्रह पणफर २, ५,८, ११ और केन्द्र १, ४, ७. १० में पड़ें तो इक्कवाल योग होताहै यह शुभ ग्रहोंसे शुभ और खलसे मध्यम होताहै ॥ ७ ॥ उदाहरणम् ।

इक्कवालयोगः ।

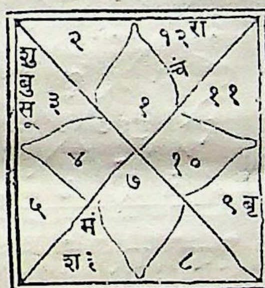


इंदुवारः ।

मू०-यद्यापोक्लिमगाः खेटाइन्दुवारस्समध्यमः ।
सापोक्लिमेपणफरेग्रहाश्चैवनाकिश्चन ॥ ८ ॥

टी०-यदि आपोक्लिम ३, ६, ९, १२, इन स्थानोंमें सब ग्रह हों तो इसको इन्दुवार योग कहते हैं और यह मध्यम होता है और यदि ग्रह आपोक्लिम और पणफर दोनों स्थानोंमें होयँ तो कोई योग नहीं होता है ॥ ८ ॥ इसका उदाहरण अधो लिखित है.

इन्दुवारयोगः ।



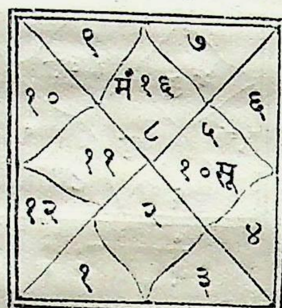
इत्थशालः ।

मू०-दृष्टौसत्यां प्रोक्तदीप्तांशभागैर्मन्दात्खेटाच्छीघ्रखेटोय-दाल्पः ॥ अंशैस्तुल्यः किञ्चिदूनस्तदेत्थशालोयोगो मुंथशीलस्सएव ॥ ९ ॥

टी०-कहेहुये अपने दीप्तांशभागसे परस्पर यदि ग्रहोंकी दृष्टि हो और

मंदगतिवाले ग्रहसे शीघ्र गतिवाला अंशोंमें कम हो अथवा तुल्य हो तो इत्थशाल योग होता है इसीको मुथशिल भी कहते हैं ॥ ९ ॥ उदाहरणम् ॥

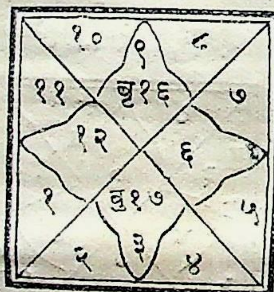
इत्थशालयोगः ।



मू०-शीघ्रग्रहोमन्दगतेर्ग्रहस्ययदैकभागंपुरतःप्रयाति ॥
सईशराफस्सतुमूसरीफः पुरातनैर्दुष्टफलःप्रदिष्टः ॥ १० ॥

टी०--यदि शीघ्रगति ग्रह मन्द ग्रहके १ भाग (१ अंश) आगे वढा हो तो ईशराफ योग जानना और उसीको मूसरीफ भी कहतेहैं यह अशुभहै ॥ १० ॥

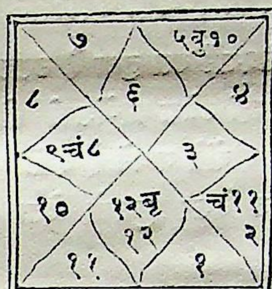
ईशराफयोगः ।



मू०-परस्परन्दृष्टिविहीनयोश्चशीघ्रोन्तरेतद्द्वयवीक्षितश्च ॥
प्रगृह्यतेजश्चरखेचरेन्द्राद्ददातिमन्दायसनक्तयोगः ॥ ११॥

टी०--यदि लग्नेश कार्य्येशकी परस्पर दृष्टि न हो और इन दोनोंके बीचमें कोई एक शीघ्रगामी ग्रह हो जिसपर लग्नेश कार्येशकी दृष्टि भी हो और वह अपने पृष्ठस्थित ग्रहके तेजको खींचकर अगले मन्द ग्रहको देता हो तो नक्त योग जानना ॥ ११ ॥

नक्तयोगः ।



स्त्रीलाभप्रश्नेउदाहरणम् ।

मू०-कान्ताहस्तगतेति पृच्छतितदाकन्याविलग्नाधिपस्सौम्यःसिंहगतःकलत्रभवनेमीनेगुरुः संस्थितः ॥ दृष्टिर्नैवतयोश्शशीचलगतिर्द्वाभ्यांचदृष्टो बुधादोजश्चार्पयदिन्द्रमंत्रिणिकलत्राप्तिःपरस्माद्भवेत् ॥ १२ ॥

टी०-स्त्री प्राप्ति होगी ? इस प्रश्न कालमें कन्या लग्न है और उसका स्वामी बुध सिंहमें है तथा कार्य्येश (स्त्रीलाभ प्रश्नमें स्त्रीस्थानगत मीन होनेसे उसका स्वामी) बृहस्पति है इन दोनोंको परस्पर दृष्टि नहीं है अब इन दोनोंके बीच शीघ्रगति ग्रह चन्द्रमाको दोनों देखते हैं (अतएव चन्द्रमा धन और वृष दोनों स्थानोंमें दिया गया है इसे पृथक् २ लिखनेमें दो उदाहरण भी बन सक्तेहैं) और अपने न्यूनांश बुधका तेज ग्रहण करके अपनेसे अधिकांश गुरुको देताहै इससे परहस्तसे स्त्रीलाभ होना चाहिये ॥

मू०-परस्परालोकनवर्जितंयत्खेटद्वयम्पश्यतिमन्दखेटः ॥ दीप्तांशकैर्धामचराद्गृहीत्वा स्थिरायदत्तेयमयाभिधानः १३

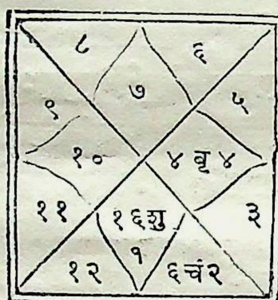
टी०-यदि दो ग्रहोंको लग्नेश कार्य्येशको जिनकी परस्पर दृष्टि न हो कोई एक मन्दग्रह अपने दीप्तांशमें लेकर देखता हो और किसी चर ग्रहसे तेज लेकर स्थिर ग्रहको देता हो तो यमया योग जानना ॥ १३ ॥

मू०-राज्यप्राप्तितुलाविलग्नपभृगुर्मेषे वृषेचन्द्रमा राज्येशस्त्वनयोर्नदृष्टिरमराचार्य्योन्तरस्थः स्थिरः ॥

पश्यन्दीप्तदृशाचरामृतकरास्तेजःप्रगृह्यार्पय-
च्छुक्रायोरुपदोपलब्धिरचिरात्सन्मन्त्रिणोङ्गीकृते ॥१४॥

टी०—यथा राज्यप्राप्तिप्रश्नमें लग्न तुला है उसका स्वामी शुक्र मेषमें और राज्येश चन्द्रमा वृषमें है यहां लग्नेश कार्य्येशकी द्विर्द्वादश होनेसे परस्पर दृष्टि नहीं है और मन्दग्रह गुरु दोनोंके मध्यमें है दीप्ति भागसे दोनोंको देखता है और चरग्रह चन्द्रमासे तेज लेकर शुक्रको देता है तो अवश्य राज्यलाभ जानना ॥ १४ ॥

यमयायोगः ।



मु०-शीघ्रादग्रेवनिजइनजःपृष्ठतोवैकराशौपश्यंस्तुर्यन्त-
नुदृशिगतश्चाधिकोनैर्निजांशैः ॥ तेजःपुञ्जंहरतिमणऊ-
योमएतन्निरुक्तोयत्कार्यार्थम्मुथाशिलमिहस्थो हरत्येव-
तेजः ॥ १५ ॥

टी०—यदि मङ्गल वा शनैश्चर शीघ्र ग्रहसे आगे, वा पीछे होकर चतुर्थ स्थानको सप्तमैकराशिसे देखते हों और अधिक अथवा न्यून अपने दीप्तांशसे शीघ्र ग्रहका तेज ग्रहण करैं और लग्नेश कार्य्येशका इत्थशाल हो तो "मणऊ" योग कहाताहै और यह कार्य्य नाशक होता है ॥ १५ ॥

तू०-जायाप्राप्तिप्रश्नकन्याविलग्नेदिग्भिर्भागैर्ज्ञः कलत्रे-
गुरुश्च॥तिथ्यंशैरप्यत्रभौमोस्तिरुद्रैर्हत्वातेजोज्ञस्यचन्द्रे-
णयुक्तः ॥ १६ ॥ जायाप्राप्तिर्नैवपृष्ठेपिचास्मिन्नेवंकल्प्य-

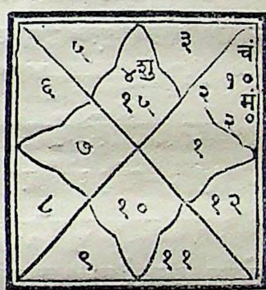
न्त्वेकगौमन्दभौमौ ॥ शीघ्राच्छीघ्रम्प्रोक्तभागादिकोणै-र्दृष्टिंहित्वाचाशुभार्थौभवेताम् ॥१७॥ इन्दुर्वृषेखेन्दुभि-रावनेयोविंशद्भिरंशैरथकर्कराशौ ॥ तिथ्यंशकैर्दैत्यगुरुः कुजेनदृष्टिर्हृतेन्दोरितिपूर्ववत्स्यात् ॥ १८ ॥

टी०–यथा स्त्री लाभ प्रश्नकी लग्न कन्या उसमें १० अंशसे बुध है और सप्तम स्थानमें १६ अंशसे बृहस्पति है और इनके अन्तरमें ११ अंशसे मंगल चन्द्रमाके साथ होकर बुधके तेजको नष्ट करता है इससे ऐसे योगमें जाया प्राप्ति नहीं होगी इति प्रथमः प्रकारः ॥ अथवा यथा मंगल पृष्ठस्थित है और शीघ्रसे आगे शीघ्र ग्रह हो तो भी यह योग कार्य्यनाशक जानना इति द्वितीयः ॥ अथवा चन्द्रमा वृषमें १० अंशसेहो और मङ्गल २० अंशसे हो और लग्नमें शुक्र १५ अंशसे हो और मंगल चन्द्रमाकी दृष्टि हरण करताहै, तोभी कार्य्यनाश हो इति तृतीयः ॥ ३ ॥

प्रथमः **द्वितीयः** **तृतीयः**







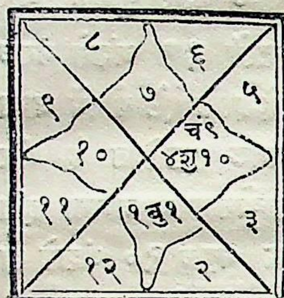
मू०–निशाकरः खेचरयुग्मकेनसाकंयदामूथशिलंकरोति ॥ कम्बूलयोगः कथितस्तदानीम्पूर्णोहिमध्याधमकस्त्रिधासौ ॥ १९ ॥

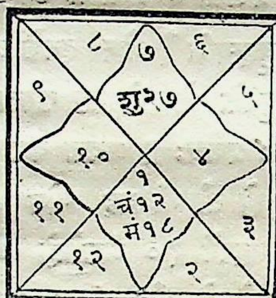
टी०–यदि चन्द्रमा दो ग्रहोंके साथ इत्थशाल करै तो कम्बूल योग कहना यह पूर्ण, मध्य और उत्तम इन भेदोंसे तीन प्रकारका है ॥ १९ ॥

[मू]०–निजोच्चगेहादिगतेननूनंस्वशत्रुगेहोपगतेनतद्वत् ॥ [नी]चास्तसंस्थेनखगद्वयेन योगःक्रमादुत्तममध्यहीनः ॥ २० ॥

टी०-यदि चन्द्र उच्च स्थानमें वर्त्तमान होकर दो ग्रहोंसे इत्थशाल करै तो उत्तम कम्बूल, यदि शत्रु ग्रहवालोंसे तो मध्यम और यदि नीच अथवा अस्तस्थानवालोंसे इत्थशाल करै तो अधम जानना इसके नवभेदतक होतेहैं चक्रों नीचे तीन भेदके उदाहरण देते हैं ॥ २० ॥

उत्तम मध्यम अधम







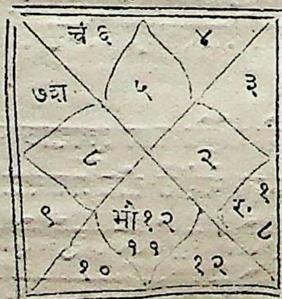
मू०-वर्षप्रवेशोद्भवलग्नकालेचेन्मुन्थशीलंशुभखेटयुक्तम् ॥ कान्तिश्चलीलाकलधौतचैलं कम्बूलयोगोविपुलत्वमेति२१

टी०-यदि वर्ष प्रवेश अथवा जन्म लग्नमें शुभ इत्थशाल हो तो शुभकांति लीला विलास इत्यादिक अनेक प्रकारके सुख प्राप्त होवें ॥ २१ ॥

मू०-चेच्छून्यमार्गेस्थितिमातनोति चन्द्रेणकेनापिचमूथशाली तत्खेटगेहोच्चगतःकबूलंकरोतितद्गैरकबूलमुक्तम् ॥ २२ ॥

टी०-यदि कोई ग्रह शून्यमार्गमें वर्त्तमान हो और चन्द्रमाके साथ अथवा और एक ग्रहके साथ इत्थशाल करै और उस स्थानका स्वामी उच्च स्थानमें होकर कबूलयोगको करता हो तो गैरकबूल योग जानना ॥ २२ ॥

गैरकम्बूलयोगः ।



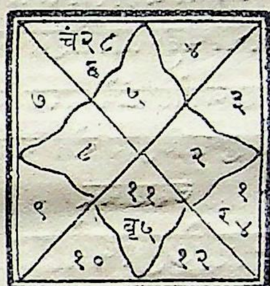
मू०–तत्खेटगेहतुङ्गस्थोनस्याद्यदिचचन्द्रमाः ॥ गैरकम्बूल-
योगस्स्याद्भद्रः कथितोबुधैः ॥ २३ ॥

टी०–यदि चन्द्र उन इत्थशाली ग्रहोंसे उच्च स्थानमें न हो तो भी गैरक-
म्बूल योग होता है और अनिष्ट फलदायक होता है ॥ २३ ॥

मू०–कलानिधिर्नैवबलाधिशाली केनापिसाकन्नचमूथशा-
ली॥केनापियोगंन्नकरोतिपूर्वैःखल्लासरोसावशुभोनिरुक्तः२४

टी०–यदि चन्द्रमा बली न हो और न किसीके साथ इत्थशाल करे और
न किसीसे मेल तो खल्लासर योग जानना यह अशुभ होताहै ॥२४॥ उदाहरणम् ।

खल्लासरयोगोयम् ।



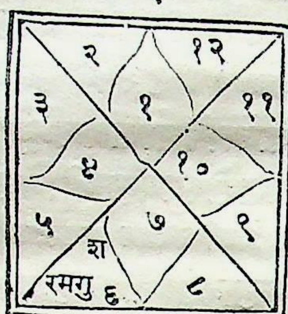
मू०–व्यस्तेनास्तमितेनसूर्य्यकिरणक्षीणेनखेचारिणायोगो
मूथशिलः किलाशुभफलोरन्ध्रेथवान्यस्थले ॥ सक्रूरे
प्रवदन्तिरद्दमथचेत्केन्द्रस्थआपोक्लिमसंस्थेनप्रकरो-
तिमूथशिलकंस्वक्षन्तुकार्य्यन्तदा ॥ २५ ॥

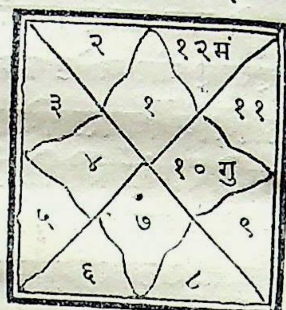
मू०–आपोक्लिमस्थश्चरखेचरश्चेत्केन्द्रस्थमन्देनचमूथशीलम् ॥
करोतिकार्य्येप्रथमंविलम्बं पश्चादवश्यं सकलार्थसिद्धिम २६

टी०–यदि कोई ग्रह वक्री हो अथवा सूर्य्यके कारण क्षीणदृष्टि हो अथवा
अस्तहो अथवा १२, ६, ८ स्थानमें स्थित हो और क्रूरग्रहसे युक्त हो तो रद्द
योग जानो यह कार्य्यविनाशक होताहै ॥ २५ ॥ यदि आपोक्लिम ३।६।९।१२
में चर ग्रह हो और केन्द्र १, ४, ७, १० स्थ किसी एक मन्द ग्रहसे इत्थशाल
करता हो तो प्रथम प्रथम तो कुछ कार्य्यमें विलम्ब हो और फिर अवश्य
कार्य्यसिद्धि हो ॥ २६ ॥

उदाहरणम् ।

प्रथमोरद्दः । द्वितीयोरद्दः ।



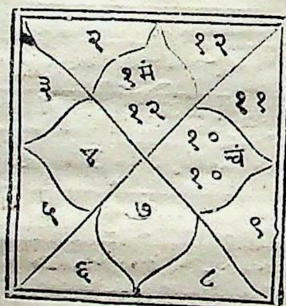


मू०-मन्दस्वगेहेयदिवानिजोच्चेत्त्रैराशिकेवापिनिजेप्रकुर्यात् योगंचरेणाप्यधिकारिणाचेद्दुष्फालिकुत्थश्शुभकृन्निरुक्तः २७

टी०—यदि कोई मन्दग्रह अपनेसे ऊंचे अथवा अपने घरमें वा त्रैराशिक किसी चर ग्रहसे योगकरै तो दुष्फालिकुत्थ योग जानना यह शुभ है ॥ २७ ॥

उदाहरणम्

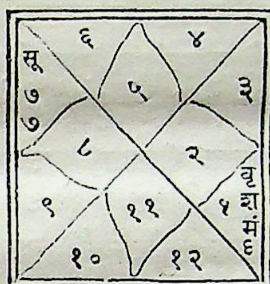
दुष्फालिकुत्थयोगः ।



मू०—अबलखचरयोश्चेन्मूथशीलोयदैकोरचयतिमुथशीलंवीर्ययुक्तग्रहेण ॥ अभिमतफलसिद्धिर्जायतेन्यस्यहस्तान्मुनिभिरभिमतोसौदुत्थकुत्थीरयोगः ॥ २८ ॥

टी०—निर्बल ग्रहोंमें इत्थशाल करनेवाला यदि कोई एक ग्रह किसी बलवान ग्रहसे इत्थशाल करता हो तो दुत्थकुत्थीर योग जानना यह सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला होता है ॥ २८ ॥ उदाहरण ॥ २ ॥

दुत्थकुत्थीरयोगः ।

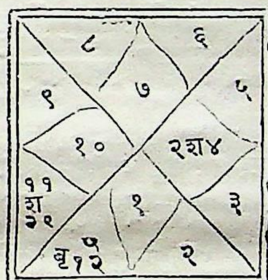


मू०-अन्यालयस्थोबलवान्ग्रहेन्द्रश्चेन्मूथशीलंकुरुते परेण॥तदासदाचारपरैस्तदानीन्तम्बीरयोगःकथितः शुभोयम् ॥ २९ ॥

टी०-कोई बली ग्रह दूसरे के गृहमें वर्त्तमान होकर और दूसरे ग्रहसे इत्थशाल करै तो तम्बीर योग होता है, यह शुभ होता है. ॥ २९ ॥

उदाहरणम् ।

तम्बीरयोगः ।



मू०-अस्तङ्गतोऽव्यस्तगतस्त्वशस्तैर्युक्तोक्षितोरन्ध्रगृहादिसंस्थः ॥ नीचेनतत्स्थेनचमूथशालीराहास्यपुच्छे दुरफाभिधानः ॥ ३० ॥

टी०-यदि कोई ग्रह अस्त अथवा वक्री हो और अशुभ ग्रहोंसे वीक्षित या सप्तमादिस्थानमें होकर वहीं रहते भये किसी एक ग्रहसे इत्थशाल करै अथवा राहुके मुख पुच्छमें हो तो दुरफा योग जानना यह अशुभ होता है ३०

मू०-लुप्तोनीचगतोजितोनधिकृतोदुष्टारियुक्तेक्षितो
नष्टोयंखचरोऽन्यथाऽव्ययभयंदद्यात्स्वपाकेनृणाम् ॥
कुर्याद्वैरिभयंत्वगक्षिपुरुजंरक्तक्षतादिऽव्यथांवैक-
ल्यंसुखसंक्षयंधनहतिंरोगंविनष्टोरवेः ॥ ३१ ॥

टी०-यदि कोई ग्रह लुप्त नीचगत अथवा अपने अधिकारमें नहो या उसको कोई दुष्ट ग्रह अथवा शत्रु देखता हो तो उसे नष्ट समझना चाहिये और यह अपनी दशामें दुःखदाई होता है और सूर्यादि नष्ट ग्रहोंका क्रमसे वैरिभय, त्वक् और नेत्रमें पीडा, रक्त और घाव, आदिकसे दुःख, विकलता, सुखका नाश, धनका नाश और रोग ये फल जानना ॥ ३१ ॥ इति नष्टखचरफलम् ।

अथ द्वादशभावस्थग्रहाणांबलानुसारेण फलानि ।

मू०-तनुपतिर्बलमूर्तियुतःकरोत्यतिसुखानिचकान्तिविवर्द्धनं
भवतिमध्यबलेकिलमध्यताधमबलेधममेवफलन्दिशेत ॥३२॥

टी०-यदि लग्नस्वामी बली होकर वर्षलग्नमें परै तो वह सुख और कान्तिको बढावे यदि मध्यबल हो तो मध्यमफल और यदि अधम हो तो अधम फल कहना ॥ ३२ ॥

मू०-केन्द्रेत्रिकोणेतनुपः करोतिप्रकृष्टसौख्यंविजया-
भिवृद्धिम् ॥ कलानिधिः पूर्णबलःकबूलंकुर्वन्फलं
वाविमलंप्रदत्ते ॥ ३३ ॥

टी०-यदि लग्नस्वामी केन्द्र १, ४, ७, १० अथवा त्रिकोण ९, ५ में हो तो सुख और विजयहो और यदि चन्द्रमा पूर्णबलोपेत होकर लग्नपतिके साथ कबूल योगको करै तौभी शुभ है ॥ ३३ ॥ इति तनुः ॥

मू०-धनाधिराजस्सुरराजमंत्रीजन्मन्यथाब्देधनभावसंस्थः ॥
लग्नाधिराजेनकृतेत्थशालोनूनंधनंस्याद्बहुलंतदानीम् ३४॥

टी०-यदि धन २ भावका स्वामी बृहस्पति हो वह चाहे जन्म वर्षके धन भावमें स्थितहो और लग्नस्वामीसे इत्थशाल करताहो तो धनकी वृद्धि करै ॥३४॥

मू०-जन्मन्यब्देवित्तभावंप्रपश्येद्वित्ताधीशोवर्षपश्चाधिवीर्यः ॥
द्रव्यप्राप्तिर्वीर्यहीनेथतस्मिन्क्रूराक्रान्तेनैकधावित्तनाशः३५

टी०-यदि धनस्वामी बली होकर चाहे जन्म वा वर्षमें धन स्थानको देखे तो द्रव्य प्राप्ति जानना और यही यदि क्रूर ग्रहसे आक्रान्त या निर्बल हो तो अनेक प्रकारसे वित्तनाश होवे ॥ ३५ ॥

मू०-रंध्रेवित्तेदेवतानाममात्येपापैर्युक्तेराजदण्डःप्रचण्डः ॥ वित्तेवास्मिन्साधुखेटैः प्रदृष्टेसंयुक्तेवासेव्यमानोनरस्स्यात् ॥ ३६ ॥

टी०-यदि बृहस्पति वित्त २ वा रंध्र ८ स्थानमें पापग्रहोंसे युक्त हो तो उग्र राजदण्डको प्राप्त करै और यदि वित्तस्थान किसी शुभ ग्रहकी दृष्टिसे वा शुभ ग्रहसे युक्त हो तो शुभफलदाता है ॥ ३६ ॥

इति धनभावः ।

मू०-सूर्येवीर्ययुतेब्दपेत्रिभवगेसौख्यंसहोत्थाद्भवेच्छुक्रेप्येवमसाधुवीक्षितयुतेप्यस्तंगतेवाजिते ॥ आदेश्यंशकटाच्चसंकटतरंजीवेऽनुजस्थेऽनुजात्सौख्यं वर्षपतौकुजेबलवतिप्रीतिस्सहोत्थैर्भवेत् ॥ ३७ ॥

टी०-यदि वीर्ययुक्त सूर्य वर्षपति होकर तृतीयस्थानमें पडे तो सगे भाईसे प्रेम पैदा हो और यही फल शुक्रका है परन्तु यदि यही अशुभ ग्रहकी दृष्टिमें हो अथवा अस्त या वक्री हो तो शकटसे संकट जानना और यदि बृहस्पति अनुज ३ स्थानमें हो तो भाईसे सुखहो और यदि वीर्ययुत मंगल वर्षपति हो तोभी भाईसे सुख जानना ॥ ३७ ॥

मू०-सहोत्थभावे सहजाधिराजेवर्षाधिराजेनविराजमाने ॥ विलग्नराजेनकृतेत्थशालंसुखंसहोत्थैरतुलम्प्रकल्प्यम् ॥ ३८ ॥

टी०-यदि सहोत्थ ३ भावका स्वामी तृतीय स्थानमें हो और वर्षपतिके साथ हो और वर्षलग्नपतिसे इत्थशाल करै तो भाइयोंसे अतुलसुख जानना चाहिये ॥ ३८ ॥

मू०-हायनेजनुषिचेन्दुनन्दनेस्थानगामिनिसितेबलान्वि-
ते ॥ स्यात्सुखंसहजतस्तदन्यथाकम्बुलेमुसरिफे
चपापिभिः ॥ ३९ ॥

टी०-यदि वर्ष अथवा जन्ममें बुध वा शुक्र स्वस्थानी होके और बली होके सहज ३ स्थानमें पडे तो भ्रातृसुख होवे और यदि पाप ग्रहोंके साथ यही कम्बूल वा मुसरिफ योगको करते हों तो इसके विपरीत फल कहना ॥ ३९ ॥

मू०-स्वामिनाचसहजेश्वरेणवानेक्षितेचसहजेखलैर्युते ॥
भ्रातृवर्गपरिदुःखितोनरःक्रूरयुक्तसहजेश्वरेपिवा॥४०॥

टी०-यदि सहज स्थानको न तो सहज ३ स्थानका स्वामी देखताहो और न वर्षपतिकी दृष्टिहो और खलग्रह उस स्थानमें वर्त्तमान हो तो भाइयोंसे दुःख होवे अथवा सहजका स्वामी क्रूरग्रहसे युक्त हो तोभी यही फल जानना ॥४०॥

इति सहजभावः ।

मू०-सचन्द्रसूर्य्येसतितुर्यभावेपापेक्षितेदुःखमुशन्तिपित्रा॥
तुर्यस्थितेतुर्यपतौसवीर्येसुखंभवेद्वासहमाधिनाथे ॥४१॥

टी०-यदि चन्द्रमा अथवा सूर्य तुर्य ४ स्थानमें पापग्रहकी दृष्टिमें हो तो पिता-से दुःख मिले और यदि चतुर्थ स्थानका स्वामी बली होकर चतुर्थ स्थानमें स्थित रहै अथवा सहमाधिकारी हो तो सुख होवे ॥ ४१ ॥

मू०-भानोस्तथेन्दोर्भवनेर्कसूनुःपित्राचमात्राक्रमशोविवा-
दम् ॥ कुर्य्याद्विलुप्तोविजितारिभीतिंसुखेश्वरोवास-
हमेश्वरोवा ॥ ४२ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा अथवा सूर्यके गृहमें शनैश्चर हो तो पिता माता विवाद हो अर्थात् यदि भानुगृहमें हो तो पितासे और यदि चन्द्रगृहमें हो तो मातासे और यदि विलुप्त अथवा विजित हो तो शत्रुसे भय हो यही फल सुखेश्वर और सुखसहमेश्वरकाभी जानना चाहिये ॥ ४२ ॥

मू०-यद्राशिगोजन्मनियामिनीशस्तत्स्थश्शनिश्चेद्र्यदो
जनन्याः ॥ सुखेतुपारांशुसितौसपापौस्यातामहा-
क्लेशकरौचपित्रोः ॥ ४३ ॥

टी०–जिस राशिमें चन्द्रमा जन्ममें हो उसी राशिमें यदि वर्षमें पडे तो माताको कष्ट हो और यदि सुख ४ स्थानमें शुक्र और चन्द्रमा पापयुक्त हो तो पिता माता दोनोंको बडा क्लेश हो ॥ ४३ ॥ इति चतुर्थभावः ॥

मू०–बृहस्पतौवर्षपतौसुतस्थेलाभेथवाबीर्ययुतेसुतेभ्यः ॥
सौख्यंकुजेवारविजेम्बुजेवाप्येवंबिलोमात्फलमामनन्ति ॥ ४४ ॥

टी०–यदि बृहस्पति बली होकर वर्षपति हो और सुत या लाभ स्थानमें वर्त्तमान हो तो पुत्रोंसे सुख जानना और यदि मंगल शनि अथवा चन्द्र हीनबल होकर इन्हीं स्थानोंमें हो तो इसके विपरीत फल जानना ॥ ४४ ॥

मू०–यस्मिन्राशौगीष्पतिर्जन्मकालेवर्षेराशिस्सोपिचेत्पंचमस्थः ॥ धात्रीपुत्रेतत्रसंस्थेबुधेवावर्षाधीशेचापिपुत्रोद्भवःस्यात् ॥ ४५ ॥

टी०–जन्ममें जिस राशिमें बृहस्पति हो और यदि वही राशि वर्षमें पंचम हो और उसमें वर्षाधीश होकर मंगल या बुध पडे तो पुत्र प्राप्ति उस वर्षमें अवश्य होवे ॥ ४५ ॥

मू०–यद्राशिगोजन्मनिभानुसूनुस्सएवराशिर्यदिवर्षलग्ने ॥
चिन्तासुतानांविषमेसुतस्थेमहीसुतेव्यस्तगतेसुतार्त्तिः ४६ ॥

टी०–जिस राशिका जन्ममें शनैश्चर हो यदि वही राशि वर्षमें सुत ५ स्थानमें हो और क्रूर ग्रहसे युक्त हो तो उस वर्षमें लडकोंकी चिन्ता जाननी चाहिये ॥ ४६ ॥

मू०–सुतसहममभीष्टैर्दृष्टमब्देतुतुष्टिः खलुभवतिसुतेभ्यस्सम्भवेद्यत्रजीवः ॥ यदिभवतिसमासुस्थानकेतत्रपुत्रप्रभवसुखमनूनंचिन्तनीयंसुधीभिः ॥ ४७ ॥

टी०–यदि पुत्रसहमके स्वामीको उसके मित्र देखते हों तो उस वर्षमें अवश्य पुत्रोंकी ओरसे तुष्टि होवे और यदि पुत्रसहमेश बृहस्पति पुत्रभावमें पडे तो तोभी पुत्रलाभयोग जानना ॥ ४७ ॥

मू०-पुत्रक्षेत्राधीश्वरेपुत्रसंस्थेवीर्योपेतेपुत्रसौख्यंबहुस्यात् ॥
क्रूराक्रांतेऽस्तंगतेवासुतानांपीडांगाढांप्रौढविद्यावदन्ति ४८

टी०-यदि पुत्र ५ स्थानका स्वामी पुत्रभावमें वर्त्तमानहो और बली हो तो उस वर्षमें पुत्रसुख जानना और यदि वही क्रूर ग्रहोंसे आक्रान्तहो अथवा अस्त हो तो पुत्रोंको अत्यन्त पीडा हो ॥ ४८ ॥

मू० विलोमगामीयदिमंदगामीस्वामीसवर्षेकुरुतेत्रदोषम् ॥
शत्रुस्थितेस्मिन्रुधिरज्वरार्तिश्शूलोद्भवश्चापिविचिन्तनीयः ॥ ४९ ॥

टी०-यदि शनैश्वर वक्री होकर वर्षेश हो और षष्ठस्थानमें पडे तो रुधिरजनित ज्वरकी पीडा और शूलकीभी बाधा होवे यह जानना चाहिये ॥ ४९ ॥

मू०-एवंसुरेज्येचकुजेर्कजेर्केवातातिपित्ताक्षिगदैःप्रपीडा ॥
शुक्रेव्ययेमृत्युसमानरोगः श्लेष्मातिबाधाबहुधारिपुस्थे ५०

टी०--इसी प्रकारसे यदि बृहस्पति मंगळ शनि सूर्य वक्री होकर षष्ठस्थानमें पडें तो वातपित्तसे नेत्रमें पीडा हो और यदि शुक्र १२वें हो तो मृत्युके समान दुःख जानना और छठा हो तो श्लेष्माकी बाधा अधिक होवे ॥ ५० ॥

मू०-वर्षाधिराजेशशिजेरिपुस्थेपापार्दितेवातगदप्रकोपः ॥
तथैवचंद्रेरिपुरंध्रसंस्थे श्लेष्मप्रकोपोमरणेनतुल्यः ॥ ५१ ॥

टी०--यदि बुध वर्षस्वामी होकर और पापग्रहोंसे युक्त षष्ठस्थानमें पडे अथवा चन्द्रमा ६वां या ८वांहो तो श्लेष्माकी व्यथा मरणके तुल्य होवै ॥ ५१ ॥

मू०-भूनन्दनोजन्मनिभानुजोवाराशौस्थितौयत्रसएवराशिः ॥ वर्षेतनुस्थश्शशिनाप्रदृष्टः शीतोष्णयक्ष्मान्वितपित्तबाधा ॥ ५२ ॥

टी०--जन्मकालमें जिसमें मंगल या शनैश्वर हो यदि वही राशि वर्षकालमें वर्षलग्नमें होवे और उसपर चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो सर्दी, गर्मी, पित्त और राजयक्ष्माकी बाधा होवे ॥ ५२ ॥

मू०-बृहस्पतौपापयुतेष्टमस्थेसाज्ञेकुजेलग्नगतेसमूर्च्छा ॥
तन्द्राभवेद्वाथकलत्रसंस्थेसिंहीसुतेऽनन्तगदंवदन्ति ५३

टी०—यदि पापयुक्त बृहस्पति अष्टम स्थानमें वर्त्तमान हो और चन्द्र तथा मंगल लग्नमें हों तो मूर्च्छा और तन्द्रा होवै, परन्तु राहु यदि कलत्र ७ स्थानमें हो तो अनन्त दुःख होवे ॥ ९३ ॥

मू०—योदुष्टखेटोजनिकण्टकस्थोवर्षेविलग्नेसचनोशुभाय ॥
मुंथाकलत्रेचरसातलेचकरोतिशूलंशनिदृष्टदेहा॥ ९४ ॥

टी०—यदि कोई पापग्रह जन्मकालमें कण्टक अर्थात् केंद्र १, ४, ७, १० में हो और वर्षमें लग्नमें पडे तो अशुभ होताहै और यदि मुंथा कलत्र या रसातल ४ भावमें शनिकी दृष्टिमें हो तो शूल जानना ॥ ९४ ॥

मू०—सुरासुरेज्यास्पदगेमहीजेचास्तंगतेशीतलताक्षिरोगः ।
बुधेन्दुयुक्तेसतिकंठगंडस्फोटादिबाधाबहुधावबोध्या ९५

टी०--यदि बृहस्पति या शुक्रके गृहमें मंगल हो और अस्त हो तो नेत्ररोग होवे और यदि बुध चन्द्रयुक्त हो तो गलगण्ड और फोडेकी बाधा होवे॥ ९९ ॥

इति रिपुभावः ।

मू०—वर्षाधिराजेभृगुजेमनोज्ञेजायाविलासादिसुखानिनूनम् ॥ विशेषतोजीवदशाधिकारीक्ष्माजेक्षणात्प्रीतिरलम्मिथःस्यात् ॥ ९६ ॥

टी०—यदि शुक्र बली होकर वर्षपति हो और सप्तमभावमें पडे तो स्त्रीविलासमुख अधिक जानना और यदि कदाचित् शुक्र जीवके हद्दामें हो और मंगलकी दृष्टिमें हो तो अत्यन्त प्रीतिवृद्धि हो ॥ ९६ ॥

मू०—बालाविलासान्बुधदृग्युतिभ्यांजारंजरत्याशनियोगदृग्भ्याम् ॥ वागीशयोगेनलसद्विभूषांनवीनयोषांलभतेमनुष्यः ॥ ५७ ॥

टी०--यदि बुधकी दृष्टियोग हो तो बालाविलाससुख होवे और यदि शनिका योग वा दृष्टि हो तो बूढी स्त्रीसे व्यभिचार होवे और यदि बृहस्पतिका योग होवे तो सुन्दर नवीन भूषणयुत स्त्री मिले ॥ ९७ ॥

मू०—प्रसूतिलग्नाधिपतिर्बलीयान्वर्षेकलत्रेचकलत्रसौख्यम् ॥ लग्नेविलग्नेभृगुजेविवाहोवीर्यान्वितेवासहमेतदीये ॥ ५८ ॥

टी०—यदि प्रसूतिलग्नका स्वामी बली होकर वर्षमें कलत्र स्थान ७ में पडे तो स्त्रीसे सुख हो और यदि शुक्र बली होकर उसी लग्नमें हो अथवा कलत्र सहमेश्वर होकर वर्ष लग्नमें पडे तो विवाह होवे ॥ ५८ ॥

मू०—चेदिन्दुसूनुर्भृगुनन्दनस्यस्थानंगतस्त्रीसुखदोनिरुक्तः । कलत्रनाथोबलवान्कलत्रे कलत्रकेलिं विपुलांकरोति॥५९

टी०—यदि बुध शुक्रके स्थानमें हो तो स्त्रीको सुख होवे और यदि कलत्रस्वामी बली होकर कलत्र ७ स्थानमें वर्त्तमान हो तो स्त्रीको अत्यन्त सुख होवे ॥ ५९ ॥

मू०—भूनन्दनश्चेद्भृगुनन्दनस्यस्थानंगतोस्तेमुथहाखलोवा ॥ खलस्यदृष्टौहिकलत्रचिंताभवेन्नितान्तंहिसुतादिकानाम् ॥ ६० ॥

टी०—यदि मंगल शुक्रके घरमें पडा हो और अस्त ७ में मुंथा वा कोई खलग्रह हो और खलग्रहकी दृष्टि हो तो पुत्रादि संतति और स्त्रीकी चिन्ता होवे ॥ ६० ॥

मू०—बलीयसोर्लग्नकलत्रपत्योश्चेन्मूथशीलंकिलयोषिदाप्तिः ॥ कान्तानिकेतंप्रविलोकयेद्वाकविर्नवीनप्रमदाप्तिकृत्स्यात् ॥ ६१ ॥

टी०—यदि लग्नपति और कलत्र ७ पति बली होकर परस्पर इत्थशाल करैं तो स्त्रीप्राप्ति होवे और यदि शुक्रकी दृष्टिभी हो तो नवीन स्त्रीप्राप्ति जानना ॥ ६१ ॥ इति सप्तमभावः ॥

मू०—भौमेसमास्वामिनिहीनवीर्येकुर्याद्विघातंशशिभेग्निभीतिम् ॥ नृराशिगेचौरनरेन्द्रबाधाभौमेष्टमेचन्द्रयुतेप्यरिष्टम् ॥ ६२ ॥

३ टी०—यदि हीनवीर्य मंगल वर्षपति हो तो कष्ट होवे. चन्द्रमाकी राशिमें पडे तो अग्निभीति मिथुनके हों तो राजा या चोरकी बाधा और मंगल अष्टम हो तथा चन्द्रयुक्त हो तोभी अरिष्ट जानना ॥ ६२ ॥

मू०-विलग्नपालेनचमूथशीलंचेद्रन्ध्रपालःप्रकरोतिरिष्टम् ॥
वर्षाधिराजेष्टमभावसंस्थेभौमेनयुक्तेनिधनंगृणन्ति ॥६३॥

टी०-यदि रंध्रस्थानका स्वामी वर्षलग्नपतिके साथ इत्थशाल करे तो कुछ अरिष्ट होवे और यदि वर्षपति, अष्टमस्थानमें मंगलके साथ हो तो मृत्युके तुल्य योग कहना ॥ ६३ ॥

मू०-कुजहिमांशुजयुक्तदिवाकरोमृतिकरोयदिवाविषयान्तरे ॥ रविसुतेदशमोपगतेतथाज्वलनतोनिलतोऽपिभयंभवेत् ॥ ६४ ॥

टी०-यदि अष्टमस्थानमें मंगल, बुध और सूर्य हो तो परदेशमें मृत्यु जानना और यदि शनि दशमस्थानमें हो तो अग्नि और वायुका भय जानना ॥ ६४ ॥

मू०-रवियुतेकुसुतेदशमस्थिते भवतिवाहनतःपतनं विधौ ॥
कुजपदेनृपतोऽसुखमर्कजे बलयुतेम्बरगेभयमस्त्रतः ॥६५॥

टी०-यदि सूर्यके साथ मंगल दशमस्थानमें पडे तो उनकी दशामें वाहनसे गिरै और यदि चन्द्र मंगलके स्थानमें पडे तो राजासे दुःख मिले और यदि शनि बली होकर दशम होवे तो अस्त्रसे भय होवे ॥ ६५ ॥

मू०-निधनसहमतश्चेत्तत्पतीरंध्रयातोभवतिनिधनकारीजन्मलग्नाष्टमेशौ ॥ व्ययगृहनिधनारिस्थानगौवर्षलग्नान्निधनधनविनाशावाप्तिदौतौभवेताम् ॥ ६६ ॥

टी०-यदि निधन सहमसे उसका स्वामी रंध्रस्थानमें हो तो नाश कहना। और यदि जन्मलग्नेश और अष्टमेश वर्षलग्नसे द्वादश, अष्टम, षष्ठस्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें पडे हों तो मृत्यु धननाश और दुःख होवै ॥ ६६ ॥

मू०-जननिधनभावेदेवदेवाधिदेवस्त्वधिकृतिपरिहीनोवादखेदप्रदःस्यात् ॥ यदिदनुजपुरोधावीक्षितश्चेत्तदानींजनयतिविजयार्तिंकष्टतोदुष्टवर्गात् ॥६७॥

टी०-यदि जन्मसे अष्टमस्थानमें देवगुरु हो और अधिकारी न हो तो वादसे खेद हो परन्तु यदि शुक्रकी दृष्टिमें हो तो दुष्टवर्गोंसे कष्टसे विजयप्राप्ति होवे ६७॥

मू०-वर्षपेकुजयुतेरणभीतिः प्रान्त्यसद्मनिचभूमितनूजे ॥ वाग्विवादइननैधनमस्ते गोत्रशत्रुकलहः प्रबलस्स्यात ॥ ६८ ॥

टी०-यदि वर्षपति मंगलयुक्त हो तो रणका भय जानना और द्वादश भावमें हो तो यही फल है और अस्त ७ स्थानमें हो तो वाग्विवाद और गोत्रमें कलह होवे ॥ ६८ ॥ इत्यष्टमभावः ॥

मू०-विलग्नपालः किलमूथशीलंचेद्वर्षपालेनसमंकरोति ॥ अचिन्तितं यानमथेत्थशाले व्यस्ते तदाचिंन्तितमेवयानम् ॥ ६९ ॥

टी०-यदि वर्षेश और लग्नेश इत्थशाल करें तो अचिन्तितयात्रा हो और यदि इसके विपरीत हों ता चिन्तित यात्रा जानना ॥ ६९ ॥

मू०-वर्षस्वामीभूमिपश्चाथसौम्योधर्मेसंस्थोवातृतीयेबलीयान् ॥ भागींदेवाभीष्टसिद्धिश्चलंयत्कार्यंस्तब्धंबुद्धिमद्भिर्विचार्यम् ॥ ७० ॥

टी०-यदि वर्षस्वामी मंगलहा अथवा बुध हो और धर्म ९ स्थानमें वर्त्तमान हो वा सबल होकर तृतीयस्थानमें हो तो प्रथमहीसे कार्यसिद्धि कहना और जो कार्य चल होवे उसे पुष्ट समझना ॥ ७० ॥

मू०-राज्येनुजेवावनिजेब्दराजेसत्खेचरैर्युक्तनिरीक्षमाणे॥ गुणःप्रयाणेब्दपतौकबूले धर्मत्रिगेर्के गमनोद्गमस्स्यात् ॥ ७१ ॥

टी०-यदि राज्य १० स्थान वा अनुज ३ स्थानमें मंगल वर्षपति होकर पड़े और शुभग्रहकी दृष्टिमें हो ता यात्रामें गुण मिले और यदि धर्म ९ वा तृतीय स्थानमें रहकर वर्षेशके साथ कबूल योगको करे तो अवश्य यात्रा हो ॥ ७१ ॥

मू०-वीर्योपेतेपुण्यगेविक्रमेवा वर्षाधीशेभार्गवेमार्गसौख्यम ॥ सौम्येप्येवंतीर्थयानेभिमानोवीर्यन्यूने दुष्टयानन्निरुक्तम् ॥ ७२ ॥

टी०-यदि शुक्र वर्षाधीश होकर और बली होकर पुण्य ९ वा विक्रम ३ स्थानमें वर्त्तमान हो तो मार्गसुख होवे और यदि कोईभी सौम्यग्रह ऐसा हो तो तीर्थयात्राविषयक अभिमान हो यदि वीर्यहीन हो तो दुष्टयानप्राप्ति होवे ॥ ७२ ॥

मू०-तनुपनवमयोगेस्यादकस्मात्प्रयाणं सुकृतकृतनिवासेवाक्पतौदूरयात्रा ॥ नभवतितनुजानांशोभनं भानुसूनौनवमभवनगामिन्यामनन्तीतिसंतः ॥ ७३ ॥

टी०-यदि नवमस्थानपति नवममें हो तो अकस्मात् यात्रा करना पडे और यदि सुकृत ९ स्थानमें वृहस्पति निवास करै तो दूर यात्रा हो और यदि नवम भवनमें शनि पडे तो सन्तानको सुख नहीं होता ॥ ७३ ॥

मू०-भौमेसमास्वामिनिकेंन्द्रसंस्थेदूरेस्थितिःस्याद्भ्रमणेननूनम् ॥ उदारसारेनवमेश्वरेवापुण्याधिसंस्थे गमनंसुखेन ॥ ७४ ॥

टी०-यदि मंगल वर्षस्वामी होकर केंद्रमें (१,४,७,१०,) रहै तो दूरदेशमें भ्रमण करना पडे और यदि नवमेश्वर बली होकर पुण्य ९ स्थानमें वर्त्तमान रहै तो सुखसे यात्रा हो ॥ ७४ ॥

मू०-मार्गनामसहमेश्वरेचरेतत्रगेचनवमाश्रितेथवा ॥ मार्गसौख्यमुपयातिमानवोदुःखमेतिविमलेखलाकुलें ॥ ७५ ॥

टी०-यदि मार्ग सहमका स्वामी स्वीय स्थानमेंहो अथवा नवम में हो तो मार्गसुखहो और यदि खलयुक्त तो हो दुःखहो ॥ ७५ ॥ इति नवमभाव ।

मू०-वर्षेशेदशमस्थितेबलयुतेराज्याप्तिहर्षोदयः
तस्माच्चापरकेन्द्रगेशुभयुतेस्थानान्तराप्तिर्नृणाम् ॥
सूर्येतुर्यगतेतुवीर्यसहिते पूर्वाधिकारागमःकामंला-
भगतेथवाभवपतेस्सञ्जायतेगौरवम् ॥ ७६ ॥

टी०-यदि बली होकर वर्षेश दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति हर्षवृद्धि होवे और यदि केन्द्र १. ४, ७, १०, में हो और शुभयुक्तहो तो स्थानान्तरकी प्राप्ति होवे और यदि सूर्य बली होकर चतुर्थस्थानमें पडे तो प्रथमका छुटा भया अधिकार मिले और यदि लाभ ११ स्थानमें हो तो राजा मान करै और द्रव्य प्राप्ति होवे ॥ ७६ ॥

मू०-सिंहेप्रसूतौसमुदारसारो दिवाकरोराज्यकरोन-
राणाम् ॥ नीचस्थितःपापयुतः खयातः पृथ्वीपते-
र्बंधनमातनोति ॥ ७७ ॥

टी०-यदि सिंहलग्न पंचम हो और उसमें सूर्य बली होकर पडे तो राज्यपदवीको प्राप्त करै और यदि नीच ७ के होकर दशम स्थित हो तो बंधनका भय होवे ॥ ७७ ॥

मू०-इलासुतस्थानगतःकलावान्स्थलान्तरेसौसक-
लार्थदःस्यात् ॥ लाभस्थितोलाभपतिर्नितान्तं विद्या-
प्रसङ्गेनकरोतिलाभम् ॥ ७८ ॥

टी०-यदि मंगलके स्थानमें चन्द्रमा पडे तो वह दूसरे स्थानपर संपूर्ण मनोरथ देता है और यदि लाभस्वामी लाभस्थानमें हो तो विद्याप्रसङ्गसे धनप्राप्ति जानना ॥ ७८ ॥

मू०-नृपतिसहमराजेराज्यभाजिप्रवीर्ये शुभयुजिकुलतु-
ल्योराज्यलाभोनराणाम् ॥ गगनतनुपयोश्चेत्स्यात्कबू-
लाख्ययोगः प्रभवतिपरदेशेराज्यसौख्योपलब्धिः ॥ ७९ ॥

टी०—यदि राज्यसहमका स्वामी बली होकर और शुभयुक्त होकर राज्य १० स्थानमें पडे तो कुलानुसार राज्यलाभ कहना और यदि दशम स्वामी और लग्नपति से कबूल योग होवे तो परदेशमें राज्यसुख कहना ॥७९॥

मू०-नृपतिसहमनाथोवाब्दपोभानुनाचेद्रचयतिमुथ-
शीलंराज्यलब्धिस्तदानीम् ॥ ननुतनुपतिनाचेद्रा-
ज्यपोवित्थशालंकलयतिफलमूह्यंपूर्ववत्सर्वमेव ॥ ८० ॥

टी०—यदि राज्यसहमेश अथवा वर्षपति सूर्यसे इत्थशाल करे तो उस वर्षमें राज्यलाभ कहना और यदि राज्यस्वामी और लग्नस्वामीका इत्थशाल हो तोभी यही फल जानना ॥ ८० ॥ इति दशमभावः।

मू०-वर्षस्वामीयामिनीशात्मजश्चेद्द्रव्यस्थानेसद्व-
णिक्कर्मणस्स्वम् ॥ वित्तस्थानेलग्नगश्चेत्कबूलं कुर्या-
द्वर्षस्वामिनार्थाधिपःस्यात् ॥ ८१ ॥

टी०—यदि वर्षस्वामी बुध हो और द्रव्यस्थानमें हो तो अच्छे वाणिज्यसे द्रव्यलाभ जानना और यदि मंगल वित्तस्थानमें अथवा लग्नमें होकर वर्षस्वामीसे कबूल योग करे तो भी यही फल है ॥ ८१ ॥

मू०-खलैर्विहीनाबलिनश्शुभाख्यालाभालयेलाभक-
राभवन्ति ॥ हानिस्सपापास्तगलाभनाथेदण्डस्त-
थाचित्रशिखण्डिसूनौ ॥ ८२ ॥

टी०—यदि खलरहित शुभग्रह बली होकर लाभस्थानमें पडें तो वे लाभकारक होते हैं और यदि लाभनाथ पापग्रहसे युक्त या अस्त हो तो हानि और बृहस्पति हो तो दुःख जानना ॥ ८२ ॥

मू०-गगनभवनसंस्थामुन्थहावर्षकालेलिखनपठनलाभंस-
त्वयुक्ताकरोति ॥ निजपतिसहितासारन्ध्रशत्रुव्यय-
स्थावितरतिबहुविघ्नंप्रातिकालेनराणाम् ॥ ८३ ॥

टी०—यदि वर्षकालमें मुन्था दशमस्थानमें बली होकर वर्तमान रहे तो लिखन पठन विषयक लाभ होवे और यदि वही अपने स्वामीके साथ रहकर रंध्र ८

शत्रु ६ व्यय १२ स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें हो तो कार्यप्राप्तिके समय विघ्न होवे ॥ ८३ ॥ इत्येकादशः ।

मू०-मनुष्यराशौव्ययभावसंस्थेवर्षाधिराजेभृगुजेक्षितेस्यात्॥ भृत्याश्रितानांचचतुष्पदस्थेचतुष्पदानांविबलेविशेषात् ॥ ८४ ॥

टी०-यदि मिथुनराशि व्यय १२ स्थानमें हो और शुक्रकी दृष्टिमें हो तो भृत्योंको दुःख होवे और यदि चतुष्पद राशि इसी स्थानमें हो तो चतुष्पदोंको दुःख हो ॥ ८४ ॥

मू०-व्ययालयेवानिधनालयेवाबली समेशोजलजेशसूनुः। जलाशयंसान्निलयंद्रुमाणामारोपणंसौम्ययुतःकरोति ८५

टी०-यदि सौम्ययुक्त शनि व्यय १२ अथवा निधन ८ स्थानमें हो तो जलाशय मकान वाटिकादि बनाने और आरोपण करनेमें उत्साह बढे ॥ ८५ ॥

मू०-तडागकूपोत्तमवापिकानामुत्पादनंसुन्दरमान्दिराणाम् ॥ आरोपणंचारुमहीरुहाणांवाचस्पतौवर्षपतौव्ययस्थे ८६

टी०-यदि बृहस्पति वर्षपति होकर व्ययस्थानमें पडे तो तडाग उत्तम कूप वाटिका और सुन्दर मन्दिर आदिके बनवानेका उत्साह होवे ॥ ८६ ॥

मू०-गगनवेश्मनिभानुसुतान्वितेऽवनिसुतेब्दपतौपशुनाशनम् ॥ द्विषिचतुष्पदराशिगतेरवावनुचरैस्सहितोबहुदुःखदः ॥ ८७ ॥

टी०-यदि गगन १० स्थानमें सूर्यपुत्र हो और मंगल वर्षपति हो तो पशुवोंका नाश हो और यदि किसी चतुष्पद राशिपर सूर्य शत्रु स्थानमें हो तो अनुचरसहित सबको अत्यन्त कष्टहो ॥ ८७ ॥

मू०-प्राचांविचारानुमतंनितान्तंमयोदितंद्वादशभावजातम्॥ फलंबलंवीक्ष्यनभश्चराणांतद्योजनीयंहिदशासुतेषाम् ॥ ८८ ॥

टी०-मैंने प्राचीनोंका मत विचार कर यह द्वादशभावफल निरूपण किया और यह उनके बलाबलानुमानसे उन्हीं ग्रहोंकी दशामें फल कहनाचाहिये ॥८८॥

इति श्रीताजिकभूषणे द्वादशभावफलाध्यायः ॥

मू०–इतीरयित्वाखिलभावजातफलानिसत्कोमलवा-
ग्विलासैः ॥ वक्ष्येधुनाविष्णुपदास्पदानां पृथक्पृथ-
ग्भावफलानिनूनम् ॥ १ ॥

टी०–इस प्रकारसे द्वादश भावका फल कोमलशब्दोंसे निरूपण कर अब पृथक् पृथक् भाव गत ग्रहोंका फल निरूपण करनेका प्रारंभ करता हूं ॥ १ ॥

मू०–स्याच्छिरोवदनलोचनपीडायातिकान्तितनुता-
मपिकान्ता॥चिन्तयातितनुतातनुरुच्चैर्हायनेदिन-
पतौतनुसंस्थे ॥ २ ॥

टी०–यदि वर्षमें सूर्य्य तनु १ स्थानमें हो तो मस्तक,मुख और नेत्रमें पीडा और स्त्रीभी दुःखित हो और चिन्तासे शरीर अति दुर्बल हो ॥ २ ॥

मू०–चौरवैरिनिकराच्चनरेशादग्निनाभवतिभीतिरतीव ॥
स्यात्कुटुम्बकलहःकिलनित्यंवत्सरेदिनकरेधनसंस्थे ॥ ३ ॥

टी०–यदि वर्षमें धन २ स्थानमें सूर्य्य हो तो चौर, शत्रु, राजा और अग्निसे बहुत भय हो और नित्य कुटुम्बमें कलह हो ॥ ३ ॥

मू०–राजमानकनकागमनाद्यैर्हृष्टताचपरिपुष्टिरपीह ॥
कार्य्यसाधनमथोविजायतेभानुमान्ननुयदानुजसंस्थः ॥४॥

टी०–यदि सूर्य्य अनुज ३ स्थानमें हो तो राजासे मान, धनागम, शरीर सुख और कार्य्यसिद्धिभी हो ॥ ४ ॥

मू०–भूमिपालकुलभीतिकृशत्वंवैरिभावमुपयातिसुहृद्भिः॥
वाहनाद्भयमपीहनितान्तं भूतलेकमलकाननकान्ते॥ ५ ॥

टी०–यदि सूर्य्य भूतल ४ स्थानमें हो तो राजकुलसे भय मित्रोंसे वैर और दौर्बल्यता, सवारीसे भय बहुत प्राप्त हो ॥ ५ ॥

मू०–पुत्रमित्रपरिवारकलत्रोत्पन्नपीडनविहीनसुखस्स्यात् ॥
मानवोमतिधनैः परिशून्यः पद्मकाननपतौ सुतसंस्थे ॥६॥

टी०—यदि सुतस्थानमें सूर्य्य हो तो पुत्र मित्र कुटुम्ब स्त्रीद्वारा दुःख हो और मनुष्य बुद्धि धनसे रहित हो ॥ ६ ॥

मू०-वैभवंहि लभते क्षितिपालात् कामिनीविपुलकेलिविलासम् ॥ शत्रुवर्गविजयोधनवृद्धिर्वैरिमन्दिरगतस्सविताब्दे ॥ ७ ॥

टी०—यदि सूर्य्य वर्षमें शत्रु ६ स्थानमें हो तो राजासे लाभ स्त्रीसुख भोगादि शत्रुओंसे जय धनवृद्धि हो ॥ ७ ॥

मू०—वस्तिलोचनशिरःपरिपीडायानमागमनमत्रविचित्रम् ॥ हायनेदिनपतौमदसंस्थेकामिनीजनमनःपरितापः ॥ ८ ॥

टी०—यदि सूर्य मद ७ स्थानमें हो तो पेडू, नेत्र, शिरमें पीडा और उत्तम सवारी और स्त्रियोंको दुःख होय ॥ ८ ॥

मू०-पित्तसम्भवविकारशरीरेनेत्ररुक्परिभवेनचदुःखम् ॥ भूमिपानगरलज्वलनाद्यैर्व्यालतोपिभयमष्टमगेर्के ॥ ९ ॥

टी०—यदि सूर्य्य अष्टमस्थानमें हो तो शरीरमें पित्तरोग, नेत्ररोग और पराभवसे दुःख हो और राजा अग्नि विष और सर्पसे भय हो ॥ ९ ॥

मू०-धर्म्मकर्म्मविगताभिरुचित्वंचिन्तयाचविमतित्वमतीव। संस्थितेनवमधाम्निचमित्रेमित्रपुत्रककलत्ररतिस्स्यात् १०

टी०—यदि सूर्य्य नवमस्थानमें हो तो धर्म्मकर्म्मसे विरुद्ध बुद्धि और चिन्तासे कुबुद्धि और मित्र पुत्र कलत्रमें प्रीति हो ॥ १० ॥

मू०-राजगौरवयशस्सुखवित्तान्नित्यमेवचयतामुपयाति ॥ कार्य्यसिद्धिरपिबुद्धिविधानादम्बरेऽम्बरमणौरमणीये ११

टी०—यदि सूर्य्य अम्बर १० स्थानमें हो तो राजासे मान, यश, सुख धन, नित्य वृद्धिको प्राप्त हो और बुद्धिके द्वारा सर्व कार्य्यसिद्धि होय ॥ ११ ॥

मू०-दद्यात्सम्यग्भाग्यमारोग्यपूर्वं हर्षोत्कर्षम्पौ-
रुषंशत्रुनाशम् ॥ क्षोणीपालात्प्राप्तिमर्थागमञ्च
प्राप्तिप्राप्तस्सततसतिर्द्धनातिम् ॥ १२ ॥

टी०-यदि सूर्य्य ११ स्थानमें हो तो आरोग्यता, हर्ष, उत्साह, पौरुष, शत्रुनाश और राजासे धनप्राप्ति और धनागम हो ॥ १२ ॥

मू०-वैरम्मित्रैर्नेत्रपीडातिगाढापित्तोत्पत्तिःस्याद्विप-
त्तिर्धनस्य ॥ नप्राशस्त्यस्यापिवानिःकदाचिद्वर्षावे-
शेद्वादशे द्वादशात्मा ॥ १३ ॥

टी०-यदि वर्षकालमें सूर्य १२ स्थानमें हो तो मित्रसे वैर, नेत्रमें रोग और गाढ पित्तकी उत्पत्ति और धनका दुःख प्रशंसासे रहित हो ॥ १३ ॥ इति सूर्यभावफलानि ॥

मू०-किरणपूरणता हि यथायथा भवतिशीतकरेशुभतात-
था ॥ अथतथैवमयूखविहीनता हिमकरेऽतितरांपरि
दुष्टता ॥ १४ ॥

टी०-जैसे जैसे चन्द्रमा अंशोंमें अधिक होता है उतना अधिक शुभ कहना और जैसे जैसे क्षीण वैसेही फल दुष्ट जानना ॥ १४ ॥

मू०-श्वासारिबाधाबहुधानराणांतथाविकारंनयनाननेषु ॥
द्रव्यागमञ्चान्यतमंकृशत्वंहोरागतश्शीतकरः करोति१५

टी०-यदि चन्द्रमा लग्नमें हो तो श्वासरोग, शत्रुबाधा नेत्रविकार और मुख-विकार हो द्रव्यप्राप्ति और शरीरको दुर्बलताभी होवे ॥ १५ ॥

मू०-स्वजनगौरवतांविमलामतिःप्रतिदिनंसितवस्तुसमा-
गमम् ॥ धनगतः कुरुतेधनसंचयं हिमकरो न करोति
रिपूदयम् ॥ १६ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा धन २ भावगत हो तो आत्मीय जनोंका गौरव, प्रतिदि-नसे वस्तुकी प्राप्ति, धनसंचय और शत्रुनाश हो ॥ १६ ॥

मू०—द्रव्यलाभविविधोत्सवपूर्वं गर्वितारिपरिहारविभुत्वम् ॥ धर्मकर्मणिरतिंसहजस्थस्सम्प्रयच्छति नृणांहरिणांकः ॥ १७ ॥

टी०—यदि चन्द्रमा सहज ३ स्थानमें हो तो द्रव्यलाभ अनेक प्रकारके उत्सव गर्वित शत्रुका नाश पदप्राप्ति और धर्मकर्ममें प्रीति बढै ॥ १७ ॥

मू०—तुरगयुवतिसौख्यंगोमहिष्यादितोवा निजजनधनलाभंक्षेत्रपुत्रोन्नतिंच ॥ जनयतिमनुजानांनूनमानन्दपूरं हरिणकिरणमालीभूतलस्थानशाली ॥ १८ ॥

टी०—यदि चन्द्रमा भूतल ४ स्थानमें हो तो अश्व, स्त्रीसुख, गौ वा भैंस सुख, बन्धुलाभ, क्षेत्र और पुत्रकी वृद्धि और अनेक प्रकारके आनन्द उत्पन्न हों ॥ १८ ॥

मू०—भूमिपालकुलतोविपुलार्तिं कामिनीविलसितानि नितान्तम् ॥ बुद्धिगौरवजयोत्सववृद्धिं सम्प्रयच्छतिसुतेऽमृतरश्मिः ॥ १९ ॥

टी०—यदि सुत ५ स्थानमें चन्द्रमा हो तो राजद्वारा अच्छी धनप्राप्ति हो, स्त्रीविलाससुख हो, बुद्धिवृद्धि हो, शत्रुपराजय, उत्सववृद्धि आदि सब होवें॥१९

मू०—श्लेष्मवातजनितामतिबाधां बांधवैश्चविदधातिविवादम ॥ तस्कराच्चनृपतेर्दृढपीडां वैरिवेश्मनिनिशापतिरेषः ॥ २० ॥

टी०—यदि चन्द्रमा वैरि ६ स्थानमें हो तो श्लेष्माकी बाधा, वातबाधा, बान्धववर्गमें परस्पर विवाद, चोर और राजासे भय होवै ॥ २० ॥

मू०—राजमानजनगौरवयुक्तं विक्रयक्रयकलत्रजसौख्यम् ॥ द्रव्यलाभसुलभामपिलक्ष्मीमिन्दुरिन्दुवदनासदनस्थः २१

टी०—यदि चन्द्रमा इन्दुवदना (स्त्री) ७ स्थानमें पडे तो प्रतिष्ठाकी वृद्धि हो, क्रयविक्रयमें सुख हो, स्त्रीसुख हो और लक्ष्मी प्राप्त होवे ॥ २१ ॥

मू०—नानानर्थोर्थव्ययोऽव्यर्थएवस्वल्पानन्दोमन्दबुद्धित्वमत्र गात्रेकार्श्यनेत्ररुक्श्लेष्मबाधारंध्रेचन्द्रेप्रोक्तमेतन्मुनीन्द्रैः २

टी०— यदि चन्द्रमा रन्ध्र ८ स्थानमें हो तो नाना प्रकारके अनर्थ और व्य

द्रव्यव्यय होवे, आनन्दकी हानि हो, बुद्धि मन्द हो, शरीरमें दुर्बलता, नेत्रोंमें रोग, श्लेष्माकी बाधा होवे ऐसा मुनीन्द्रोंका मत है ॥ २२ ॥

मू०-सुकृतबुद्धिसमृद्धिविवर्द्धनं ननुधनागमनादिकमादिशेत् ॥ कुमुदकाननजविनदानदे नवमधामसमागममागते ॥ २३ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा नवम ९ स्थानमें हो तो सुकर्ममें बुद्धि बढे, धनकी प्राप्ति आदि हो ॥ २३ ॥

मू०-लाभोभवेद्भूमिपतेस्सकाशात्कलत्रमित्रान्वितमत्रसौख्यम् ॥ विपक्षपक्षक्षयदक्षएववर्षेहिमांशुर्दशमाश्रितश्चेत् ॥ २४ ॥

टी०-यदि वर्षमें चन्द्रमा १० दशम स्थानमें पडे तो राजद्वारा लाभ होवे, स्त्री और मित्रद्वारा सुख हो और शत्रुनाश अवश्य हो ॥ २४ ॥

मू०-श्वेतवस्तुकृतलब्धिमनूनांसन्मतिंवितनुतेननुनित्यम् ॥ कुंजराम्बरतुरंगमलाभंलाभवेश्मनिनिशाकरएषः ॥ २५ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा लाभ ११ स्थानमें पडे तो श्वेतवस्तु मुक्ताआदिका लाभ हो, सुबुद्धि हो, हस्ती, वस्त्र और अश्व आदिकी प्राप्ति होवे ॥ २५ ॥

मू०-नेत्ररुग्रिपुभयंधनव्ययंनित्यमेवकलहन्निजालये ॥ चंचलंकिलमनस्समादिशेद्द्वादशेशशिनिवेश्मनि स्थिते ॥ २६ ॥

टी०-यदि द्वादश १२ स्थानमें चन्द्रमा हो तो नेत्ररोग, शत्रुभय, धनव्यय और घरमें नित्य कलह हो और मन चंचल रहै ॥ २६ ॥ इतिचन्द्रभावफलानि ॥

मू०-मौलौवक्त्रेनेत्रयोश्चापिबाधा हानिर्नूनंस्वालयेवाकलिःस्यात् ॥ रक्तात्पित्ताद्देहिनोदेहकार्श्यंधात्रीपुत्रोमूर्तिवर्तीयदाहि ॥ २७ ॥

टी०-यदि मंगल मूर्ति १में हो तो शिर, मुख और नेत्रमें पीडा हो, हानि हो, घरमें कलह हो और रक्त पित्त विकारसे शरीर दुर्बल रहै ॥ २७ ॥

मू०-भूपालचौरानलभीतिरुग्राव्यग्रामनोवृत्तिरपीष्टकृष्टा ।
दृशोश्चबाधाबहुधानराणामुक्तंपुराणैर्धरणीसुतेऽर्थे ॥ २८ ॥

टी०-यदि मंगल अर्थ २ स्थानमें हो तो राजा, चोर और अग्निकी बडी भीति होवे, चित्त चंचल रहे, मनोरथ न पूरे हों, नेत्रोंमें बहुत प्रकारकी बाधा होवै यह प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ २८ ॥

मू०-मानंधनंशत्रुविनाशनंचमहोत्सवारोग्यनृपप्रसादम् ॥
वदेन्मनीषीविशदंविशेषात्पृथ्वीतनूजेसहजेनराणाम् २९॥

टी०-यदि मंगल सहज ३ स्थानमें हो तो मान और धनवृद्धि हो, शत्रुनाश हो, उत्सव बढै, आरोग्य होवे और राजा प्रसन्न हो, इत्यादि फल कहना चाहिये ॥ २९ ॥

मू०-सङ्कष्टदेशाटनकंकुटुम्बाद्वादःसुहृद्भ्यो हृदयेविषादः ॥
चतुष्पदानान्निधनम्प्रणीतंक्षोणीसुतेभूतलभावयाते ॥३०॥

टी०-यदि मंगल भूतल ४ स्थानमें हो तो कुटुम्बसे दुःख, परिभ्रमण, मित्रोंसे लडाई, चित्तमें खेद, चौपायोंका नाश हो ॥ ३० ॥

मू०-क्रोडेपीडादुर्म्मतिर्वैमनस्यस्थैरंवैरम्बन्धुवर्गेणसार्द्धम् ॥
अर्द्धाङ्गादेर्म्मानसेचापिदुष्टंपुत्रक्षेत्रेभूमिपुत्रेविचिन्त्यम् ३१

टी०-यदि भौम पुत्र ५ स्थानमें हो तो छातीमें दर्द, कुबुद्धि, भाइयोंके साथ बहुत वैर, शरीरमें अर्धाङ्ग रोग और मन दुःखी हो ॥ ३१ ॥

मू०-भूपात्प्राप्तिंशत्रुवर्गेविपत्तिम्बुद्धेर्वृद्धिम्मित्रसंवर्द्धनञ्च ॥
हर्षोत्कर्षंवर्षकालेबलीयान्धात्रीपुत्रःशत्रुसंस्थःकरोति ३२॥

टी०-यदि वर्षमें धात्रीपुत्र (मङ्गल) शत्रु ६ स्थानमें हो तो राजासे लाभ, शत्रुओंको दुःख, बुद्धिकी वृद्धि, मित्रोंका उपचय और अधिक सुखी हो ॥ ३२ ॥

मू०-देहपीडागेहिनीनामसौख्यंहानिर्देशभ्रंशतास्यान्निता-
न्तम् ॥ शत्रोर्भीतिर्नीतितोवैपरीत्यन्यूनस्थानेनन्दनेभू-
तधात्र्याः ॥ ३३ ॥

टी०—यदि मंगल द्यून ७ स्थानमें हो तो शरीरमें दुःख, स्त्रियोंको अशुभ, हानि, देशका छूटना, शत्रुसे भय, अनीति उत्पन्न होती है ॥ ३३ ॥

मू०—परिजनपरिपीडारक्तपित्तप्रकोपो निजजनधनमाने स्वल्पतानल्पचिन्ता ॥ विकलतरशरीरन्दीनताऽधीरतास्यान्निधनसदनसंस्थेलोहिताङ्गेनराणाम् ॥ ३४ ॥

टी०—यदि भौम निधन ८ स्थानमें हो तो आत्मीय वर्गको दुःख, रक्तपित्तका जोर अपने जन, धन, और मानकी स्वल्पता, अतिचिन्ता, और शरीर अति दुःखित दीनता और धैर्यसे युक्त हो ॥ ३४ ॥

मू०—पापेरतिस्स्यात्कलहःस्वकीयैरुद्विग्नतावैभववैपरीत्यम् ॥ कान्तिक्षयश्चापिभवेन्नराणाम्भूनन्दनेधर्म्मनिकेतनस्थे ३५॥

टी०—यदि भूनन्दन (मंगल) धर्म्म ९ स्थानमें हो तो पापमें बुद्धि, स्वजनोंसे लडाई, चित्तमें उद्वेग, ऐश्वर्य्यहानि और दुःख होवे ॥ ३५ ॥

मू०—प्रसन्नताभूमिपतेश्चलाभोव्यापारसौभाग्यसुखानि नित्यम् ॥ आरोग्यतातीवपशुप्रवृद्धिर्धरात्मजेराज्यपदोपपन्ने ॥ ३६ ॥

टी०—यदि धरात्मज (मंगल) राज्य १० स्थानमें हो तो राजाकी कृपादृष्टि, व्यापारमें लाभ, सुन्दर सुख, आरोग्यता और पशुओंकी अधिक वृद्धि हो ॥ ३६ ॥

मू०—प्रतापतेजोविजयाभिवृद्धिश्शत्रुक्षयोभूमिपतेःप्रसादः ॥ नित्यंसुहृत्पुत्रकलत्रसौख्यं लाभालयेमङ्गलनामधेये ॥ ३७ ॥

टी०—यदि मंगल लाभ ११ स्थानमें हो तो प्रताप, तेज, विजयकी वृद्धि, शत्रुनाश, राजाकी प्रसन्नता और हमेशा पुत्र मित्र कलत्रोंको सुख हो ॥ ३७ ॥

मू०—धनक्षयस्स्यात्क्षितिपालभीतिर्दृग्दोषयोषाद्यसुखैर्विषादः ॥ वादस्सदामन्दजनेननूनम्भूनन्दनेप्रान्त्यनिकेतनस्थे ॥ ३८ ॥

टी०—यदि भूनन्दन (मंगल) प्रान्त्य १२ स्थानमें हो तो धनका नाश,

राजासे भय, नेत्रदोष, स्त्रीसे विषाद और रोज मूर्खोंसे लडाई हो ॥ ३८ ॥ इति भौमभावफलानि ॥

मू०-शरीरसौख्यंनृपतेःप्रसादम्बुद्धेःप्रवृद्धिन्द्रविणागमञ्च ॥ गाम्भीर्य्यवीर्य्योपचयम्प्रदत्तेमृगाङ्कसूनुस्तनुभावसंस्थः ३९

टी०-यदि मृगाङ्कसूनु (बुध) तनु १ स्थानमें हो तो शरीरसुख, राजाकी कृपा, बुद्धिकी वृद्धि, धनागम, गम्भीरता, वीर्य्यवृद्धि, पराक्रमयुक्त करता है ॥ ३९

मू०-स्वमित्रपुत्रोन्नतिनीतिवृद्धिर्द्रव्यागमोभूमिपतेःप्रसादः आरोग्यतातीवशरीरसौख्यं चेद्रौहिणेयोद्रविणाधिसंस्थः ॥ ४० ॥

टी०-यदि रौहिणेय (बुध) धन २ स्थानमें हो तो अपने मित्रों व पुत्रकी वृद्धि, नीतिकी वृद्धि, राजाकी प्रसन्नता, द्रव्यलाभ, आरोग्यता, बहुतशरीरसुख होय ॥ ४० ॥

मू०-लाभोप्यलाभश्चसुखञ्चदुःखंमित्रं त्वमित्रं समनुप्रयाति ॥ यथास्थितंस्यात्सकलन्तृतीयेद्विजाधिराजात्मजभावसंस्थे ॥ ४१ ॥

टी०-यदि बुध ३ स्थानमें हो तो हानि लाभ, सुख दुःख, शत्रु मित्र सब यथास्थित रहैं ॥ ४१ ॥

मू०-पृथ्वीपतेर्गौरवसम्प्रवृत्तिंधनागमम्मित्रसमागमञ्च ॥ कलत्रसौख्यं बहुधा विधत्तेकलानिधेस्सूनुरिलातलस्थः ४२

टी०-यदि बुध रसातल ४ स्थानमें हो तो राजासे मान, धनागम, मित्र पुत्रप्राप्ति स्त्रियोंको सुख देता है ॥ ४२ ॥

मू०-सुहृज्जनात्पुत्रकलत्रतश्च सुखानि भूपात्प्रभवेन्मनीषा ॥ भाग्यंनरेशाच्चयशश्चपुत्रे पुत्रोत्रनक्षत्रपतेर्यदिस्यात् ॥४३॥

टी०-यदि बुध पुत्र ५ स्थानमें हो तो पुत्रमित्रकलत्रोंसे सुख, राजासे मनो-

[illegible]

मू०-विपक्षपक्षप्रचयम्प्रमादं वादंनिजैः कान्तिपरिक्षय-
ञ्च ॥ शरीरपीडाञ्चजडांशुसूनुश्शत्रुस्थितस्संजनय-
त्यवश्यम् ॥ ४४ ॥

टी०-यदि जडांशुसूनु (बुध) शत्रु ६ स्थानमें हो तो शत्रुओंकी वृद्धि उन्माद, हमेशा आत्मवर्गमें कलह, कान्तिनाश शरीरमें रोग अवश्य होवे ॥ ४४॥

मू०-अतियुवतिविलासम्मार्गलाभंजनानांजनयतिधनसौ-
ख्यंसद्वणिक्कर्म्ममार्गात् ॥ प्रतिदिनमनुवृत्तिन्धर्म्मका-
र्य्येषुनूनम्मदनसदनसंस्थःशीतभानोस्तनूजः ॥ ४५ ॥

टी०-यदि मदनसदन ७ में बुध हो तो स्त्रीसुख, मार्ग चलना वाणिज्यसे धनवृद्धि, प्रतिदिन धर्म्मकार्य्योंमें मनुष्योंका मन लगै ॥ ४५ ॥

मू०-वैरिव्रातोन्मूलनम्भूमिपालात्सौख्यंहर्षोत्कर्षता
सन्मतित्वम् ॥ नित्यंशास्त्राभ्यासतोगौरवंस्या-
दायुस्थानेचन्द्रदेहोद्भवोयम् ॥ ४६ ॥

टी०-यदि चन्द्रदेहोद्भव (बुध) आयु ८ स्थानमें हो तो राजाकी तरफसे शत्रुनाश, सुख, हर्ष, उत्कर्ष, सद्बुद्धि, नित्य शास्त्राध्ययनसे गौरव होवे ॥४६॥

मू०-धर्म्मेबुद्धिःकार्य्यसिद्धौप्रलापश्चित्तोद्वेगःकामिनी-
वर्गपीडा ॥ दैन्यङ्कान्तिक्षीणताप्राणिनांस्याद्भाग्या-
गारेचेत्तुषारांशुजन्मा ॥ ४७ ॥

टी०-यदि तुषारांशुजन्मा (बुध) भाग्य ९ स्थानमें हो तो धर्म्ममें बुद्धि, कार्य्यसिद्धिमें विघ्न, चित्तमें उन्माद, स्त्रियोंको दुःख, दैन्य, दुर्बलता मनुष्य-को होवे ॥ ४७ ॥

मू०-द्रव्यप्राप्तिर्भूमिपालोद्यमाभ्यांसभ्यत्वंस्याद्देहसौ-
ख्यंस्वगेहात् ॥ कान्तिस्सारोयातिविस्तारमुच्चैः
कर्म्मस्थानेसोमसूनौप्रपन्ने ॥ ४८ ॥

टी०-यदि कर्म्मस्थान १०में सोमसुत (बुध) हो तो राजा और उद्यमोंसे यप्राप्ति, प्रतिष्ठा शरीरसुख, शोभाकी वृद्धि हो ॥ ४८ ॥

मू०-नित्यारोग्यंभाग्यवृद्धिस्सुबुद्धिः पृथ्वीपालाद्गौरवंसर्वथास्यात् ॥ स्वल्पायासैरुद्यमाद्द्रव्यलाभोलाभस्थानेसिंधुसूनोस्तनूजे ॥ ४९ ॥

टी०-यदि लाभ ११ स्थानमें बुध पडे तो शरीरका रोग नष्ट होवे, भाग्य वृद्धि हो, उत्तम बुद्धि हो, राजासे प्रतिष्ठा मिले और थोडेही उद्यममें अपना का सिद्ध होवे ॥ ४९ ॥

मू०-लाभस्त्वल्पोप्यल्पतास्याद्धनस्य क्षोणीपालात्साध्वसं दुर्व्ययश्च॥बुद्धेरान्ध्यंविग्रहःस्वीयवर्गेप्रान्त्यस्थानेबोधनेवर्त्तमाने ॥ ५० ॥

टी०-यदि बुध प्रान्त्य १२ स्थानमें हो तो थोडा लाभ, धनकी न्यून राजासे वैर, व्यर्थ व्यय, बुद्धिकी मन्दता और आत्मीयवर्गमें विरोध होवे ॥५०॥

इति बुधभावफलानि ॥ ॥ लावः

मू०-सौख्यम्पुत्रान्मित्रवर्गात्कलत्रादारोग्यंस्याच्छ्लाघ्यभाग्योदयश्च ॥ प्राप्तिर्भूपात्सन्मतिश्चाप्यवश्यंवागीशश्चेन्मूर्त्तिवर्त्तीतिचिन्त्यम् ॥ ५१ ॥

टी०-यदि वागीश मूर्ति १ स्थानमें हो तो पुत्र मित्र कलत्रसे सुख हो आरोग्य हो, भाग्यकी वृद्धि हो, राजासे लाभ होवे और उत्तम मति होवे ॥५१॥

मू०-अर्थप्राप्तिंसंयातिंमित्रवर्गे नानावस्तुग्राहकत्वन्नितान्तम् ॥ सद्भिस्संगम्पुष्टिमंगेप्रकुर्याद्वाचामीशः कोशसंस्थोयदिस्यात् ॥ ५२ ॥

टी०-यदि वागीश कोश २ स्थानमें हो तो अर्थप्राप्ति, मित्रवर्गसे संयो अनेक प्रकारकी वस्तुओंका क्रय, सत्सङ्ग और शरीरमें पुष्टि हो ॥ ५२ ॥

मू०-कार्यस्यासिद्धिःपरिसेवनेनसकष्टमिष्टोन्नतिरर्थलब्धिः ॥ सस्याम्बराणां महती च लब्धिर्नृपाद्भवेद्देवगुरौ सहोत्थे ॥५

टी०-यदि देवगुरु (बृहस्पति) तीसरे स्थानमें हों तो सेवासे कार्य

सिद्धि, कष्टसे अभीष्ट वस्तुकी उन्नति और धनका लाभ, तथा राजासे धान्य, वस्त्रका अधिक लाभ होवे ॥ ९३ ॥

कामिनीसुतसुखेन समेतो भूमिवाहनधनागमनाद्यैः ॥ राजमानविनयैस्सुखभावे देवदेवसचिवेमनुजस्स्यात् ९४॥

टी०—यदि सुख ४ भावमें वृहस्पति हो तो स्त्री पुत्र सुख प्राप्त होवे, भूमि, वाहन और धनका आगम होवे और राजासे प्रतिष्ठा प्राप्त हो ॥ ९४ ॥

मू०--सन्तानसौख्याप्तिमतिप्रकाशंसुखानि मित्रोन्नतिसंयुतानि ॥ सन्मंत्रविद्याभ्यसनानिकुर्यात्पुत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिसूनुः ॥ ९५ ॥

टी०—यदि चित्रशिखण्डिसूनु (गुरु) पुत्र ५ भावमें वर्त्तमान हो तो सन्तानसुख, बुद्धिवृद्धि, मित्रवृद्धि और मंत्र और विद्याभ्यासकी वृद्धि करे ॥९५॥

मू०--बलक्षयश्चापिविपक्षवृद्धिस्सा[illegible]विरोधोबहुधास्वकीयैः ॥ व्ययोतिचिन्ताप्रभवेन्नराणां चेद्गीष्यतिर्वैरिनिकेतनस्थः ॥ ९६ ॥

टी०—यदि गीष्पति (गुरु) वैरि ६ भावमें पड़े तो बलहानि, शत्रुवृद्धि, कुटुम्बविरोध, द्रव्यनाश और चित्तमें नानाप्रकारकी चिन्ता बनी रहे ॥ ९६ ॥

मू०--वणिग्विधानेनधनागमःस्यान्मार्गप्रसंगेनचमानवानाम् स्त्रीवर्गसौख्यंनृपतेश्चचित्रशिखण्डिसूनौमदनालयस्थे ९७

टी०—यदि वृहस्पति मदन ७ स्थानमें हो तो वाणिज्यसे धन प्राप्ति हो अथवा परदेश जानेसे और स्त्री तथा राजासे सुख हो ॥ ९७ ॥

मू०--मित्रैस्सार्द्धंवैमनस्याभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशोद्रव्यनाशः ॥ प्रवासः ॥ विश्लेषस्स्यात्स्वीयवर्गेणपुण्यंक्षीणंजीवेजीवितस्थानसंस्थे ॥ ९८ ॥

टी०—यदि जीव जीवित ८ स्थानमें हो तो मित्रोंके साथ विरोध, बुद्धिनाश, द्रव्यनाश, परदेशयात्रा, बन्धुवर्गमें विश्लेष और पुण्यनाश होवे ॥ ९८ ॥

मू०--बुद्धेर्विवृद्धिर्द्रविणोपलब्धिः कान्ताविलासोमनसः प्रसादः ॥ प्रवीणताचैवभवेच्च पुण्यं पुण्येनिषण्णेधिषणेप्रणीतम् ॥ ५९ ॥

टी०--यदि पुण्यस्थान ९ में बृहस्पति हों तो बुद्धिकी वृद्धि, द्रव्यप्राप्ति, स्त्री विलास, चित्तकी प्रसन्नतां, चातुर्य और पुण्यकी वृद्धि हो ॥ ५९ ॥

मू०--पृथ्वीपतेः प्रीतिरतीवकीर्त्तिर्मानोन्नतिर्नीतिमतिप्रवृद्धिः ॥ नित्योत्सवानन्दभरोनराणां राज्येसुरेज्येविजयोद्गमस्स्यात् ॥ ६० ॥

टी०--यदि सुरेज्य राज्य १० स्थानमें पडे तो राजाकी प्रसन्नता हो, कीर्त्ति बढै, मानकी उन्नति हो, नीति मतिकी वृद्धि हो और प्रतिदिन उत्साह अधिक हो और जय मिलै ॥ ६० ॥

मू०--आरोग्यतावैभववाहनानि कलत्रपुत्रादिसुखैर्युतानि॥ नानाधनाप्तिखलुलाभवर्त्तीबृहस्पतिर्यच्छति मानवानाम् ॥ ६१ ॥

टी०--यदि बृहस्पति लाभस्थान ११ में हो तो आरोग्यता, ऐश्वर्य और वाहनवृद्धि, पुत्रकलत्रादिसुख और अनेक प्रकारसे धनप्राप्ति होवे ॥ ६१ ॥

मू०--मित्रैर्वैरम्भूपतेर्भीतिरुग्रा दुःखंचिन्तानेकधार्थव्ययश्च ॥ नूनंस्थानभ्रंशतास्यान्नराणांवाचामीशेद्वादशस्थानसंस्थे६२

टी०--यदि बृहस्पति द्वादशस्थानमें हो तो मित्रोंसे वैर, राजासे भय, दुःख, अनेक प्रकारकी चिन्ता, व्यर्थ धनव्यय, स्थानभ्रंश होतेहैं ॥ ६२ ॥ इति गुरुभावफलानि ॥

मू०--अत्यर्थंस्यादर्थलाभः क्षितीशाद्वंशस्योच्चैस्सश्रयस्सौख्यलब्धिः ॥ हर्षोत्कर्षावेशपूर्वंसगर्वंदैत्यामात्येमूर्तिवर्त्तीयदीह ॥ ६३ ॥

टी०--यदि दैत्यामात्य (शुक्र) मूर्त्ति १ स्थानमें हो तो राजासे अधिक द्रव्यलाभ, वंशवृद्धि, सुखप्राप्ति, अधिक उत्सव और गर्ववृद्धि हो ॥ ६३ ॥

शुक्र:

मू०--सुहृद्विवृद्धिर्बहुधार्थलाभःशत्रुक्षयस्सत्वरमेवकार्यम् ॥ कान्तासुचित्तस्य भवेत्प्रवृत्तिर्दैत्यार्चितेवित्तगते नराणाम् ॥ ६४ ॥

टी०--यदि दैत्यार्चित (शुक्र) वित्त २ स्थानमें हो तो मित्रोंकी वृद्धि, बहुधा धनप्राप्ति, शत्रुनाश, शीघ्र कार्य्यसिद्धि और चित्तवृत्ति स्त्रियोंमें रहै ॥६४॥

मू०–द्रव्यव्ययोपद्रवमित्रवैरंसौख्याल्पतानल्पविकल्पाचिन्ता ॥ पराक्रमोमध्यमतः प्रकामंभृगोस्तनूजेऽनुजभावसंस्थे ॥ ६५ ॥

टी०–यदि शुक्र अनुज ३ स्थानमें हो तो द्रव्यका खर्च, उपद्रव, मित्रोंमें लडाई, थोडा सुख, अधिक चिन्ता और मध्यम पराक्रम हो ॥ ६५ ॥

मू०–आरोग्यंस्याद्वैभवम्भूमिपालान्मित्रक्षेत्रोद्यानसौख्यानिनूनम् ॥ नानामानैश्चाधियोगोपलब्धिर्दैत्याचार्य्ये तुर्य्यभावोपपन्ने ॥ ६६ ॥

टी०--यदि दैत्याचार्य्य (शुक्र) तुर्य्य ४ स्थानमें हो तो आरोग्यता, राजासे ऐश्वर्य्यप्राप्ति, मित्र, घर बगीचादिकोंका सुख और नानाप्रकारके मानसे योगकी वृद्धि ॥ ६६ ॥

मू०--कलत्रपुत्रोद्भवसौख्यविद्याविज्ञानकौशल्यमतिप्रवृद्धिः॥ विचित्रमन्त्रागमसङ्गमः स्याद्भृगोस्तनूजेतनुजेधिसंस्थे ६७

टी०--यदि शुक्र तनुज ५ स्थानमें हो तो पुत्र स्त्रियोंसे सुख, विद्या,विज्ञान, कौशल्यता, बुद्धिकी वृद्धि, अनेक मंत्र और शास्त्रमें अभ्यास होवे ॥ ६७ ॥

मू०--अनिलभीतिरनीतिमतिर्ध्रुवंरिपुचयोपिचयोऽपि धनस्यच ॥ गृहसुखन्नकदापिशरीरिणामुशनसि द्विषि सम्प्रविशत्यलम् ॥ ६८ ॥

टी०–यदि शुक्र षष्ठस्थानमें हो तो अग्निसे भय, अनीतिमें बुद्धि, शत्रुवृद्धि, धनवृद्धि और मनुष्योंको घरसे सुख कदापि न होवे ॥ ६८ ॥

मू०-कामिनीतनयहर्षतोभवेद्देश्मपुष्टिरतिलब्धिरुद्यमात्। मानवाहनधनानिभार्गवेपश्चमार्गणगृहाङ्गणस्थिते ६९॥

टीका-यदि शुक्र पंचमार्गण गृहाङ्गण ७ स्थानमें हो तो स्त्रीपुत्रके हर्षसे गृहपुष्टि, व्यापारसे लाभ, मान, सवारी, धनप्राप्ति हो ॥ ६९ ॥

मू०--अल्पारोग्यङ्कामिनीसूनुचिन्ता चित्तभ्रंशोरोषदोषप्रवासः ॥ शश्वत्कार्य्यस्याच्छरीरेनराणामायुर्भावे पूर्वदेवाधिदेवे ॥ ७० ॥

टी०-यदि पूर्वदेवाधिदेव (शुक्र) आयु ८ स्थानमें हो तो शरीरमें कुछ रोग हो, स्त्रीपुत्रकी चिन्ता, चित्तविकृति रहै, क्रोधयुक्त हो और कार्य्यमें वारम्वार चिन्ता हो ॥ ७० ॥

मू०-आरोग्याप्तिर्धर्मकर्म्माभिवृद्धिर्बुद्धिःशस्ताविस्तृता चोन्नतिस्स्यात् ॥ पुत्रान्मित्राच्चापिसन्तोषलब्धिः पुण्यस्थानेदानवैर्वन्द्यमाने ॥ ७१ ॥

टी०--यदि शुक्र धर्म्म ९ स्थानमें हो तो आरोग्यता, धर्म्मकर्म्मोंकी वृद्धि विमल बुद्धिकी वृद्धि और पुत्रमित्र सुखकी प्राप्ति हो ॥ ७१ ॥

मू०-भूमिभर्तुरपिगौरवलब्धिःशत्रुपक्षकपरिक्षययुक्ता ॥ कार्य्यसिद्धिरपिचिन्तितकालेराज्यभाजिदनुजव्रजपूज्ये ॥ ७२ ॥

टी०--यदि दनुजव्रजपूज्य (शुक्र) राज्य १० स्थानमें हो तो राजासे मान, शत्रुओंका नाश, समयपर कार्य्यसिद्धि होवे ॥ ७२ ॥

मू०-नीरसञ्चरणसद्द्रविणाप्तिर्विक्रयक्रयविधेरपिलाभः ॥ वैभवोन्नतिरतीवविलासोलाभवेश्मनिभृगुर्यदिसंस्थः॥७३॥

टी०--यदि भृगु (शुक्र) लाभ ११ स्थानमें हो तो समुद्रयानसे उत्तम धनप्राप्ति, क्रय विक्रयसे लाभ और ऐश्वर्य्यवृद्धि और अधिक सुख होय ॥ ७३ ॥

मू०-साधुमार्गविभवक्षयमुच्चैस्स्वीयवर्गकलहंकिलयाति ॥
स्वालयाच्चचलनेफलहानिर्देववैरिसचिवेन्तिमभावे ॥७४॥

टी०--यदि देववैरिसचिव (शुक्र) अन्तिम १२ स्थानमें हो तो अच्छे मार्गमें द्रव्यव्यय, स्वजनोंमें कलह और घरसे चलनेमें फलहानि होवे ॥ ७४ ॥

इति शुक्रभावफलानि ॥ प्रति

मू०-प्रजायतेवातकफप्रकोपैशिरस्थलोरःस्थलपीडनञ्च ॥
स्वकीयमित्रैःकलहोनराणाम्पुत्रास्त्रिमूर्त्तेर्यदिमूर्त्तिवर्त्ती७५॥

टी०--यदि त्रिमूर्त्ति (सूर्य) का पुत्र (शनि) मूर्ति १ स्थानमें हो तो वात, पित्त, कफके कोपसे मस्तक और छातीमें दर्द, स्वमित्रोंसे कलह ॥ ७५ ॥

मू०-वक्त्राक्षिपीडाप्रभवेन्नराणांधनव्ययोभूमिपतेर्भयञ्च ॥
चिन्ताप्रभूतारमणीसुतादेश्चेद्भानुसूनुर्धनधामसंस्थः ॥७६॥

टी०--यदि भानुसूनु (शनि) धन २ स्थानमें हो तो मुख और नेत्रमें पीडा, धनका खर्च, राजासे भय, स्त्रीपुत्रादिकोंकी अधिक चिन्ता हो ॥ ७६ ॥

मू०-समग्रचिन्ताविकलःखलुस्याद्वसुन्धरापालकमानसौ-ख्यम् ॥ धनस्यलाभोतितरान्नराणां भानोस्तनूजेसह-जाधिसंस्थे ॥ ७७ ॥

टी०-यदि भानुतनूज (शनि) सहज ३ स्थानमें हो तो संपूर्ण चिंता-ओंसे व्याकुलता राजासे मान, सुख, धनकी प्राप्ति अधिक होवे ॥ ७७ ॥

मू०-प्रवासचिन्ताद्रविणव्ययस्स्यात्कान्तातिचिन्ताकुल-चित्तवृत्तिः ॥ पक्षेजनन्याःपरिपीडनञ्चरसातलस्थेन-लिनीशसूनौ ॥ ७८ ॥

टी०-यदि नलिनीश सूनु (शनि) रसातल ४ स्थानमें हो तो परदेशकी चिन्ता, धनका खर्च, स्त्रीकी अधिक चिन्तासे चित्तको दुःख और माताको क्लेश हो ॥ ७८ ॥

मू०-कान्तासुहृत्सूनुजनेषुपीडा क्रोडप्रपीडापवनप्रको-

पात ॥ बुद्धिर्विरुद्धाधनसंक्षयस्स्याद्भानोस्तनूजेतनुजे-धिसंस्थे ॥ ७९ ॥

टी०-यदि भानुतनूज (शनि) तनुज ५ स्थानमें हो तो स्त्री, मित्र, पुत्रोंको पीडा, वातके कोपसे छातीमें दर्द, बुद्धि खराब और धनका नाश हो ॥ ७९ ॥

मू०-सामर्थ्यस्याद्भूमिभर्त्तुः प्रसादस्सद्भिस्सङ्गोवीर्य्यवृद्धिस्समृद्धिः ॥ जायापुत्रप्रीतिसम्प्राप्तिरत्रशत्रुक्षेत्रेमित्रपुत्रो यदिस्यात् ॥ ८० ॥

टी०-यदि मित्रपुत्र (शनि) शत्रु ६ स्थानमें हो तो सामर्थ्य हो, राजाकी कृपा, प्रतिष्ठित मनुष्योंका सङ्ग, पराक्रमकी अधिक वृद्धि और स्त्रीपुत्रमें प्रीति हो ॥ ८० ॥

मू०-मित्रकष्टमपिपुष्टिहीनता स्थानहानिधननाशनन्दिशेत् ॥ शत्रुभीतिमपिनीतिविच्युतिम्मीनकेतननिकेतनेशनौ ॥ ८१ ॥

टी०-यदि मीनकेतननिकेतन ७ स्थानमें शनि हो तो मित्रोंको कष्ट पुष्टिहीनता, स्थानका छूटना, धनका नाश, शत्रुसे भय और अनीति ये सब उत्पन्न होते हैं ॥ ८१ ॥

मू०-अनेकधाव्याधिसमुद्गमःस्याज्जायासुतानामपिवित्तनाशः ॥ मान्द्यञ्चबुद्धेर्व्यसनोपलब्धिः कामंयमश्चेद्यमधामसंस्थः ॥ ८२ ॥

टी०--यदि शनि यम स्थानमें हो तो अनेक प्रकारसे व्याधिका उदय, पुत्र, कलत्र, धनका नाश, बुद्धिमन्दता और दुःखकी प्राप्ति अधिक होवे ॥ ८२ ॥

मू०-धनविनाशनदेशभयान्वितंसुतहितप्रमदापरिपीडनम् ॥ मतिविपर्य्ययतांकुरुतेयमोनवमधामसमागममागतः ॥ ८३ ॥

टी०--यदि शनि नवम ९ स्थानमें हो तो धनका नाश, देशसे वियोग पुत्र, मित्र, स्त्रीको दुःख और बुद्धिमें वैपरीत्य हो ॥ ८३ ॥

मू०-पृथ्वीभर्तुर्भीतिरर्थच्युतिस्स्यात्स्वव्यापारेऽव्यग्रतास्थानहानिः ॥ दुःखंदैन्यंजायते मानवानांमानेभानोर्नंदने वर्त्तमाने ॥ ८४ ॥

टी०-यदि भानुनन्दन (शनि) मान १० स्थानमें हो तो राजासे भय, धननाश, व्यापारमें चिन्ता, स्थाननाश और दारिद्रय होवे ॥ ८४ ॥

मू०-योषातोषम्मानवेसद्विशेषादाशापूर्त्तिस्फूर्त्तिकीर्त्तिम्प्रसादम् ॥ शौर्य्यंवीर्य्यंश्चापिधैर्य्यम्प्रकुर्य्यात्प्राप्तौप्राप्तः सप्तसप्तिप्रसूतः ॥ ८५ ॥

टी०--यदि सप्तसप्तिप्रसूत (शनि) प्राप्ति ११ स्थानमें हो तो स्त्रियोंको विशेष सुख, कीर्त्ति दिगन्तव्यापिनी और सुख, शौर्य्य, वीर्य्य और धैर्य्यको बढाता है ॥ ८५ ॥

मू०-विलोचनक्रोडपदेषुपीडा दृढाभवेन्मित्रजनैर्विवादम् ॥ भीतिर्नृपाद्द्रव्यहतिर्नितान्तंव्ययालयेचेन्नलिनिशजन्मा ॥ ८६ ॥

टी०-यदि नलिनीशजन्मा (शनि) व्यय १२ स्थानमें हो तो नेत्र छाती, पैरमें पीडा, मित्रोंसे अधिक वैर, राजासे भय और अधिक द्रव्यनाश होवे ॥ ८६ ॥ इति शनिभावफलानि ॥

मू०-देहेपीडाजायतेवातजन्याचिन्तापत्तिर्वैभवंवैपरीत्यम् ॥ वादंकैश्चित्कामिनीसूनुचिन्तासिंहीसूनुश्चेत्तनुस्थानसंस्थः ॥ ८७ ॥

टी०-यदि सिंहीसूनु (राहु) तनु १ स्थानमें हो तो शरीरमें वातकृतपीडा उपजे, चिन्ता हो, अनादर होवे, तुच्छ लोगोंसे विवाद हो, स्त्री और पुत्रविषयिणी चिन्ता होवे ॥ ८७ ॥

मू०-वदनलोचनपीडनकंतथा कथमपिप्रकरोतिधनीचतः॥ द्रविणलाभमतुत्सवमद्भुतंद्रविणधामसमागमकृत्तमः॥८८॥

टी०-यदि द्रविणस्थानमें राहु हो तो मुख और नेत्रमें पीडा, किसी न किसी प्रकारसे नीचद्वारा धनप्राप्ति, चित्तमें खेद बारम्बार होवे ॥ ८८ ॥

मू०-सम्यक्सुखं भूमिपतेर्नितान्तं समुन्नतिः कायसुखानि नित्यम् ॥ सुहृत्समाजोपचयोजयस्स्यात्सिंहीतनूजेनुजधामसंस्थे ॥ ८९ ॥

टी०-यदि सिंहीसुत (राहु) अनुज ३ स्थानमें हो तो सम्पत्तिका सुख राजद्वारा हो, ऐश्वर्यवृद्धि हो, शरीरको सुख हो, बन्धुवर्गोंकी वृद्धि हो और जयप्राप्ति हो ॥ ८९ ॥

मू०-चिन्तादुःखंवाग्विवादःस्वकीयैर्नूनं पानंवाहनादिक्षयश्च ॥ कार्श्यंशश्वज्जायतेमानवानान्तुर्यस्थानेनन्दनेसिंहिकायाः ॥ ९० ॥

टी०-यदि राहु चतुर्थस्थानमें हो तो चिन्ता, दुःख, वाग्विवाद, वाहननाश और शरीरमें दुःखसे दुर्बलता प्राप्त होवे ॥ ९० ॥

मू०-बुद्धेर्मान्द्यन्निन्द्यताद्वेषिवादं गाढाम्पीडांक्रोडदेशेविशेषात ॥ पुत्रात्सौख्यंयच्छतिमात्तिवर्जंसिंहीसूनुर्नन्दनस्थानसंस्थः ॥ ९१ ॥

टी०-यदि राहु नन्दन ५ स्थानमें हो तो बुद्धिकी मन्दता, निन्दा, द्वेष, विवाद, वक्षस्थलमें अत्यन्त पीडा, पुत्रसे सुख और प्राप्तिकी न्यूनता हो ॥ ९१ ॥

मू०-आरोग्यंस्याद्राजभाग्यवृद्धिर्नरेशाद्वैरिध्वंसोमानसोत्पन्नसौख्यम् ॥ जायापुत्रैःप्रीतिमत्यन्तमब्देशत्रुक्षेत्रे पुत्रकसिंहिकायाः ॥ ९२ ॥

टी०-यदि राहु शत्रुक्षेत्र ६ में पडे तो आरोग्य, राजद्वारा भाग्यवृद्धि, शत्रुनाश, चित्तकी प्रसन्नता और स्त्री और पुत्रसे अत्यन्त प्रीति होवे ॥ ९२ ॥

मू०-स्थानात्स्थानंयानमंगेतिकार्श्यं कान्ताचिन्ताचंचलाचित्तवृत्तिः ॥ कट्यांबस्तौवातसंजातबाधास्वर्भानुश्चेत्कामिनीस्थानसंस्थः ॥ ९३ ॥

टी०-यदि स्वर्भानु (राहु) कामिनी ७ स्थानमें हो तो देशविदेशाटन, शरीरमें दौर्बल्य, स्त्रीकी चिन्ता, चित्तमें चंचलता, कटि और बस्तिमें (पेडूमें) पीडा ये सब वातके कोपसे होवे ॥ ९३ ॥

मू०-जायाक्लेशोबांधवाविद्विषस्स्युर्द्रव्यावाप्तिःस्यात्क्षिते-
श्चप्रवासः ॥ कान्तिर्हीनामानवानांहिवर्षेसिंहीसूनुर्नै-
धनस्थानवर्त्ती ॥ ९४ ॥

टी०-यदि राहु निधन ८ स्थानमें हो तो स्त्रीको क्लेश हो, भाई लोग शत्रुता करें, द्रव्यप्राप्ति और नाश हो, परदेश जाना पडे और प्रतापका नाश होवे ॥ ९४ ॥

मू०-पीडनंहिवपुषोपिचरोषो योषयासहकृशत्त्वविशेषः ॥ पुण्यकर्मणिनृणामणुबुद्धिर्धर्मधामसमवर्त्ति-तमश्चेत ॥ ९५ ॥

टी०-यदि धर्मस्थान ९ में राहु हो तो शरीरमें पीडा, स्त्रीसे विरोध, दुर्बलता और पुण्यकर्म्ममें बुद्धि न्यून हो ॥ ९५ ॥

मू०-अवनिनायकतोभयमद्भुतान्निजजनैस्सहदेहनिपीडनम् ॥
धनविनाशनमाश्विशतेभृशंवततमोदशमोदयसंस्थितः ९६॥

टी०-यदि राहु दशम १० भावमें स्थित हो तो राजभय, आत्मीय जनोंसे शरीरपीडा और वारंवार धननाशहो ॥ ९६ ॥

मू०-आरोग्यतावैभवबुद्धिवृद्धिर्नीचाज्जनाच्चापिभवेदवाप्तिः ॥
सुखानिनित्यंखलुकामिनीनांसिंहीसुतेलाभगतेनिता-
न्तम् ॥ ९७ ॥

टी०-यदि राहु लाभ ११ स्थानमें हो तो आरोग्यता वैभव, और बुद्धिकी वृद्धि हो, नीचजनसे लाभहो और स्त्रीसुख होवे ॥ ९७ ॥

मू०-धनव्ययस्स्वीयजनेषुपीडारिपूदयोभूपभयोपलब्धिः ॥
कान्तातिचिन्ताकुलचित्तवृत्तिर्व्ययेधिवासस्तमसोयदि
स्यात ॥ ९८ ॥

टी०-यदि राहु व्यय १२ स्थानमें हो तो धनका नाश, बन्धुवर्गमें पीडा, शत्रुओंकी वृद्धि, राजासे भयप्राप्ति और स्त्रीविषयिणी चिन्ता बहुत रहै ॥ ९८ ॥

मू०-खेचारिणांभावफलानियानितानीहकल्प्यानिदशासु तेषाम् ॥ राहोश्चयद्भावफलन्निरुक्तंशनेर्दशायांखलुतत्प्रकल्प्यम् ॥ ९९॥

टी०-यह जो ग्रहोंका भावफल कहागया सो उन उन ग्रहोंकी दशामें कहना और राहुका जो भावफल है सो शनिकी दशामें जानना ॥ ९९ ॥

मू०-लाभेलाभेशश्शुभैर्दृष्टयुक्तस्स्वोच्चस्थश्चेद्दूरसंस्थश्चसूर्यात् मातङ्गाश्वावाप्तिमुर्वीविभूषायोषाहर्षोत्कर्षयुक्तंकरोति १०

टीका-यदि लाभेश लाभ ११ स्थानमें हो और शुभग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्टहो और उच्चक हो और सूर्यसे दूरहो अर्थात् अस्त न हो तो घोडा, हाथी, पृथ्वी, भूषण, स्त्री और सुखादिकी प्राप्ति हो ॥ १०० ॥

इति ग्रहभावफलाध्यायः पंचमः ॥ ५ ॥

मू०-दैत्येज्यामरपूजितौहतरुचौनीचेथचेच्चन्द्रमानानारोगभयंवियोगबहुलंस्याद्वर्षकालेनृणाम् ॥ आयुःस्थानपतिस्तनौतनुपतिःसंस्थोयदानैधनेनन्वेतौखलखेचरेक्षितयुतौ शस्त्रेणमृत्युमदौ ॥ १ ॥

टी०-यदि वर्षमें शुक्र व गुरु निर्बलहों, चन्द्रमा नीचका हो तो नाना प्रकारके रोगोंका भय हो और वियोग हो और यदि आयुस्थान ८ का स्वामी तनुमें हो और लग्नस्वामी निधन ८ स्थानमें हो और पापग्रहकी दृष्टिमें हों अथवा युक्त हों तो शस्त्रसे मृत्यु जानना ॥ १ ॥

मू०-दिनकरकरलुप्तौजन्मलग्नेन्थिहेशौदिनपतियुतदृष्टौरिष्टदौतौभवेताम् ॥ जननसमयलग्नादष्टमंवर्षलग्नंयुतमथमुथहेशेनेक्षितंरिष्टहेतुः ॥ २ ॥

टी०-यदि लग्नेश और मुंथेश सूर्यके कारणसे अस्तहों या सूर्यकी दृष्टिमें हों तो अरिष्टकारक होते हैं और यदि जन्मलग्न वर्षमें अष्टम पडे और मुंथेशसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें हो तोभी अरिष्ट अधिक जानना ॥ २ ॥

मू०-निधनतनुमदारिप्रान्त्यगश्शीतरश्मिर्नहिगुरुयुतदृष्टोरिष्टकृत्सम्प्रदिष्टः॥ यदिकुजयुतदृष्टःकष्टदोवह्निशस्त्रैर्दिनकरतनयेनात्यन्तवातप्रकोपः ॥ ३ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा निधन ८ तनु १ मद ७ अरि ६ प्रान्त्य १२ स्थानोंमें वर्त्तमान हो और बृहस्पतिसे युक्त अथवा दृष्ट न हो तो आरिष्ट समझना और यदि मंगलसे युक्त हा अथवा उनकी दृष्टिमें हो तो वह्नि या शस्त्रसे दुःख मिले और यदि शनिसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो वातपीडा होवे ॥ ३ ॥

मू०-क्ष्माजुतेक्षितयुतस्तनुभर्त्तास्यान्मृतिस्थितिकरोमृतिकर्त्ता ॥ सूर्यलुप्तकिरणोधिषणज्ञोशस्त्रपीडनकरौहिनराणाम् ॥ ४ ॥

टी०-यदि मंगलसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें रहकर लग्नस्वामी अष्टम स्थानमें हो तो मृत्युयोग जानना और यदि सूर्यके कारण अस्त होकर बृहस्पति या बुध अष्टम होवे तो शस्त्रसे पीडा होवे ॥ ४ ॥

मू०-होराक्रूराभ्यन्तरेसान्तरायंकुर्यादारागारमप्येवमत्र ॥ रिष्फारिस्थैरर्थरन्ध्रोपगैर्वापापैरिष्टंश्रेष्ठधीभिःप्रदिष्टम्५॥

टी०-यदि क्रूरग्रहोंके मध्यमें होरा होय तो गृह और स्त्रीविषयक विघ्न हो और यदि पापग्रह रिष्फ १२ अरि ६ अर्थ २ रन्ध्रस्थानमें हो तोभी आरिष्ट समझना ॥ ५ ॥

मू०-चेदिन्थिहापापयुताषडष्टव्ययोपगाहेतिहुताशभीतिम् ॥ करोतिवर्षेरविनन्दनेनयुतेक्षितावापवनप्रकोपम् ॥ ६ ॥

टी०-यदि मुन्था पापग्रहसे युक्त होकर षष्ठ ६ अष्टम ८ और व्यय १२ स्थानमें हो तो शस्त्र और वह्निसे भय हो और यदि शनिके साथमें हो तो उस वर्षमें वायुकृत रोग अवश्य होय ॥ ६ ॥

मू०-मदननिधनबन्धुप्रान्त्यशत्रुस्थितावाजननसमयलग्नादिन्थिहाब्देष्टमस्था ॥ खलगगनतलस्थैर्युक्तदृष्टातिरिष्टंजनयतिशुभदृष्टोत्पन्नारिष्टाल्पतास्यात् ॥ ७ ॥

५

टी०—यदि मुन्था मदन ७ निधन ८ बन्धु ४ प्रान्त्य १२ शत्रु ६ वा जन्मलग्नसे अष्टम हो और क्रूरग्रहोंकी दृष्टिमें युक्त होय तौ बहुत अरिष्ट करै और यदि शुभग्रहोंसे युक्त हो तो न्यून अरिष्ट समझना ॥ ७ ॥

मू०—कामिनीभवनगस्तुहिनांशुर्लग्नपोमृतिपतिर्यदिसंस्थः ॥
द्वादशोद्विषितथायुधिरिष्टंस्यान्मृतौचतनुपोमुथहेशः ॥८॥

टी०—यदि कामिनी ७ स्थानमें चन्द्रमा हो और यदि लग्नस्वामी और अष्टम स्वामी मृत्यु ८ द्वादश १२ या षष्ठस्थानमें हो या लग्नपति और मुथहेश अष्टम हो तो युद्धमें अरिष्ट जानना ॥ ८ ॥

मू०—लग्नेश्वरोवामुथहेश्वरोवारन्ध्रेश्वरोगौरकरात्तनोर्वा ॥
षष्ठाष्टमान्त्योपगतःकरोतिरिष्टम्पुराणैर्गणकैःप्रदिष्टम् ९॥

टी०—लग्नेश्वर वा मुथहेश्वर वा अष्टमेश्वर लग्नसे अथवा चन्द्रमासे षष्ठ ६ अष्टम ८ वा द्वादश १२ हो तो महारिष्ट करै ऐसा प्राचीन गणकोंने कहा है ९॥

इति श्रीताजिकभूषणेरिष्टाध्यायष्षष्ठः ॥ ६ ॥

मू०—केन्द्रत्रिकोणोपगताश्शुभाख्यास्सलग्ननाथानिधनंनि-
हन्युः ॥ केन्द्रेसुरेंद्रस्यगुरुर्बलीयानमङ्गलम्मङ्गलमा-
तनोति ॥ १ ॥

टी०—यदि लग्नस्वामी और शुभग्रह केन्द्र १, ४, ७, १०, में हों अथवा त्रिकोण ९-५ स्थानमें हों तो अशुभका नाश करते हैं और बली बृहस्पति केन्द्र हो तो अमंगलको भी मंगल करता है ॥ १ ॥

मू०—होरायाश्चनिशाकराद्दिविचरः क्रूरस्त्रिलाभारिगोनूनं-
पापमपाकरोति बहुलंवालग्नपालीबली ॥ सौम्यैस्स-
म्मिलितः करोतिदलनंरिष्टस्य दृष्टस्तथासौम्यैर्जन्म-
निदेवदेवसचिवोवाभार्गवः केन्द्रगः ॥ २ ॥

टी०—यदि लग्नसे अथवा चन्द्रसे क्रूरग्रह त्रि ३ लाभ ११ अरि ६ स्थानमें वर्त्तमान हो तो अरिष्टका नाश अथवा लग्नस्वामी बली हो तोभी अथवा सौम्यग्रहोंकी दृष्टिमें हो वा उनसे युक्तहो अथवा जन्ममें यदि गुरु या शुक्र केन्द्र १-४-७-१० वर्त्ती हो तोभी यही फल जानना ॥ २ ॥

मू०-विलग्नपेसौम्ययुतेक्षितेताद्विलीयतेयत्खलुदिष्टमुक्तम् ॥
बलोपपन्नेनतनुस्थितेन निह्नूयतेवाक्पतिनापिरिष्टम् ॥३॥

टी०-यदि लग्नस्वामी सौम्येक्षित वा सौम्ययुत हो तो अरिष्टनाश जानना और लग्नस्थित बली गुरुकाभी यही फल है ॥ ३ ॥ इति सप्तमः ॥ ७ ॥

मू०-वर्षप्रवेशेवचसामधीशे लग्नेविलग्नेजनिलग्ननाथः ॥
पराक्रमायाम्बुगतःकरोतिक्षतिंरिपूणांद्रविणोपलब्धिम् ॥१॥

टी०-यदि वर्षप्रवेशकालमें गुरु वा जन्म लग्नस्वामी लग्नमें वा पराक्रम ३ आय ११ अम्बु ४ स्थानमें हो तो शत्रुनाश और द्रव्य प्राप्ति होवे ॥ १ ॥

मू०-सुखेसुखेशश्शुभदृष्टयुक्तःप्रकृष्टसौख्यंवनितासुतेभ्यः ॥
पुण्येश्वरोवाद्रविणेश्वरोवा विलग्नभाजो वसुवाजिलब्धिः ॥ २ ॥

टी०-यदि सुखेश सुख ४ स्थानमें हो और शुभग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो वनिता पुत्र द्वारा सुखप्राप्ति हो, और यदि पुण्येश्वर वा द्रविणेश्वर लग्नमें हो तो द्रव्य और यानप्राप्ति हो ॥ २ ॥

मू०-मदनसदनभर्त्तामूर्त्तिवर्त्तीप्रसूतिंजनयतिगुरुदृष्टचादिष्टवैशिष्टहृष्टैः ॥ कुजरविरविजाश्चेन्मूथशीलंविदध्युर्बुधभृगुसुरपूज्यैराज्यलब्ध्यैभवन्ति ॥ ३ ॥

टी०-यदि सप्तमस्थानस्वामी लग्नमें हो तो पुत्रयोग जानना और यदि गुरुकी दृष्टिभी हो तोभी वही फल कहना और भाग्यकी वृद्धि जानना और यदि मंगल, सूर्य, शनि ये क्रमसे बुध, शुक्र, और गुरुके साथ इत्थशाल करैं तो राज्यलाभयोग जानना ॥ ३ ॥

मू०-चतुष्टयेवातनयेचधर्मेसौम्यास्त्रिषष्ठायगताश्चपापाः ॥
कुर्वन्तिलक्ष्मीमणिवारणाश्वैः पूर्णसुवर्णाम्बरभूषणैश्च ॥४॥

टी०-यदि चतुष्टय अर्थात् केन्द्र १, ४, ७, १० में अथवा तनय ५, धर्म ९ स्थानमें सौम्यग्रह होवें और ३, ६, और ११ पापग्रह होवें तो द्रव्य, मणि, हाथी, घोडे, सुवर्णादि प्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

मू०-दिनकरकरदूरेसंस्थितौमन्दशुक्रौनिजभवनगतौ-वास्वीयतुंगाधिरूढौ ॥ दृढतरबहुसम्यक्कारिणौतौभवेतांयवनजनसकाशात्कल्पनीयं विशेषात् ॥ ५ ॥

टी०--यदि शनि और शुक्र अस्त न होके अपने स्थानमें हों अथवा उच्चमें हो तो म्लेच्छद्वारा विशेषप्राप्ति जानना ॥ ५ ॥

मू०--पराक्रमारातिभवालयस्थाः खलाश्चसर्वेसकलाश्च सौम्याः ॥ केन्द्रेषुकुर्वंतिसदालयन्तेपद्मालयामालिसुदीर्घकालम् ॥ ६ ॥

टी०--यदि पराक्रम ३, अराति ६, भव ११, स्थानमें सब खलग्रह हों और केन्द्र १, ४, ७, १० में सब शुभग्रह होवें तो लक्ष्मीप्राप्ति अधिक जानना ॥ ६ ॥ इति राजयोगः ॥

मू०--नीचस्थिताश्चास्तमिताश्चपापानृपालयोगन्दलयन्त्यलन्ते ॥ खलाःकुवर्गेविबलाश्चसौम्याःकृतार्गलास्युर्नरपालयोगाः ॥ १ ॥

टी०--यदि क्रूरग्रह नीचस्थित और अस्त हों तो राजयोगको नष्ट करें और यदि खलग्रह नीच हों और सौम्यग्रह निर्बल हों तोभी राजयोगभंग जानना ॥ १ ॥

सहमानि

अथसहमानि ।

मू०-दिवार्कहीनश्शशभृत्सलग्नंपुण्यम्भवेन्नक्तमिदंविलोमात् ॥ दिवार्कहीनोरविजस्सलग्नोराज्यंरजन्यांविपरीतमुक्तम् ॥ १ ॥

टी०-यदि वर्षप्रवेश दिनमें हो तो स्पष्ट चन्द्रमें स्पष्ट सूर्य्य निकाले और लग्नमें जोडे जो अंक आवें वही पुण्यसहम होगा. यदि रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो इसके विपरीत जानना अर्थात् स्पष्ट सूर्यमें स्पष्ट चन्द्र निकालना; आगे २ विलोम शब्दका यही अर्थ समझना. यदि दिनमें वर्षप्रवेश हो तो स्पष्टशनिमें स्पष्ट सूर्य निकाले और लग्नजोडेतो राज्यसहम होता है और रात्रिको इसके विपरीत क्रिया करना ॥ १ ॥

मू०-गुरुर्दिवासूर्यसुताद्विलोमंनिश्यंगयुग्जीवितमामनन्ति ॥ सदाविधूनंनिधनं:समन्दंस्यान्मृत्युसंज्ञंसहमन्तदेव ॥ २ ॥

टी०-दिवा, वर्षप्रवेशमें बृहस्पतिको शनिमें घटावे और रात्रिमें इसके विपरीत करै और जन्मलग्न जोडे तो जीवितसहम होगा और रात्रिदिनमेंभी स्पष्ट चन्द्र अष्टमभावमें घटावे और स्पष्ट शनि जोडे तो मृत्युसहम होगा ॥ २ ॥

मू०-इन्दुर्दिवोनःकविनासलग्नोऽयस्तंरजन्यांसहमंजनन्याः॥ शनैश्चरोदेवगुरोर्विशोध्यस्सदासलग्नस्सहजाभिधानम् ३॥

टी०-दिनमें चन्द्रमामें शुक्रको घटावे और लग्न जोडै तो मातृसहम होगा पर रात्रिको इसकी उलटी क्रिया करना ॥ रात्रि दिन दोनों समयोंमें भी बृहस्पतिमें शनिके घटानेसे और लग्न जोडनेसे भ्रातृसहम होताहै ॥ ३ ॥

मू०-शनिर्दिनेशाच्च सदा विशोध्योलग्नान्वितस्तज्जनकाभिधानम् ॥ सदागुरोश्शीतकरोविशोध्यस्सलग्नकस्तत्सहमंसुताख्यम् ॥ ४ ॥

टी०--दिनरात्रि दोनों समयोंमेंभी सूर्यमें शनिको घटायके लग्न जोडनेसे पितृसहम होता है ॥ और बृहस्पतिमें चन्द्रके घटा देने और लग्न जोडनेसे पुत्र सहम होता है ॥ ४ ॥

मू०-पुण्यंदिवेज्योनितमत्ररात्रौव्यस्तंसलग्नंचयशोभिधानम ॥ पुण्योनितःक्षोणिसुतस्सलग्नो दिवाविलोमात्रिशिविक्रमाख्यम ॥ ५ ॥ ५कर

टी०-दिवा वर्षप्रवेशमें पुण्य ९ को बृहस्पतिसे ऊनितकरै और लग्नजोडे और रात्रिको इसके विपरीत करै तो यशसहम होता है और मंगलमें पुण्यको ऊनित करै लग्नजोडे तो बलसहम होता है; रात्रिमें इसका उलटा समझना ॥५॥

मू०-चन्द्रोनितोर्कोदिवसेसलग्नो विद्याभिधानंनिशिवैपरीत्यात ॥ चन्द्रोनजीवोदिवसेर्कयुक्तो रात्रौविलोमं खलुगौरवाख्यम् ॥ ६ ॥

टी०-दिवा वर्षप्रवेशमें सूर्यमें चन्द्रको घटा देवे और लग्न जोडे तो विद्यासहम होताहै और रात्रिमें इसके विपरीत प्रक्रिया करना ॥ और चन्द्रको बृहस्पतिमें ऊन करिकै सूर्यमें जोडे रात्रिको इसके विपरीत क्रिया करे तो गौरवसहम होय ॥ ६ ॥

मू०-बुधेनभौमोदिवसेसलग्नोव्यस्तंचरात्रौखलुकर्मसंज्ञम् ॥
पुण्यात्सदापुण्यपतिर्विशोध्यस्साङ्गश्चदेशान्तरसंज्ञमुक्तम् ७

टी०-दिवा वर्षप्रवेशमें मंगलमें बुधको ऊनित करै और लग्न जोडे रात्रिको विपरीत क्रिया करनेसे कर्मसहम होताहै और सर्वकालमें पुण्यसहमाधीशको पुण्यसे ऊनित करै तो परदेश सहम होताहै ॥ ७ ॥

मू०-सदाधनेशोधनतोविशोध्योलग्नान्वितः स्यात्सहमं धनाख्यम् ॥ दिवानिशंलग्नपतिर्विशोध्योलाभात्सलग्नःखलुलाभसंज्ञम् ॥ ८ ॥

टी०-किसी समय वर्षप्रवेश चाहे हो तो यदि धनेशको धनसे ऊनित करै और लग्न जोडे तो धनसहम होताहै और लग्नपतिको लग्नमें ऊनित करै और लग्न जोडे तो लाभसहम होवे ॥ ८ ॥

मू०-दिनेदिनेशश्शनिनातथैवनक्तंनिशेंद्रोनविशोधनीयः ॥
मार्त्तण्डराशीश्वरसंयुतस्तत्कार्यस्यसिद्धेस्सहमंवदान्ति॥९॥

टी०-दिवा वर्षप्रवेशमें सूर्यमें शनि निकाल देवे और रात्रिमें चन्द्र निकालकर सूर्यराशिपति जोडे तो कार्यसिद्धि सहम होगा ॥ ९ ॥

मू०-सदामदेशोनकविः कलत्रभावान्वितःस्त्रीसहमन्निरुक्तम् ॥ सदामहीजश्शशिजेविशोध्योव्यापारसंज्ञंसहमंसलग्नम् ॥ १० ॥

टी०-दिन वा रात्रिको वर्षप्रवेशमें स्त्रीभावेशको शुक्रमें ऊनित करके कलत्रभाव जोडे तो कलत्रसहम होगा और मंगलको बुधमें ऊनित करै और लग्न जोडे तो व्यापारसहम होगा ॥ १० ॥

मू०-सौम्यैर्वाबलिभिर्निजाधिपतिनायुक्तेक्षितंहायने वृद्धिस्तत्सहमस्यतत्पतिरथोलग्नाधिराजेनवा ॥ वर्षेशेन

समंयदामुथशिलं कुर्यात्तदाप्तिस्तदालुप्तेसत्त्वविवर्जिते खलयुतेस्यात्तस्यहानिर्ध्रुवम् ॥ ११ ॥

टी०--यदि वर्षमें कोई सहम बली सौम्य ग्रहोंसे अथवा अपने स्वामीसे युक्त या दृष्ट हो तो उस सहमकी वृद्धि हो और यदि किसी सहमका स्वामी वर्षेशसे इत्थशाल करै तो उसकी अवश्य प्राप्ति समझना और यदि सहम लुप्त, निर्बल और खलग्रहोंसे युक्त हो तो उसकी हानि होवे ॥ ११ ॥ इति सहमाध्यायः ।

अथ मिश्रकाध्यायः ।

मू०-अस्तंगतःपापयुतेक्षितश्च नीचस्थितो नाधिकृतो जितश्च ॥ नष्टस्सखेटः खलुसम्प्रदिष्टोनिष्टप्रदोसौ निजपाककाले ॥ १ ॥

टी०-यदि कोई ग्रह अस्त हो, पापयुत, पापेक्षित, नीचस्थित, अनधिकारी वा जित हो तो उस ग्रहको नष्ट समझना और वह अपनी दशामें दुःखदायक होता है ॥ १ ॥

मू०-भावोबलिष्ठश्शुभखेटदृष्टोनिजेश्वरेणापिचदुष्टदृष्टः ॥ सदुष्टवीर्य्यश्शुभपापदृष्टोमिश्रोस्यवृद्धिर्हिबलानुमानात् २॥

टी०--यदि भाव शुभग्रहसे अवलोकित हो तो बली होता है और चाहे अपने स्वामीहीसे क्यों न दृष्ट हो पर यदि स्वामी दुर्दृष्टि है तो भावभी दुष्ट हुवा और यदि शुभ और पाप दोनोंकी दृष्टि हो तो मिश्र कहना इसकी वृद्धि बलानुमानसे जानना ॥ २ ॥

मू०-बृहस्पतिर्मूर्तितृतीयवर्ती प्रसूतिलग्नाधिपतिश्चतुर्थः ॥ भवेत्समर्थोरिपुनाशनार्थमत्यर्थमर्थोपचयं करोति ॥ ३

टी०--यदि बृहस्पति लग्न वा तीसरे स्थानपर हो और प्रसूतिलग्नस्वामी चतुर्थ होवे तो शत्रुनाश और पूर्णरीतिपर धन वृद्धि हो ॥ ३ ॥

मू०-लग्नाधिराजोस्तिविलग्नराजो बृहस्पतिर्मूर्तिगतोय-दिस्यात् ॥ पापेक्षितो नैवयुतः करोतिक्षितीश्वरेभ्यो बहुधाधनाप्तिम ॥ ४ ॥

टी०–यदि लग्नाधिराज बृहस्पति लग्नमें होवे परन्तु पापेक्षित न हो तो राजद्वारा अधिक धनप्राप्ति कहना ॥ ४ ॥

मू०–धनपतिर्वितनोति धनस्थितो धनमनूनमिहेज्यसमन्वितः ॥ तनुजभावगतस्तनुजेश्वरस्तनुजतोऽनुजतोपि सुखप्रदः ॥ ५ ॥

टी०–यदि धनस्थानकास्वामी अपने स्थानमें हो और बृहस्पतिके साथ हो तो धनवृद्धि हो और यदि तनुज ५ भावका स्वामी अपने स्थानमें हो तो भ्रातृपुत्रादिकसे सुख हो ॥ ५ ॥

मू०–दिनकृतापहतौगुरुभार्गवौहिमरुचिर्यदिनीचपदेतदा॥ तनुभृतांहिसदाविपदं करोत्यतिशयेनतनौनिधनप्रदः६॥

टी०--यदि सूर्यदृष्टिके कारण गुरु वा शुक्र अस्त हो और चन्द्रमा नीच हो तो उस वर्ष मनुष्यको विपत्ति हो, विशेष करके यदि नीच चन्द्रमा लग्नमें हो तो मरणतुल्य कष्ट हो ॥ ६ ॥

मू०–तनुपतिर्निधनेयदि संस्थितोवनिसुतेनयुतोथनिरीक्षितः ॥ बहुतरैः कफपित्तमरुद्भवैरभिभवंकुरुतेथधनक्षयम् ॥ ७ ॥

टी०--यदि लग्नस्वामी निधन ८ स्थानमें हो और मंगलसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो शरीरमें कफ, पित्त और वातकृत पीडा हो और धन नष्ट होवे ॥ ७ ॥

मू०--मदपतिर्बलवान्मदनालयेखलखगर्नचवीक्षितसंयुतः ॥ वितनुतेनुदिनन्ननु कामिनीजनसुखानुभवंविभवन्तथा ८॥

टी०--यदि मदस्थान ७ पति बली, और खलग्रहोंकी दृष्टि और योगसे रहित होकर पडे तो प्रतिदिन स्त्री सुख और द्रव्य सुखकी वृद्धि हो ॥ ८ ॥

मू०–क्रूरखेचरयुतेक्षितातनुस्साधुखेचरयुतानचेक्षिता ॥ निंद्यभक्षणयुतंनरं करोत्याकुलं खलजनानुवादनात ॥९ ॥

टी०--यदि लग्न क्रूरग्रहसे दृष्ट अथवा युक्त हो और न तो साधु ग्रहकी दृष्टिमें हो न युक्त हो तो मनुष्य निंद्य भक्षण करनेवाला हो और मनुष्योंके अपवादसे दुःखी हो ॥ ९ ॥

मू०-योषाधीशश्चेद्विनष्टो मनुष्यंवेश्याहर्षोत्कर्षयुक्तं करोति ॥
अस्तंयातस्संय्युतः पापखेटैर्जातिभ्रंशं धर्मनाथोवि-
दध्यात् ॥ १० ॥

टी०--यदि योषाधीश अर्थात् सप्तमस्थानपति नष्टबल हो तो मनुष्य वेश्या-प्रसंगी होवे और यदि धर्म ९ स्थानपति अस्त वा पापयुक्त हो तो जातिभ्रंश जानना ॥ १० ॥

रंध्रारातिप्रान्त्ययातेव्दनाथे वर्षेसर्वेहीनवीर्येसकष्टम् ॥
वर्षाधीशेसद्ग्रहेकेन्द्रकोणप्राप्तिस्थेस्यात्सर्ववर्षेसहर्षम् ॥ ११ ॥

टी०--यदि वर्षपति रंध्र ८ अराति ६ प्रान्त्य १२ स्थानोंमें हीनवीर्य होकर पडे तो संपूर्ण वर्षमें कष्ट जानना और यदि वर्षाधीश शुभ ग्रह होवे और केन्द्र १, ४, ७, १० वा कोण ९, ५ वा लाभ ११ स्थानमें पडे तो संपूर्ण वर्षमें हर्ष जानना ॥ ११ ॥

मू०-लाभत्रिषष्ठेषुचपापखेटो वर्षाधिराट्चेच्छुभमेव वर्षे ॥
बलेनहीनेव्ययनैधनस्थे समास्समस्तागतमाः करोति १२॥

टी०-यदि कोई पापग्रह वर्षेश होकर लाभ ११ त्रि ३ षष्ठ ६ स्थानमें पडें तो वर्षमें शुभही जानना, और यदि बलहीन होकर व्यय १२ और नैधन ८ स्थानमें हो तो लक्ष्मीनाश करे ॥ १२ ॥ इति मिश्रकाध्यायः ॥

अथ दशासाधनाध्यायः ।

मू०--नभस्तलेसंचरतांफलानिकिलप्रणीतानिशुभाशुभानि ॥
वक्तुंनशक्यानिदशाक्रमेणविनाऽथतत्साधनमत्रवच्मि ॥ १ ॥

टी०-ग्रहोंके शुभाशुभ फलका तो वर्णन करचुके परन्तु वे फल विना दशाक्रम जाने समयानुसार नहीं कहेजासक्ते इस कारण अब दशासाधन प्रकार निरूपण किया जाता है ॥ १ ॥

मू०-आदौहीनलवस्ततोधिकलवस्तस्मादनल्पांशकश्चैवंल-
ग्नसमन्विता दिविचरास्स्थाप्यालवाद्याःक्रमात् ॥ तेही
नांशकसंज्ञका निगदिताःप्रान्त्यादुपान्त्यंत्यजेत्तस्मात्त-
त्प्रथमन्तलोपिचतथाशेषास्तुपात्यांशकाः ॥ २ ॥

टी०—दशासाधनमें सलम स्पष्टग्रहोंमेंसे राशिको छोडकर अंशकालादिकोंमें जो सबसे न्यूनांश ग्रह होवे उसको सबसे प्रथम स्थापित करै, पुनः जिसके जैसे अधिक अंश होव उसको वैसे बढाकर स्थापित करता जावे इसमें स्पष्ट वर्षलग्नभी जिससे अंशमें अधिक होगी उसके आगे स्थापित करै इस प्रकारसे स्थापित कियेभये ग्रह हीनांश कहलाते हैं; पुनः न्यूनांश ग्रहको अपने बगलवाले अधिकांशमें ऊनित करै ऐसेही सब ग्रहोंसे करके नीचे स्थापित करता जावे. अब शेष अंश पात्यांश कहलावेंगे इसे साफ समुझनेको नीचे लिखाभया चक्र देखो और उदाहरणपर ध्यान दो ॥ २ ॥

बु	ल	सू	शु	बृ	मं	श	चं	ग्रहाः
२	८	९	१६	१९	१९	२१	२८	
१८	५३	४४	२६	२३	५७	५७	१६	हीनांशाः
३४	२	५९	२६	३२	८	३	३१	
२	६	०	६	२	०	१	६	
१८	३४	५१	४१	५७	३३	५९	१९	पात्यांशाः
३४	२८	५७	२७	६	३६	५५	२६	
२९	८३	९	८५	३३	७	२५	८०	दशामानम्
२२	४४	१९	४२	४६	६	२६	३१	दिनादिकम्
६	२८	३४	१७	४३	४४	४६	२२	

मू०—भागादिसाम्यं यदिखेटयोश्चेत्तदाबलीयान्प्रथमंप्रकल्प्यः ॥ बलेनतुल्यौयदितौभवेतामाद्योल्पभुक्तिः खचरोविचिन्त्यः ॥ ३ ॥

टी०—यदि दोग्रहोंमें परस्पर अंशादिकी समता हो तो अधिकबल ग्रहका स्थापन करना और यदि दोनों बलमेंभी तुल्य हों तो न्यूनभोगवाला ग्रह प्रथम स्थापित किया जावे ॥ ३ ॥

मू०—पात्यांशयुक्त्याखलुसौरवर्षाद्भागादिलब्धेनपृथक्पृथक्तान् ॥ पात्यांशकान्संगुणयेत्क्रमेणवर्षेदशाहानिनभश्चराणाम् ॥ ४ ॥

टी०-ध्यानरहे कि शेषांश अर्थात् पात्यांश सलग्न जोडनेसे उस ग्रहके तुल्य होंगे जो सबसे अधिकांश अन्तमें स्थापित है॥ पात्यांशोंको एकत्र जोडकर दोवार ६० से गुणे यही भाजक होगा; पुनः सौर वर्षमान ३६० दिनको दोवार ६० से गुणकर भाज्य माने पुनः उक्त भाजकसे इस भाज्यको भाजित करै जो लब्ध मिले उसे पृथक् पृथक् गोमूत्रिका गणितरीतिसे पात्यांशोंको गुणन करै और अंशादिके गुणनफलको ६० से भाजितकर दिनादि करलेवे यही वर्षमें दशादिन निर्माण करनेका प्रकार है॥ ४॥

उदाहरणम्।

उक्त चक्रमें सबसे न्यूनांश बुध है इससे वह प्रथम स्थापित भया पुनः उससे कुछ अधिक अंश लग्न है फिर सूर्य और इत्यादि॥ अब यहां सबसे ऊनांश बुध २। १८। ३४ हैं इसलिये लग्न ८। १३। २ में बुधको ऊनित किया शेष ६। ३४। २८ सो लग्नके अधः स्थापित किया ऐसेही औरभी, अब इस चक्रमें सब पात्यांशोंका योग २८।१६। ३१ होता है जो कि, सर्वाधिकांश चन्द्रके अंशादि २८। १६। ३१ कोंके तुल्य है॥ इसको विपल करनेके निमित्त दोवार ६० से गुणा तो हुवा १०१७९१ यह भाजक भया अब सौरवर्षमान ३६० को दोवार ६० से गुणा तो हुवा १२९६००० इसमें उस भाजकसे भागलेकर ६० से चढाया तो दिनघटीपलात्मक ध्रुवांक भया १२। ४३।९९ इसीसे यथा बुधके पात्यांश२।१८।३४को गोमूत्रिका गणितसे गुणित किया तो भया २९। २२। ६ यही बुधके दशा दिन जानना और ऐसेही औरभी इति।

मू०-दशाप्रमाणंखलुसौरवर्षम्प्रकल्प्यपात्यांशयुताविभाज्यम्॥ भागादिलब्धेनदशोक्तरीत्यासंसाधनीयान्तरजादशात्र॥ ५॥

टी०-ग्रहोंके दशामानको सौरवर्ष मान लेवे और वैसेही पात्यांशको जोड कर दोनोंको दो दो वार ६० गुणितकरके दशामानमें भाग लेवे जो लब्ध मिले उसीको ध्रुवांकमान उक्त क्रिया करनेसे अन्तर्दशा सिद्ध होती है॥ ५॥

अथ प्रश्नोपरिवर्षानयनम् ।

मू०-जननसमयलग्नाज्ञानभावेसुधीभिर्विधिवदमलपृच्छाकाललग्नंप्रसाध्यम् ॥ शुभफलमशुभंवाकीर्तयेत्सर्वमस्मिन्निगदितवदुदाराच्छास्त्रबुद्धेरुदारात् ॥ ६ ॥

टी०-जब जन्मकालकी लग्न, अज्ञात हो तो प्रश्न समयकी लग्नको विधिपूर्वक स्पष्ट करै उसीके द्वारा शास्त्रानुकूल शुभफल अथवा अशुभ अपनी बुद्धिके अनुसार कहै ॥ ६ ॥

पृच्छाविलग्नस्यविहायराशीन्विभाजयेदंशकलाकलापम् ॥ खबाणचन्द्रैरिहराशिपूर्वफलंविलग्नान्मुथहास्थितिःस्यात् ॥ ७ ॥

टी०-प्रश्नलग्नकी राशिको छोडकर अंश और कला विकलावोंको १५० ते भाजित करै जो लब्ध होगा वही मेषादिक्रमसे मुंथा जानो ॥ ७ ॥

मू०-चतुर्थभावाधिपतिर्विचिन्त्यःसजन्मलग्नाधिपतिर्बलार्थम् ॥ प्रश्नार्कतुल्योग्रिमवर्षभानुर्यदातदाब्दस्यभवेत्प्रवेशः ॥ ८ ॥

टी०-बल जाननेके अर्थ चतुर्थभावस्वामी और लग्नपति विचार लेना चाहिये जब अग्रिम वर्ष भानु प्रश्नसमय सूर्यके तुल्य हों उसी समय वर्षप्रवेश जानना ॥ ८ ॥

मू०-तत्कालहोराखचरानुसारं वर्षेविचारंविदधीतधीमान् ॥ समीक्ष्यकेषांचिदिदम्मतंवामयाहिसंसूचितमत्र सम्यक् ॥ ९ ॥

टी०-तात्कालिक लग्न और ग्रहोंको देखकर वर्षमें फलाफल निर्देश करना यह मैंने कुछ आचार्योंका मत देख यहां सूचित कियाहै ॥ ९ ॥

अथ प्रत्येकदशाफलानि ।

मू०-भूताम्रहेमाम्बरवारणानान्तुरङ्गमाणाम्मणिभूषणानाम्॥ कान्तेर्बलस्योपचयन्दशायान्दिवामणिःपूर्णबलःकरोति १

टी०-यदि सूर्यकी दशा पूर्ण बलयुक्त हो तो भूमि ताम्बा सोना वस्त्र हाथी घोडे मण्यादिकोंकी शोभा और बलकी वृद्धि होती है ॥ १ ॥

मू०-कान्तासुताप्रीतिमतीवधत्तेप्रसन्नतान्देशपुराधिकारम् ॥ ग्रामादिसौख्यम्बहुधाविधत्तेतेजोनिधिर्म्मध्यबलान्वितोब्दे ॥ २ ॥

टी०-यदि वर्षमें सूर्यकी दशा मध्यबल होय तौ स्त्रीपुत्रादिकोंसे परम स्नेह खुशी ग्रामपुरादिकोंमें अधिकार और ग्रामादिक सम्पत्तियोंको बढाते हैं ॥ २ ॥

मू०-कलिः कलत्रेणचपुत्रमित्रैश्शत्रूदयस्सत्त्वमतिक्षतिः स्यात् ॥ निरर्थकोर्थःक्षयताम्प्रयातिगलद्बलादित्यदशाप्रवेशे ॥ ३ ॥

टी०-यदि वर्षमें सूर्य्यकी दशा बलरहित हो तो स्त्री पुत्र मित्रोंसे लडाई, शत्रुवोंका उदय, पराक्रम और मतिका नाश और निष्प्रयोजन धननाश होताहै ३॥

मू०-स्याद्भीरराातेर्नृपतेश्चपीडान्यूनन्धनन्नैधनतुल्यरुक्स्यात् ॥ अलंबलस्यापचयन्दशायाम्भाव्यम्फलन्नष्टबलस्यभानोः ॥ ४ ॥

टी०-यदि सूर्य्यकी दशा नष्टबल होय तौ शत्रुसे भय, राजासे क्लेश, धनकी न्यूनता, मरणतुल्य रोग और बलका क्षय यह फल जानना ॥ ४ ॥

मू०-त्रिषष्ठलाभोपगतोदिनेशोनष्टोल्पसत्त्वोक्तफलंददाति ॥ विहीनसत्त्वः खलुमध्यमोक्तं बलाधिशालीविपुलाप्तिकृत्स्यात् ॥ ५ ॥

टी०-यदि सूर्य ३, ६, ११, स्थानमें नष्टवल होकर स्थित रहे तो जो फल अल्पसत्वका कहागया है वह करैं, यदि हीनवल हो तौ मध्यमोक्त और बली होवें तो प्राप्तिकारक होते हैं ॥ ५ ॥ इति रविः ॥

मू०-द्रव्यगौरवपदानिनरेशाद्द्वेषिनाशनयशांसिजितान्तम ॥ श्वेतचैलरजतामलमुक्तास्सम्प्रयच्छति बलीधवलांशुः ॥ ६ ॥

टी०-यदि चन्द्रमा बली होवे तो द्रव्य, मान, स्थानप्राप्ति राजासे होवे, शत्रुनाश और यश वृद्धि होवे और श्वेतवस्त्र, चांदी और मोतीकी प्राप्ति होवे॥६

मू०-स्वगेहतो देहसुखन्नराणांवाणिज्यतोर्थागमनानिनूनम्॥ प्रभूतमन्त्राम्बरमंत्रबुद्धिवृद्धिं विधुर्मध्यबलोविधत्ते ॥७॥

टी०-यदि मध्यबलं चन्द्रमाकी दशा हो तो गृहसुख, वाणिज्यद्वारा द्रव्य-प्राप्ति, मंत्र, वस्त्रप्राप्ति बुद्धिवृद्धि इत्यादि शुभफल हो ॥ ७ ॥

मू०-वैरम्पुत्रकलत्रमित्रजनितं श्लेष्मानिलोपद्रवं सौख्या-र्थापचयंभयंरिपुचयं कान्तिक्षयंवैरिणाम् ॥ धत्तेहीन-बलः कलानिधिरलंकालेदशोक्तं फलं मौलैस्ताजिक-शास्त्रकारचतुरैर्यद्भाषितन्नान्यथा ॥ ८ ॥

टी०-हीनबल चन्द्रमाकी दशामें पुत्र, मित्र, कलत्रसे दुःख, श्लेष्मा, वायुसे शरीरमें पीडा, सौख्य, अर्थकी हानि, भय, रिपुवृद्धि इत्यादि यथार्थ फल होवे ॥ ८ ॥

मू०-वृथाटनंक्लेशभयंविषादंधनक्षयंपुत्रकलत्रवैरम् ॥ कफ-प्रकोपंचदशाप्रवेशेकरोत्यलंनष्टबलःकलावान् ॥ ९ ॥

टी०-नष्टबल चन्द्रमाकी दशामें व्यर्थ भ्रमण, क्लेश, भय, विषाद, धननाश, पुत्र, स्त्रीसे वैर और कफका प्रकोप हो ॥ ९ ॥

मू०-वित्तत्रिलाभस्थितशीतरश्मिर्विनष्टसत्त्वोपिफलंयदु-क्तम्॥ तत्पाककालेसकलन्नकुर्यान्मध्यश्शुभंपूर्णबलो-विशेषात्॥ १० ॥

टी०-यदि चन्द्रमा २, ३, ११, स्थानोंमेंभी हो और नष्टबल हो तो उत्तम-फलदायक नहीं होता, मध्यमबल हो तो शुभ और पूर्णबल हो तो विशेष फल करै ॥ १० ॥ इतिचन्द्रः ॥

मू०-आरस्सारसमन्वितः क्षितिपतिप्रीतिन्नितांतम्महा-संग्रामेविजयं करोति पृतनास्वामित्वसौख्यन्नृणाम्॥ ताम्रारक्तपटप्रवालविलसच्चामीकराप्तिर्ध्रुवंनानावस्तु समुच्चयंनिजदशाकालेविभुत्वोदयम् ॥ ११ ॥

टी०–यदि बली मंगलकी दशा हो तो राजासे प्रीति, युद्धमें जय, सेनास्वामित्व, सुख, तांबडा, लालवस्त्र, मूंगा, सुवर्ण इत्यादि नाना पदार्थोंकी प्राप्ति हो ॥ ११ ॥

मू०–असृग्विकारस्सुतदारबाधाक्रोधातिवृद्धिर्बलहीनता स्यात् ॥ इलात्मजेमध्यबलेकलिश्चखलैर्नृपालैरतिचित्तशुद्धिः ॥ १२ ॥

टी०–यदि मध्यबल मंगलकी दशा हो तो रुधिरविकार, पुत्र, स्त्रीबाधा, क्रोधवृद्धि, बलहानि, राजयुद्ध और चित्त शुद्धि हो ॥ १२ ॥

मू०–भूनन्दनेहीनबलोपपन्नेस्यात्कामिनीसूनुधनादिचिन्ता ॥ विरोधिवर्गैर्विविधोपसर्गैर्दुःखान्यनेकानिभवन्तिनूनम् ॥ १३ ॥

टी०–यदि अधम बल मंगलकी दशा हो तो स्त्री, पुत्र, धनकी चिन्ता और अनेक दुःख हों ॥ १३ ॥

मू०–पृथ्वीसुतोनष्टबलाधिरूढः प्रौढत्वमुच्चैर्द्विषतांकरोति। रंगांगणेक्षीणमहत्त्वमेवविद्यार्थनाशंस्वजनैर्विरोधम् १४॥

टी०–यदि नष्ट बल मंगलकी दशा हो तो शत्रुवृद्धि युद्धमें पराजय, विद्या और अर्थका नाश और आपसमें विरोध बढे ॥ १४ ॥

मू०–लाभेरिगेहेसहजेमहीजश्चेन्नष्टवीर्योतितरांशुभःस्यात् ॥ दुष्टंफलंस्वल्पतरंकरोतिप्रकृष्टवीर्योतितरांशुभस्स्यात्१५

टी०–यदि मंगल ११, ६, ३ स्थानोंमेंसे किसीमें नष्टबल होकरभी पडै तो शुभ फल देताहै और यदि उत्तम वीर्य हो तो अत्यन्तही शुभ हो ॥१५॥ इति भौमः ॥

मू०–सौम्यार्थबुद्धिस्स्वजनाधिकत्वंराज्यंप्रतापश्चकुलानुमानात् ॥ प्रालेयरश्मेस्तनुजोबलीयान्स्वपाककालेफलमातनोति ॥ १६ ॥

टी०–यदि बली बुधकी दशा हो तो स्वजनवृद्धि, राज्यप्रताप (कुलानुरूप) और सत्कर्ममें बुद्धिकी वृद्धि हो ॥ १६ ॥

मू०-मित्रपुत्रसुखसाहसवृद्धिम्बुद्धिवृद्धिमपिलाभविलासान्॥ शीतभानुतनुजोनुजलक्ष्मीम्मध्यवीर्यसहितोहिविधत्ते१७॥

टी०-यदि मध्यम वीर्य बुधकी दशा हो तो मित्र, पुत्र, सुख, पराक्रम, बुद्धि, लाभ, विलास और लक्ष्मीकी वृद्धि हो ॥ १७ ॥

मू०-निजानुजाद्यैर्हिनयातिसौख्यंविख्यातिनीतिक्षयतां प्रयाति ॥ द्रोहान्द्विजानांद्विजराजसूनोर्विहीनसत्त्व-स्यनरोदशायाम् ॥ १८ ॥

टी०-यदि हीनबल बुधकी दशा हो तो अपने वर्गसे दुःख, यशनाश, और ब्राह्मणोंसे द्रोहवृद्धि हो ॥ १८ ॥

मू०-अनर्थमर्थोपहतिन्नितान्तंस्वजातिवैरेणचकार्यघातम्॥ संवत्सरेशीतकरस्यसूनुर्विनष्टसारःकुरुतेनराणाम्॥१९॥

टी०-यदि नष्टबल बुधकी दशा हो तो अनर्थ, अर्थहानि, जातिवैर, कार्य-नाश इत्यादि फल हों ॥ १९ ॥

मू०-विहायरन्ध्रान्त्यरिपुस्थलानिप्रालेयमूर्तेर्विबलस्तनूजः। अनिर्मलस्यापिफलस्यकुर्यादलंकिलोक्तिनिजपाककाले२०

टी०-यदि नष्टबलभी बुध ८, १२, ६ स्थानोंमें न पडे तो अपनी दशामें उत्तमही फल करेगा ॥ २० ॥ इति बुधः ॥

मू०-दन्तावलाश्वाप्तिरलंनृपालात्कुलानुमानेनचराज्यल-ब्धिः ॥ विदग्धबुद्धिःप्रभवेन्नराणांगीर्वाणवन्द्येनिरव-द्यसत्त्वे ॥ २१ ॥

टी०-यदि पूर्णबल बृहस्पतिकी दशा हो तो हाथी, घोडाकी प्राप्ति कला-नुमानसे राज्यप्राप्ति और बुद्धिकी वृद्धि हो ॥ २१ ॥

मू०-मानोनृपालात्किलपुत्रमित्रसुवस्त्रलाभोद्रविणागमश्च ॥ सुखोपलब्धिर्विपुलासलीलंदम्भोलिभृन्मंत्रिणिमध्य-वीर्ये ॥ २२ ॥

टी०-यदि बृहस्पति मध्यबल हो तो राजासे मान, पुत्र मित्रसे सुख, वस्त्र, द्रव्य प्राप्ति और सुख हो ॥ २२ ॥

मू०-पुण्यंपरिक्षीणमतीवचित्तंभ्रान्तम्भवेद्वित्तविनाशनंच ॥ कलिः खलैः पाकफलंकिलोक्तन्दंभोलिशालीज्यबले विहीने ॥ २३ ॥

टी०-यदि हीनबल बृहस्पतिकी दशा हो तो पुण्यनाश, चित्तमें सन्देह, द्रव्यनाश और दुष्टजनोंसे युद्ध हो ॥ २३ ॥

मू०-महाभयार्तः कृशताहिमूर्तौ भवेन्निवृत्तिर्विषयादिसौख्यात् ॥ मित्रैर्विरोधंबहुधारिवृद्धिः कष्टंगुरौनष्टबलोपपन्ने ॥ २४ ॥

टी०-यदि नष्टवल बृहस्पतिकी दशा हो तो महाभय, शरीरमें दुर्बलता, सुखहानि, मित्रोंसे विरोध शत्रुवृद्धि और नानाप्रकारके कष्ट हों ॥ २४ ॥

मू०-व्ययारिरन्ध्राणिविहायभावे यत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिसूनुः ॥ वलोज्झितोयद्यपिपाककालेदुष्टंफलंपूर्णतया न दत्ते ॥ २५ ॥

टी०-यद्यपि बृहस्पति निर्बल हों पर यदि व्यय १२ अरि६ और रन्ध्र ८ स्थानमें न हों तो अपनी दशामें दुष्टफलकारक नहीं होते ॥ २५ ॥ इति गुरुः॥

मू०-विलसितानिविलासवतीजनैर्बहुधनानिचसूनुसुखान्यपि ॥ उशनसोहिदशात्रबलीयसीवितनुतेनृपतेःखलु गौरवम् ॥ २६ ॥

टी०-यदि सबल शुक्रकी दशा हो तो स्त्रीसुख, धनसुख, पुत्रसुख, और राजद्वारा सन्मानभी होवे ॥ २६ ॥

मू०-अत्यर्थमर्थागमनान्नपानसौख्यानिशुभ्रांबरगोतुरङ्गान् ॥ कुरङ्गनेत्राकुलकेलिलाभन्दशाभृगोर्मध्यबलस्यकुर्यात् ॥२७॥

टी०-यदि मध्यबल शुक्रकी दशा हो तो राजासे द्रव्यप्राप्ति, अन्नपानादिप्राप्ति, श्वेतवस्त्र, गो, तुरङ्गप्राप्ति और स्त्री सुख होवे ॥ २७ ॥

मू०-शत्रूदयोमित्रकलत्रपीडायशोर्थनाशश्चविदेशयानम् ॥ कलेवरेनिर्बलतानिलेनबलोज्झितस्यास्फुजितोदशायाम् २८

टी०-यदि बलहीन शुक्रकी दशा हो तो शत्रुवृद्धि, मित्र पीडा, स्त्री पीडा, यश; अर्थहानि, विदेशयात्रा और शरीरमें वायुद्वारा निर्बलता हो ॥ २८ ॥

मू०-दाराधिकारात्मजसौख्यहानिंधनक्षयंवैरिभयंचशोकम् ॥
लोकापवादंलभतेमनुष्योविनष्टसारस्यभृगोर्दशायाम् २९॥

टी०-यदि नष्टबल शुक्रकी दशा हो तो स्त्रीसे दुःख, पुत्रसे दुःख, धननाश, शत्रुभय, शोक और लोकापवाद हो ॥ २९ ।

मू०-द्वादशंरसमथाष्टमंविनास्थानकृद्भवतिचान्यवेश्मनि ॥
निंदितोपियदिहायनेतदापूर्ववद्देवसचिवोहिकष्टदः ॥ ३० ॥

टी०-यदि शुक्र निंदित हो और द्वादश १२ छष्ठ ६ और अष्टम स्थानको छोडकर अन्य स्थानोंमें पडे तो उतना कष्ट नहीं करता ॥ ३० ॥ इति शुक्रः ॥

मू०-भिल्लाधिपत्यंलिखनाधिकारंदेशाधिपत्यंकुरुतेनरेशात् ॥
हिरण्यमारण्यपतेर्दशायांसारेणपूर्णस्तरणेस्तनूजः ॥ ३१ ॥

टी०-यदि पूर्णबल शनिकी दशा हो तो भिल्लोंका स्वामित्व, लेखाधिकार (मुहर्रिरी) राजासे देशाधिपत्य (जिलेदारीत्यादि) और भिल्लद्वारा धनप्राप्ति हो ॥ ३१ ॥

मू०-कोशोट्टदुर्गाश्वतरादिरक्षांकष्टंचदुष्टैः कलहप्रसंगम् ॥
करोतिपाकेखलुमध्यसारश्शनैश्चरोनर्थमथार्थनाशम् ॥ ३२ ॥

टी०-मध्यबल शनिकी दशा हो तो कोश, मार्ग, किला, घोडा आदिकी रक्षाका अधिकार मिले, दुष्ट जनोंसे वैर और अनर्थ तथा धननाश हो ॥ ३२ ॥

मू०-चौरादरातेर्नृपतेस्स्वनाशंकाश्यंशरीरेप्रकृतेर्विकारम् ॥
मित्रैर्विरोधंकुरुतेदशायांविहीनवीर्योननुभानुसूनुः ॥ ३३ ॥

टी०-यदि हीनबल शनिकी दशा हो तो चोरसे भय, राजद्वारा द्रव्यनाश, शरीरमें रोग और दुर्बलता और मित्रोंसे विरोध हो ॥ ३३ ॥

मू०-कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखैस्सन्ततदेहोबहुभिर्विरोधम् ॥
भवेद्दशायांहियशोविनाशोविनष्टसारोष्णकरात्मजस्य ३४

टी०-यदि नष्टबल शनिकी दशा हो तो पुत्र, कलत्रवियोग, दुःख और बहुतोंसे विरोध, और यशहानि हो ॥ ३४ ॥

मू०-विलग्नतोलाभनिकेतनेवापराक्रमेशत्रुनिवेशनेवा॥
दिनेशसूनुर्यदिनिन्दितोपिदुष्टंफलंनोसकलंददाति ॥३५॥

टी०-यदि निंद्यभी शनि होवे परन्तु लग्नसे लाभ ११ पराक्रम ३ और शत्रु ६ स्थानमेंसे किसी एकमें हो तो सम्पूर्ण दुष्ट फल नहीं करता ॥ ३९ ॥ इति शनिः।

मू०-लग्नेचरेश्रेष्ठफलाहिमध्याकष्टाद्दकाणैः क्रमशोदशोक्ता॥
स्थिरेचकष्टाशुभदाचमध्यामिश्राधमामध्यतमाचसम्यक् ३६

टी०-यदि लग्न चर हो तो उसकी दशा दृकाणानुरूप करना, अर्थात् पहला दृकाण श्रेष्ठ, दूसरा मध्य, तीसरा कष्ट, स्थिर लग्नमें प्रथम अशुभ, द्वितीय शुभ, तृतीय मध्य और द्विस्वभावमें प्रथम मध्य, द्वितीय अशुभ, तृतीय शुभ जानना ॥ ३६ ॥

मू०-खेचारिणांभावफलानियानिश्रेष्ठानिदुष्टानिविमिश्रि-
तानि॥ तान्येवकल्प्यानिविलग्ननाथवशादशेषाणिद-
शाप्रवेशे ॥ ३७ ॥

टी०-जिस प्रकारसे ग्रहोंका उत्तम, मध्यम, निन्द्य फल कहा गयाहै वैसेही लग्नदशाके विचारमें लग्नेशके अनुकूल फल कहना ॥ ३७ ॥

इति दशाफलाध्यायः॥

मू०-महादशाकालमहत्त्वसत्त्वे फलस्यसूक्ष्मत्वनिदर्शनाय॥
अन्तर्दशायांसरलामलानिफलानिमौलैरुदितानिवच्मि॥१॥

टी०-महादशाका काल अधिकहै इससे फलकी सूक्ष्मता जाननेके हेतु श्रष्ठोंके कहे हुये फलोंको अन्तर्दशाके प्रकारसे कहताहूं ॥ १ ॥

मू०-नृपप्रसादोधनधान्यवृद्धिस्स्त्रीमित्रपुत्रादिसुखानिनूनम्॥
अन्तर्विपाकंकुरुतेमृगांकः पाकेयदापंकजनायकस्य॥ २॥

टी०-यदि सूर्यकी दशामें चन्द्रकी अन्तर्दशा हो तो राजाकी प्रसन्नता, धनधान्यवृद्धि, स्त्री, मित्र और पुत्रसुख होवे ॥ २ ॥

मू०-सेनापतित्वंनृपतेस्सकाशादारक्तवस्त्राभरणादिवृद्धिः॥
भूचारुचामीकरताम्रलाभो भूनन्दनेभानुदशाप्रपन्ने ॥ ३ ॥

टी०-यदि मंगल सूर्यके अन्तरमें हो तो राजद्वारा सेनापतित्व, रक्तवस्त्र, आभरणादिप्राप्ति, पृथ्वी, सुवर्ण और ताम्रलाभ हो ॥ ३ ॥

मू०-निरुद्यमत्वंव्यसनानिपुंसामरातिरुग्भीतिमथार्थनाशम्॥
असज्जनेदानरतिम्प्रकुर्यात्सूर्यस्यपाकेहिमृगांकसूनुः ॥४॥

टी०-यदि बुध सूर्यके अन्तरमें हो तो उद्यमहानी, दुःख, शत्रु और रोगभय, अर्थनाश और असद्दानमें रुचि हो ॥ ४ ॥

मू०-मित्रान्तरे चित्रशिखण्डिसूनोरन्तर्दशाश्वेभनृपालतोषम् ॥ करोतिलाभं विपुलन्नृपालात्पद्मालयालंकरणं नृपालात् ॥ ५ ॥

टी०-यदि बृहस्पति सूर्यके अन्तरमें हो तो, अश्व, इभ (हाथी) राजताष, इत्यादि अनेक प्रकारके लाभ हों ॥ ५ ॥

मू०-देहे कृशत्वंचमतिभ्रमत्वंमहत्त्वसत्त्वस्यहतिन्नितान्तम् ॥
सद्भिर्विरोधं बहुधाप्रकुर्याद्भानोर्दशायामुशनाविषादम् ॥६॥

टी०-यदि सूर्यके अन्तरमें शुक्र हो तो शरीरमें दुर्बलता, मतिभ्रम, मान और बडाईका नाश और अधिकतर सज्जनोंसे विरोध हो ॥ ६ ॥

मू०-क्षुच्छस्त्रबाधाबहुधातिरोगं वियोगमात्मीयजनैःकृशत्वम् ॥ भूमीपतेर्भीतिमतीवनित्यंकुर्याच्छनिर्भानुदशाप्रपन्नः ॥ ७ ॥

टी०-यदि भानुके अन्तरमें शनि हो तो क्षुधा, और शस्त्रकी बाधा, रोग, वियोग, दुर्बलता और राजासे भय हो ॥ ७ ॥ इति सूर्यमध्येन्तर्दशा ।

रुधिरपित्तविकारकलेवरः कृशतरोहिनरो नृपभीतितः॥ भवतियाति वृथार्थविनाशनं तुहिनरश्मिदशास्थदिनेश्वरे ॥ ८ ॥

टी०-यदि चन्द्रके अन्तरमें सूर्य हों तो रुधिरका विकार, पित्तका विकार, दुर्बलता, राजभय और अर्थका व्यर्थ नाश हो ॥ ८ ॥

मू०-द्रव्यभ्रंशं सौख्यनाशं विरोधं कुस्त्रीसंगंवाग्विवादं खलैश्च॥ भूपाद्भीतिंदेहकार्श्यम्प्रकुर्यादारस्ताराधीशपाकमचारः ॥ ९ ॥

टी०–यदि मंगल चन्द्रके अन्तरमें हो तो द्रव्यनाश, सुख नाश, विरोध, दुष्टस्त्रीलाभ, दुष्टोंके साथ युद्ध, राजभीति और दुर्बलता हो ॥ ९ ॥

मू०–सुवर्णशस्त्राम्बरवाहनानां प्राप्तिं निजान्योन्नतिमिष्टतातिम् ॥ ददातिलोके पदवींबुधानांसुधांशुसूनुर्हि विधोर्दशायाम् ॥ १० ॥

टी०–यदि चन्द्रके अन्तरमें बुध हो तो सुवर्ण, शस्त्र, वस्त्र, वाहन, पशुकी वृद्धि और पण्डिताईकी पदवी प्राप्ति इत्यादि फल होवें ॥ १० ॥

मू०–गीर्वाणसद्ब्राह्मणपुण्यकार्यैभर्वेन्नराणां धिषणामनोज्ञा ॥ क्षोणीपतेराप्तिरतीव नित्यं बृहस्पतौशीतकरान्तरस्थे ११॥

टी०–यदि बृहस्पति चन्द्रके अन्तरमें हों तो देव, ब्राह्मण और पुण्यकार्यमें बुद्धि हो और राजद्वारा अधिक प्राप्ति होवे ॥ ११ ॥

मू०–पृथ्वीपतेर्गौरवसम्पदाप्तिस्सुहृद्भिर्धिश्चाप्यधिकारिवर्गात ॥ कलत्रपुत्रादिसुखानिपाकेचन्द्रस्यदैत्येन्द्रगुरौप्रयाते ॥ १२ ॥

टी०–यदि शुक्र चन्द्रके अन्तरमें हो तो राजद्वारा प्रतिष्ठा, और धनकीप्राप्ति तथा अधिकारीवर्गसे मित्रता और स्त्रीपुत्र आदिकोंका सुख हो ॥ १२ ॥

मू०–स्वमित्रपुत्रैस्सहशत्रुभावंशत्रुप्रवृद्धिंबलकान्तिशान्तिम्॥ करोतिचन्द्रस्यदशान्तरालेफलंकिलेदंनलिनीशसूनुः१३॥

टी०–यदि शनि चन्द्रके अन्तरमें हो तो मित्र पुत्रसे शत्रुता, शत्रुवृद्धि और बल और कान्तिका नाशहो ॥ १३ ॥ इति चन्द्रमध्येन्तरम् ॥

मू०–रिपुभयंचसुहृत्सुतशत्रुता व्ययबहुव्यसनार्थसुखानिच ॥ खलुभवन्तिनृणांक्षितिनंदने तुहिनभानुतनूजकृतांतरे १४॥

टी०–यदि मंगलके अन्तरमें बुध होवें तो शत्रुभय, मित्र पुत्रसे विरोध और व्यय, दुःखादि होवें ॥ १४ ॥

मू०–कदशनंधनधान्यविनाशनं निजजनापचयंचरिपूद्यम॥ अवनिसूनुदशांत्रिदशार्चितेविशाति भीतिमतीवसमादिशेत् ॥ १५ ॥

टी०-यदि मंगलके अन्तरमें गुरु होवें तौ कुत्सित अन्न मिले, धन, धान्य, आदि नष्ट हों, स्वजनमें विरोध, और शत्रुवृद्धि होवे ॥ १५ ॥

मू०-खलजनैः कलहं प्रकरोत्यलं निजजनैरपि शत्रुसमुद्भवम् ॥ विकलतांबलहीनतयानृणामुशनसःक्षितिजेन्तरजादशा १६

टी०-यदि मंगलके अन्तरमें शुक्र होवे तो खलोंसे और आत्मवर्गमें विरोध बढे और बलहानिके कारण विकलता प्राप्त होवे ॥ १६ ॥

मू०-गाढाहि पीडानयनाननेषुविचार्चिकारक्तगदादिभीतिः ॥ भवेद्विलोलाकमलाप्यलोभाभौमान्तरालेनलिनीशसूनौ १७

टी०-यदि मंगलके अन्तरमें शनिकी दशा होवे तो बडी पीडा नेत्र और मुखमें हो, खाज और रक्तविकारसे रोग हो और लक्ष्मीभी स्थिर न रहै ॥१७॥

मू०-विभूषणक्षोणिहिरण्यजन्यावाणिज्यदैवाभ्युदयंसदैव ॥ परोपकारंक्षितिनन्दनस्यदशां प्रयातःकुरुतेदिनेशः ॥१८॥

टी०-यदि मंगलके अन्तरमें सूर्यकी दशा हो तो भूषण, पृथ्वी और द्रव्यकी वृद्धि हो, व्यापार और भाग्यका उदय हो और परोपकारमें चित्त हो१८॥

मू०-योषाहर्षोत्कर्षभूषाविशेषंनाशंकुर्याद्विद्विषांसाभृशंहि ॥ मुक्तायुक्तंरौप्यमप्यम्बराणिक्षोणीपुत्रान्तर्गतोरात्रिनाथः१९

टी०-यदि मंगलके अन्तरमें चन्द्रमाकी दशा हो तो स्त्रीको सुख, भूषण-प्राप्ति, शत्रुनाश और मुक्तायुत रौप्य और वस्त्रकी प्राप्ति हो ॥ १९ ॥ इति भौममध्येन्तरम् ॥

मू०-विलासिनीकेलिविलासमुच्चैरुच्चासनाध्यासनकाञ्चनानाम् ॥ करोतिलाभंसुरराजपूज्योद्विजाधिराजात्मजपाकसंस्थः ॥ २० ॥

१ टी०-यदि बुधके अन्तरमें बृहस्पति हों तो स्त्रीकेलिविलाससुख, ऊंचापद और सुवर्णादि द्रव्योंका लाभ हो ॥ २० ॥

मू०-योषादितोषंबहुशंशुकानांचतुष्पदानामथमौक्तिकानाम् रौप्यस्यलाभंजनयेज्जनानांचेद्दानवानांहिगुरुर्ज्ञपाके २१॥

टी०-यदि बुधके अन्तरमें शुक्र होवें तो स्त्रीसुख, और वस्त्र, चतुष्पद जीव, मोती और चांदी आदि द्रव्यलाभ होवे ॥ २१ ॥

मू०-बलस्यहानिः कुपितानिलेनभूपालतोभीर्बहुधाखलाच्च ॥
भवेद्दशायांशशिनन्दनस्यदिनेशजस्यान्तरजादशाचेत् २२

टी०-यदि बुधके अन्तरमें शनिकी दशा हो तो वायुकोपसे बलहानि, राजा और दुष्टजनोंसे अनेक प्रकारका भय हो ॥ २२ ॥

मू०-उर्वीपतेर्गौरवमर्थलाभंसम्यक्त्वमभ्येतिविभूतितोषम् ॥
नरोयदाशीतकरात्मजस्यपाकेदिनेशःकुरुतेप्रवेशम् ॥२३॥

टी०-यदि बुधके अन्तरमें सूर्य होवे तो राजा मानकरै, द्रव्यलाभ हो, और ऐश्वर्य बढै ॥ २३ ॥

मू०-सहोदरैर्वैरमथार्थनाशम्मरुद्विकारात्कृशतां शरीरे ॥
कोपंनृपालात्कुरुते बुधस्यदशान्तरालेप्रचलन्कलावान् २४

टी०-यदि बुधके अन्तरमें चन्द्रमा हो तो सगेभाइयोंसे वैर, अर्थनाश, वायुके विकारसे शरीरमें दुर्बलता और राजाका कोप हो ॥ २४ ॥

मू०-विचर्चिकादद्रुमहाव्रणाद्यैस्स्यात्प्राणिनांदेहकृशत्वमंगे ॥
कण्डूद्गमोद्वेगवियोगबाधाबुधस्यमध्येवसुधातनूजे ॥ २५॥

टी०-यदि बुधके अन्तरमें मंगल होवे तो किलकिली, दाद, और विस्फोटकादिकोंके कारण शरीरमें दुर्बलता, और खाज, उदासी और वियोगदुःख हो ॥ २५ ॥ इति बुधन्तरम् ॥

मू०-कफानिलाभ्यांविकलत्वमंगेनंगोविहीनत्वमरातिवृद्धिम्॥
क्षीणंचपुण्यंद्रविणंप्रकुर्याद्गीर्वाणवंद्यान्तरचारिशुक्रः ॥२६॥

९ टी०-यदि बृहस्पतिकी दशामें शुक्रका अन्तर हो तो कफ और वातसे शरीरमें पीडा, धातुक्षीणता, शत्रुवृद्धि, पुण्यनाश और द्रव्यनाश हो ॥ २६ ॥

मू०-अरातिभूमीपतिभीतिमुग्रांसंग्रामतश्चापचयंव्ययंच ॥
कफंप्रकुर्यात्सुरराजपूज्यदशां प्रपन्नोरविनन्दनश्चेत् ॥२७॥

टी०-यदि बृहस्पतिकी दशामें शनिका अन्तर हो तो शत्रुभय, राजभय, संग्राममें पराजय, धननाश, और कफवृद्धि हो ॥ २७ ॥

मू०-लीलाविलासं ललनातनूजैर्देवद्विजानां ननुपूजनंच ॥
विनाशनंशत्रुजनस्यकुर्यात्सूर्यस्सुराचार्यदशांप्रपन्नः ॥२८॥

टी०-यदि बृहस्पतिकी दशामें सूर्यका अन्तर हो तो स्त्री और पुत्रविलाससुख देवता और ब्राह्मणकी पूजा और शत्रुनाश हो ॥ २८ ॥

मू०-भवेन्नृपालात्सकलार्थसिद्धिस्सुवर्णवस्त्रामलचैलवृद्धिः ॥
सुखान्यनेकानिभवन्तिचन्द्रेसुरेन्द्रवन्द्यस्यदशांप्रयाते२९ ॥

टी०-यदि गुरुके अन्तरमें चन्द्रमा हो तो राजद्वारा अर्थसिद्धि, सुवर्ण, वस्त्र, आदिकी वृद्धि, और अनेकानेक सुख हों ॥ २९ ॥

मू०-वृद्धिर्धनानामथवाहनानांद्विषज्जनानांनिधनंचनूनम् ॥
मानोनरेन्द्रात्त्रिदशार्चितस्यदशाम्प्रपन्नेऽवनिनन्दनेस्यात्॥

टी०-यदि गुरुके अन्तरमें मंगल हो तो धनवृद्धि, वाहनवृद्धि, शत्रुनाश और राजद्वारा सम्मान होवे ॥ ३० ॥

मू०-यशोविनाशंचशरीरकार्श्यमीर्षास्वमित्रैश्चकलत्रवादम् ॥
सुखार्थहानिंत्रिदशेज्यपाकेशशांकसूनुःकुरुतेस्ववेशे ॥३१॥

टी०-यदि गुरुके अन्तरमें बुध हो तो यशहानि, शरीरमें दुर्बलता, ईर्षा अपने मित्र और स्त्रियोंसे विवाद और सुख और द्रव्यनाश होवे ॥ ३१ ॥ इति गुरावन्तरम् ॥

मू०-सुनीलचैलामलनीलकानां नीलोर्णिकानांमहिषीजनानाम् ॥ भवेदवाप्तिर्भृगुनन्दनस्यदशांप्रपन्नेदिनकृत्तनूजे ॥ ३२ ॥

टी०-यदि शुक्रके अन्तरमें शनि होवे तो नीलवर्णवस्त्र, नीलमणि, नील कम्बल, और महिषी आदिकी प्राप्ति हो ॥ ३२ ॥

मू०-खलान्नृपालाच्चकिलोरुभीतिर्बलक्षयंशत्रुविवृद्धिमुच्चैः ॥
नीचैर्विवादंभृगुजस्यपाकेसूर्यस्सदासम्प्रविशन्करोति ३३॥

टी०-यदि शुक्रके अन्तरमें सूर्य होवे तो खलसे और राजासे भय होवे बलहानि होवे, शत्रुवृद्धि हो और नीचोंसे कलह हो ॥ ३३ ॥

मू०-स्वल्पोलाभः श्लेष्मशीतादिबाधाक्रोधावेशः पुत्रमि-

त्रादिकेषु ॥ किंचित्पीडास्याज्जडांशोर्दशायामध्यारूढेप्रौढदैत्यार्चितस्य ॥ ३४ ॥

टी०–यदि शुक्रके अन्तरमें चन्द्रमा होवे तो लाभ थोडा, श्लेष्मा और शीतकी बाधा, पुत्र मित्रादिकोंके प्रति क्रोध, और शरीरमें पीडा होवे ॥ ३४ ॥

मू०–विपक्षपक्षक्षयदक्षतास्याद्धनक्षयोत्यर्थमरुत्प्रकोपः ॥
वेश्यारतिर्नैवसुखंकदाचिदन्तर्दशाचेद्भृगुजेकुजस्य ॥ ३५ ॥

टी०–यदि शुक्रके अन्तरमें मंगल हो तो शत्रुनाश, धननाश, और वायुकृत शरीरमें विकार, वेश्यासे प्रीति और सुखनाश होवे ॥ ३५ ॥

मू०–भूदेवदेवार्चनमुन्नतत्वं सद्बुद्धिविद्याप्रमदासुखानि ॥
प्राप्तिश्चकीर्तिश्चभृगोर्दशायांशशांकजस्यान्तरजादशाचेत् ३६

टी०–यदि शुक्रके अन्तरमें मंगल होवे तो ब्राह्मणपूजा, देवपूजामें बुद्धि बढै, ऐश्वर्य बढै, स्त्रीसुख हो, लाभ हो और कीर्ति हो ॥ ३६ ॥

मू०--भोजनाम्बरहिरण्यमणिभ्यः क्षोणिपादपिसुखानि नितान्तम् ॥ पूर्वदेवसचिवस्यदशायांदेवदेवसचिवोयदिसंस्थः ॥ ३७ ॥

टी०–यदि शुक्रकी दशामें गुरु हो तो भोजन, वस्त्र, सुवर्ण, मणि आदि प्राप्तहों, राजद्वारा सुखहो, और उत्तम फल होवे ॥ ३७ ॥ इति शुक्रमध्येन्तरम् ।

मू०--स्थानसंचलनकष्टमनन्तंदुष्टतोथपरिपीडनमंगे ॥
पुत्रमित्रवनिताकृतवैरंसंप्रयच्छतिरवीरविजस्थः ॥ ३८ ॥

टी०–यदि रवि शनिके अन्तरमें हो तो स्थानभ्रंश कष्ट, शरीरमें पीडा और पुत्र, मित्र, स्त्रीसे विरोध हो ॥ ३८ ॥

मू०–आलस्यनिद्राबलहीनतास्यादलंप्रयासैः कुरुतेग्निमांद्यम् ॥ हृद्रोगबाधांविविधांसुधांशुस्तिग्मांशुपुत्रस्यदशांप्रविष्टः ॥ ३९ ॥

टी०–यदि शनिके अन्तरमें चन्द्र हो तो आलस्य, निद्रावृद्धि करै, बलहीनता हो, उद्योग व्यर्थ हो, अग्निमांद्य हो, हृदयमें बाधाआदि अनेक दुःख हों ३९

मू०-रक्तवातजनितैश्चविकारैर्वैरितस्करभयैरधिनित्यम् ॥
जायतेहिमनुजोहततेजाभानुजेन्तरदशावनिजस्य ॥ ४० ॥

टी०-यदि शनिके अन्तरमें मंगल हो तो रक्तवातविकार और चोरभय हो और प्रतापनाश हो ॥ ४० ॥

मू०-आत्मजानुजधनांगनासुखं वाहनाप्तिमवनीशगौरवम् ॥
वैरिनाशनमनूनवैभवं यच्छतीन्दुतनयःस्थितश्शनौ ॥४१॥

टी०-यदि शनिमें बुधका अन्तर हो तो पुत्र, भ्रातृ,धन, स्त्रीसुख हो, वाहन मिले, राजसन्मान हो, शत्रुनाश हो और द्रव्यप्राप्ति हो ॥ ४१ ॥

मू०-धर्मसाधनविधानमुन्नतिस्स्यादरातिनिहतिश्चभूपतेः ॥
ईप्सितातिरपिसूर्यजान्तरे नाकनायकपुरोहितेस्थिते ४२॥

टी०-यदि शनिके अन्तरमें गुरु हो तो धर्मवृद्धि, उन्नति, शत्रुनाश और मनोवांछित फलकी प्राप्ति होवे ॥ ४२ ॥

मू०-पुत्रमित्रजनितोत्सवमुच्चैस्सम्प्रयाति नृपतेरपिलाभम् ॥
भूमिदेवनिवहार्चनबुद्धिर्भार्गवेशनिदशान्तरसंस्थे ॥ ४३ ॥

टी०-यदि शुक्र शनिके अन्तरमें हो तो पुत्र और मित्रसे हर्ष मिले, राजद्वारा लाभ हो और ब्राह्मणपूजनमें भक्ति बढै ॥ ४३ ॥ इति शनेरन्तरम् ॥

इति ताजिकभूषणेदशान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

मू०-मासप्रवेशोतिशयेनसूक्ष्मंफलंप्रवक्तुन्नहिशक्यतेत्र ॥
तेनाधुनासद्गणकोपयुक्तं तत्साधनेहं कथयाम्युपायम् ॥१॥

टी०-मासप्रवेशका फल अत्यन्त सूक्ष्म होनेके कारण निरूपण नहीं किया जासकता है, इस हेतु मासप्रवेशसाधनोपाय गणकोंके उपकारार्थ निरूपण करता हूँ ॥ १ ॥

मू०-प्रसूतिकालोद्भवमध्यमोर्कस्स्पष्टोपिचैकादशधानिधाय।
प्रत्येकमेकादिभिरन्वितोयं द्वितीयमासाद्रवयोभवन्ति२॥

टी०-जन्मकालके स्पष्ट मध्यमार्कको ११ स्थानोंमें स्थापित करे और क्रमशः एक, दो, तीन आदि जोडता जावे तो मासप्रवेशका स्पष्ट सूर्य होगा यथा किसीका जन्म सूर्य ७ । २४ । ५९ । १९ हो तो प्रथममासप्रवेशकाभी वर्षप्रवेशवत् यही सूर्य होगा, अब द्वितीयमासके निमित्त एक जोडा तो भया

८, २४, ५९, १९ और तृतीय मासके निमित्त जोडा हो तो भया ९, २४, ५९, १९ ऐसेही औरभी मासोंका जानना ॥ २ ॥

मू०-मासप्रवेशोद्भवमध्यभानुर्लवीकृतोधोगुणभूहृतोस्मात् ॥ खनन्दनागाप्तलवादियुक्तोभवेदसौसावयवोदिनौघः ॥ ३ ॥

टी०-मासप्रवेशमें जो मध्यम सूर्य हो उसे उक्तरीतिसे विकलात्मक करै और पृथक् पृथक् स्थापन करके "गुणभू" १३ से गुणित करै और "खनन्दनाग" ८९० से भाग लेवे फिर उसे पृथक् स्थापित विकलात्मक सूर्योंमें जोडदेवे तो यह अवयव सहित अहर्गण होगा ॥ ३ ॥

मू०-मासप्रवेशकालीननलिनीपतितस्स्फुटात् । लग्नंकुर्याच्चचन्द्राद्यानभोमण्डलचंचलाः ॥ ४ ॥

टी०-मासप्रवेशमें स्वेष्टसूर्यके अनुसार जो लग्न हो उसीको मासप्रवेश लग्न मानकर चन्द्रादि ग्रह, अपने २ स्थानपर स्थापित करै ॥ ४ ॥

मू०-लग्नेश्वरांशाधिपतिर्विलग्ननवांशनाथश्चतयोर्बलीयान् ॥ सएवमासेश्वरतांप्रयातिफलंतदीयंकिलकीर्त्तयामि ॥ ५ ॥

टी०-लग्नपतिके नवांशका स्वामी और लग्नके नवांशका स्वामी इनमें विचारसे जो बली हो वही मासपति जानना उसका फल अब कहता हूं ॥५॥

मू०-द्रविणलाभमतीवमहोदयं नरपतेर्गुरुगौरवमादिशेत् ॥ अधिकतांयदिमासपतिर्भवेद्दिनकरोनकरोतिरिपूदयम् ६॥

टी०-यदि सूर्य मासेश हो तो द्रव्यलाभ, भाग्योदय, राजसत्कार अधिक होवे और शत्रुनाश होवे ॥ ६ ॥

मू०-रजतमौक्तिकशुभ्रसदम्बरप्रियजनागमनं सुखमद्भुतम् ॥ नृपकृतंसततंयदिमास्पतिर्द्विजपतिर्जयतीर्थरुचिन्दिशेत् ॥७॥

टी०-यदि चन्द्रमा मासपति होवे तो चांदी, मोती, श्वेतवस्त्रलाभ और प्रियजनसमागम और अद्भुत सुख हो, राजा मान करै और तीर्थयात्रामें रुचि हो ॥७॥

मू०-क्षितिपतेर्द्रविणानिचवैरिणामपचयं विजयं च रणांगणे ॥ अनुदिनन्ननुमासपतिः करोत्यवनिजोवनिजोत्थसुखान्यपि ॥ ८ ॥

टी०-यदि मंगल मासेश हो तो राजासे द्रव्यप्राप्ति, शत्रुनाश, युद्धमें जय और पृथ्वीका सुख इत्यादि फल प्रतिदिन होवे ॥ ८ ॥

मू०-बहुविलाससुखैस्सहितंकरोत्यतितरांवरवस्त्रसमागमैः ॥ अपिनरं यदि मासपतिस्सुतास्सितरुचस्तरुचेष्टितमानसम् ॥ ९ ॥

टी०-यदि बुध मासेश हो तो नाना प्रकारके विलास वस्त्र आभूषणकी प्राप्ति और अच्छे २ कामोंमें रुचिकी वृद्धि होवे ॥ ९ ॥

मू०-बुधजनोपकृतौ विहितादरंननुनरंकुरुतेसुरपूजने ॥ अविरतंयदिमासपतिःपतिस्सुवचसांवचसांरचनेमतिम् १०

टी०-यदि वृहस्पति मासेश हो तो पंडित लोगोंके उपकारमें चित्तलगे, देवपूजनमें बुद्धि हो और निरन्तर पठन, पाठन और ग्रंथरचनेमें बुद्धि हो ॥ १० ॥

मू०-निजजनापचयश्चजयस्सदा सविनयेहिनयेरुचिरद्भुता ॥ रतिमतिर्यदिमासपतिर्भवेत्कविरहोविरहोरिजनैर्ध्रुवम् ११

टी०-यदि शुक्र मासेशहो तो अपने जनोंमें अपचय हो, विजय हो, उत्तम नीतिमें प्रीति हो और विलासमें मति हो ॥ ११ ॥

मू०-द्रुमलतापरिरोपणसादरोवरतरोहिनरोनृपगौरवात् ॥ विलसितैस्सहितोयदिमाःपतीरविभवोविभवोत्थसुखान्वितः ॥ १२ ॥

टी०-यदि मासेश शनि हो तो वृक्ष, लता आदिके आरोपणकी बुद्धि हो, राजद्वारा प्रतिष्ठा हो और नानाप्रकारके विलास प्राप्त होवें ॥ १२ ॥

मू०-मासेश्वराणांबलिनांफलानिकिलप्रणीतानिशुभाशुभानि ॥ बलस्यमध्याधमतायदास्यात्तदानुमानेनफलंप्रकल्प्यम् ॥ १३ ॥

टी०-यह मैंने मासेश्वरोंके फल शुभ अथवा अशुभ जैसे थे विचारके कहे, परन्तु जब बलहीन, मध्यबल वा अधमबल होवे तो अनुमानसे फल विचारके कहना चाहिये ॥ १३ ॥

मू०-सामान्यतोयद्यपिमासजातंफलंप्रणीतं हि तथापिसूक्ष्मम् ॥ दशाविभागेनबुधोवदेत्तद्द्वैयथावर्षगतन्तथात्र १४

टी०-यद्यपि सामान्यसे मासजात फल कहागया तथापि सूक्ष्म फल विना दशाविभागके नहीं कहा जासक्ता इस्से पंडित लोग विचारके जैसे वर्षमें मासफल निरूपण किया वैसे मासमें दिनफल कहैं ॥ १४ ॥ इति मासफलानि ।

मू०-मासप्रवेशोद्भवमध्यमोर्कस्स्पष्टोपिचैकादिबलैस्समेतः ॥
दिनाद्द्वितीयाद्भवयोभवंतिततोघटीसाधनमुक्तवत्स्यात् १५॥

टी०-मासप्रवेशका जो स्पष्ट सूर्य हो उसके अंशोंमें एक एक जोडनेसे दूसरे दिनका सूर्य स्पष्ट होताहै सूर्यद्वारा जैसा घटीसाधन कहाहै वैसाही यहांभी जानना ॥ १५ ॥

मू०-दिनप्रवेशकालीनान्नलिनीनायकात्स्फुटात् ॥
भावास्सर्वेचचन्द्राद्यास्साधनीयानभश्चराः ॥ १६ ॥

टी०-दिनप्रवेश समयके स्पष्ट सूर्यहीसे समयके अनुकूल सब लग्न और ग्रह स्पष्ट करने चाहिये ॥ १६ ॥

मू०-मदनसदनवर्त्तीमूर्तिपस्सौख्यपूर्तिंजनयातिमनुजाना-
मिन्दुसंस्थानतोवा ॥ भवसहजरिपुस्थास्सौम्यशुक्राम-
रेज्याः परमविजयवृद्धिप्रौढिसिद्ध्यैभवंति ॥ १७ ॥

टी०-यदि दिनचर्यामें मूर्तिप (लग्नस्वामी) लग्नसे अथवा चन्द्रलग्नसे मदन (सप्तम) स्थानमें स्थित हो तो अत्यन्त सुखदायक हो और यदि भव ११ सहज ३ रिपु ६ इन तीनों स्थानोंमेंसे किसी एकमें बुध, शुक्र और गुरु इनमेंसे कोई ग्रह हो तो विजय हो और बडेसे बडा कार्य्य सिद्ध हो ॥ १७ ॥

मू०-षष्ठाष्टमस्थोयदिलग्नपालःखलग्रहैश्चेन्मिलितोमरेज्यः ॥
गलद्बलोवाकिलमानवानान्तनोतिनानाविधमामयंसः १८

टी०-यदि लग्नस्वामी षष्ठ ६ वा अष्टम ८ हो और यदि बृहस्पति खलग्रहोंसे युक्त हो अथवा नष्टबल हो तो अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न हों ॥१८॥

मू०-दुष्टस्तिष्ठेदष्टमेचेष्टखेटैर्हीनोरिष्टस्यात्तयेसंप्रदिष्टः ॥
तस्मिन्वारेवैरिभीस्स्याज्जनानांचिन्तोद्वेगैर्वाग्विवादैर्युतानाम् ॥ १९ ॥

टी०-यदि कोई दुष्टग्रह अष्टम हो वा अपने शत्रुके स्थानमें पडे तो

अरिष्टकारक होता है उस दिनमें शत्रुभय, चिन्ता और उदासी और वाक्कलह होवे ॥ १९ ॥

मू०-केन्द्रत्रिकोणद्रविणेषुसौम्याः पापास्त्रिलाभारिगता यदिस्युः ॥ तस्मिन्दिनेतेविजयं विलासंधनागमंसंजनयंतिनूनम् ॥ २० ॥

टी०-यदि केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ और द्रविण २ स्थानमें सौम्य ग्रह हों और त्रि ३ लाभ ११ और आरि ६ स्थानोंमें पापग्रह हों तो उस दिन विजय विलास और धनागम हो ॥ २० ॥ इति दिनचर्या ।

मू०--स्यादन्नदोलग्नपतिस्सुखेशो भोज्यंचकन्दर्पपतिर्बुभुक्षा भोक्ताम्बरेशश्शुभदृष्टयुक्तौविलग्नलाभौददतुस्सुभोज्यम् २

टी०-लग्नपति अन्नदाता है, चतुर्थस्थानपति भोज्य है, सप्तमभावका स्वामी क्षुधाहै, और दशमेश भोक्ता है । इनोंद्वारा भोजनादि विचार करना चाहिये यदि लग्नस्वामी और लाभ ११ स्वामी शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट होवें तो उत्तमभोजन मिले ॥ २१ ॥

मू०-भोज्याप्तिदौ जीवसितौतनुस्थौ राह्वर्कमन्दैस्तनुगैरनर्थः ॥ पापग्रहास्सौम्ययुतेक्षितास्स्युः कष्टेन चान्नं लभतेमनुष्यः ॥ २२ ॥

टी०-यदि शुक्र व जीव लग्नवर्त्ती होवें तो उत्तम भोजन मिले, यदि राहु, सूर्य, शनि, होवें तो अनर्थ और यदि पापग्रह सौम्यसे युक्त वा दृष्ट हों तो मनुष्य कष्टसे अन्न पावे ॥ २२ ॥

मू०-सूर्येवीर्यसमन्वितेतिलयुतं चन्द्रेचशाल्योदनं भूपुत्रे चणकान्नमिन्दुतनयेसद्वल्लमुद्राशनम् ॥ गोधूमप्रचुरं प्रियङ्गुसहितं गीर्वाणवंद्येतथा शुक्रेबर्जरिकायवान्नमुदितम्मन्देच माषोद्भवम् ॥ २३ ॥

टी०-यदि सूर्य बली हो तो तिलयुक्त अन्न भोजन करै, यदि चन्द्रमा हो तो चावल, यदि मंगल हो तो चना, यदि बुध हो तो मूंगकी दाल, यदि बृहस्पति हो तो गेहूं व कांगुन, यदि शुक्र हो तो बाजरा व चना और यदि शनि हो तो उर्दभोजन मिले ॥ २३ ॥

मू०-सूर्येचवीर्यसहितेकटुकंचचंद्रेक्षारंचतिक्तमवनीतनयेच सौम्ये ॥ मिश्रंगुरौचमधुरं भृगुजेतथाम्लंमन्देकषाय-मशनेरसमामनन्ति ॥ २४ ॥

टी०--यदि सूर्य बली हो तो कटु, चन्द्रमा हो तो खारी, मंगल हो तो तीखा, बुध हो तो मिलाभया, बृहस्पति हो तो मीठा, शुक्र हो तो खट्टा और शनि हो तो भोजनमें कषैला रस जानना ॥ २४ ॥ इति भोजनविचारः ।

मू०-एतत्ताजिकभूषणंपरगुणोत्कर्षेसहर्षाभृशंतेषामेवविभू-षणायविगुणानन्दायमन्दायते ॥ यस्मात्सज्जलदेन्द्रनी-लतरलामुक्तावलीनिर्मलानैवालंकृतयेवलीमुखगलेसं-क्षिप्तयेकेवलम् ॥ २५ ॥

टी०--यह ताजिकभूषण नामक ग्रंथ केवल उन्हीं सज्जनोंका भूषण है जो दूसरोंका गुण देखकर प्रसन्न होते हैं पर मन्दोंको तो यह अत्यन्तही मन्द है, क्योंकि जलवत् स्वच्छ मोतीका हार यदि रिच्छ या वानरके गलेमें छोडी जावे तो केवल भारके सिवाय उसको क्या भूषण होगा ॥ २५ ॥

मू०--श्रीमद्देवगिरीशदेशविलसद्गोदावरीसत्सरित्तीरेपार्थपुरं वरंविजयते विश्वंभराविश्रुतम्॥ज्योतिश्शास्त्रविचारसार-चतुरैर्मत्पूर्वजैः संश्रितं तेषांपुण्यफलं किलेदृशमलम्मेवा-ग्विलासेमतिः ॥ २६ ॥

टी०--श्रीमती देवगिरिश देशमें सोभायमान गोदावरी नदीके तटपर एक पार्थपुर नामक नगर है जोकि संसारमें विख्यात है और ज्योतिःशास्त्रके विद्वान् पूर्वज जहां रहतेथे उन्हींलोगोंके प्रतापसे ऐसी वाणीकी रचनोंम मेरी बुद्धि हुई है ॥ २६ ॥

मू०-श्रीमन्मंगलमूर्तिपादकमलद्वन्द्वातिसेवोद्भवस्फूर्त्याको-मलवाग्विलासविलसत्पद्यानवद्यम्भृशम् ॥ एतत्ताजिक-भूषणंद्युगणकप्रीत्यैचकारादरादालोक्याद्यकृतीर्गणेश-गणकः श्रीढुंढिराजात्मजः ॥ २७ ॥

टी०-श्री ढुंढिराजके पुत्र गणेशदैवज्ञने प्राचीन ग्रंथोंको विचारपूर्वक दे
...र गणेशजीकी चरणकमलकी सेवासे बुद्धिवैभव पाकर अनेक प्रकारके प...
मू... ग्रंथको रचा ॥ २७ ॥

य... इति श्रीमत्ताजिकभूषणे दैवज्ञ-ढुंढिराजात्मज...गणेशदैवज्ञविरचिते-
नथ... ऽन्तिमोऽध्यायः ।

टी...
सौम्य... —संवद्विक्रमतोद्विबाणनिधिकौपक्षेऽसितेफाल्गुनेसौम्ये
दिन ... तद्दिनेत्ववीवदद्दिदंश्रीखेमराजाज्ञया ॥ सीतारामसु-
मू०... धीर्विचार्यबहुशोदत्त्वातथोदाहृतीर्यत्स्यान्मेस्खलितंतद-
टी... विबुधैः क्षान्तंमुहुः प्रार्थये ॥ १ ॥

क्षुधाहै टी०-संवत् १९९२ फाल्गुन कृष्ण १४ बुधवारको श्रीखेमराजकी आ...
यदिनुसार सीतारामने विचारकर इसका अनुवाद किया और यथावसर ...
मिल... जो कुछ इसमें मेरी भूल चूक हो सो पंडित लोग क्षमाकरें उन...
मू०-भा... प्रार्थना है ॥ १ ॥
न...

पंडित सीताराम शास्त्री,
संस्कृताध्यापक, कालविन् तालुकदार्सस्कू...
लखनऊ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बंबई.